बाबा कदम

पोस्टर

पाषाण

[illegible]

बाबा कदम

दिलीपराज प्रकाशन प्रा. लि.®
२५१ क, शनिवार पेठ, पुणे -४११०३०

□□□□□□□□
□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□□□□,
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□,
251 □□, □□□□□□ □□□, □□□□ - 411030□

© □□. □□□□□□□□ □□□□□□ □□□
'□□□□', □□□□ □□□□□ □□ □□□,
□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□

□□□ □□□□□□□ - 1 □□□□□□, 2007

□□□□: □□□□□ 2020

□□□□□□□ □□□□□□□ - □□□□

□□□ - □□□□ □□□□□□

□□□□□□□: www.diliprajprakashan.in
□□□□: info@diliprajprakashan.in

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! - [illegible] [illegible]

एक

ढलगांव के बाहरी इलाके में बापुरवा का होटल ही गांव का इकलौता होटल था। बापुरवा को ईर्ष्या दिलाने के लिए दत्तु कोला ने अपने घर के सामने एक देवदार के डिब्बे में पार्टीशन लगाकर होटल शुरू करने का फैसला किया। वह पेठ गया और एक दर्जन कप-प्याले, एल्युमिनियम के प्याले, शेव-चिवड़ा की तश्तरियां, चम्मच, एक छोटा बर्तन और चाय बनाने की जाली लेकर आया। उसने पेठ के एक जानकार बढ़ई के बेटे से 'श्री दत्त भुवन' नाम का बोर्ड रंगवाकर होटल की शुरुआत के प्रतीक के रूप में शेड के सामने लगा दिया। वह सत्यनारायण की पूजा करता था। उसके दिल में एक ही ख्वाहिश थी - बापुरवा के होटल को हराना!
लेकिन चार महीने के भीतर ही दत्तोबा ऊब गए। जैसे ही दत्तोबा ने होटल शुरू किया, गाँव के लोग अचानक उन पर मोहित हो गए। भुजंगराव पाटिल, जो उन्हें दत्त्या कोली कहकर पुकारते थे, सुबह-शाम श्री दत्त भवन के सामने वाली बेंच पर बैठने लगे। जब भुजंगराव वहाँ बैठने लगे, तो गाँव के चांडाल चौगल्या भी वहाँ जमा होने लगे। बापूराव चौगल्या को आधे घंटे तक खरी-खोटी सुनाने और उनके होटल की चाय की तुलना "गुलवानी" से करने के बाद, दत्तोबा को लगा मानो वे आकाश को सिर झुका दें। चाय, भाजी और चिवड़ा सभी को मुफ्त में बाँटा जाता था। छोटी सी चायदानी भी खाली हो जाती थी। लेकिन सिरविहीन दत्तोबा यह नहीं समझ पाए कि वे इस व्यवसाय के लायक नहीं हैं। धीरे-धीरे पूरा व्यवसाय गड़बड़ाने लगा, लेकिन तब दत्तोबा ने थोड़ा सोचना शुरू किया।

“इस अनुबंध को गुप्त क्यों रखा जा रहा है? अगर सुबह-सुबह होटल में किसी ग्राहक को बुलाओगे तो सांस भी नहीं ले पाओगे! फिर तुमने एक समूह क्यों नहीं मंगवाया?” यह सब शांत मन से सोचने के बाद दत्तोबा को समझ आया कि होटल में चाय-भोजी खाने आने वाला हर कोई उसे पैसे नहीं देगा। कुछ लोग दो घंटे का अनुबंध करते हैं, तो कुछ दो दिन का। लेकिन जो ग्राहक वादा करता है, वह आठ से पंद्रह दिन तक वापस नहीं आता!
“क्या बात है? मैं कल से उधार लेना बंद कर दूँगा,” दत्तोबा ने निश्चय किया, और हैरानी की बात यह थी कि दत्तोबा का होटल सुनसान था। भुजंगराव पाताल का चांडाल समूह हमेशा की तरह शाम को फलों के ठेले पर बैठा था। भुजंगराव ने अपना सिर अपनी गोद में रखा और कहा, “क्या बात है, दत्तोबा, आज तुम इतने उदास क्यों लग रहे हो?”
"अब तुम क्या करोगे? सारा धंधा ही गड़बड़ हो गया!" दत्तु कोली ने अपनी टोपी पीछे खींचते हुए और अपना सिर खुजाते हुए कहा।
‘‘तुम हाँ क्यों कह रहे हो? अरे, व्यापार की बात करना कितना व्यर्थ कौशल है! बस एक गहरी साँस लो और फिर देखो कि क्या इस पिता के दिवालिया होकर गाँव छोड़ने का समय आ गया है?’’
"हम उस पर हावी हो रहे हैं या मुझ पर, किसे परवाह है?" दत्तोबा ने कान की बाली वाली बीड़ी को होठों से लगाकर जलाते हुए कहा। "धैर्य मत खोओ, डैटो! तुम क्या करने वाले हो, क्या यह सुरक्षित है?" "क्या?"
"इस घटिया होटल को बंद करो!"
और हमें क्या करना चाहिए?
"कड़ा का खाने का स्टॉल। शिवाजी महाराज का स्टॉल - जार में चावल और रोटी! आपका स्वागत है... आइए-" भुजंगराव ने दत्तोबा के कान के पास मुंह करके कहा। "शराबबंदी के बाद से, तुमने खाना-पीना

चुराना सीख लिया है। तुम पेटू हो गए हो। लेकिन क्यों? इस्लामपुर जाइए! गांव में मटन का स्टॉल शुरू कीजिए। अगर एक साल में बंगला नहीं मिला, तो चले जाइए!"
"आपका वास्तव में क्या मतलब है?"
"तो आप किस बारे में झूठ बोल रहे हैं? अरे, पिताजी, आपको क्या हुआ है? क्या आप कह रहे हैं कि आपको भजी से जुनून सवार है?" "इसलिए?"
"'बाप्याबी खरकंद बना रहे हैं! उन्होंने उनकी दुकान से टिन चुराए और उन्हें भर दिया। वे एक कटोरी चावल के लिए डेढ़ रुपये लेते हैं!'"
"लेकिन अगर तुम अपनी मनचाही चीज नहीं पा सकते, तो कैसे पाओगे?" भोले-भाले दत्तु कोली ने कहा।
‘‘होटल छोड़ो, अरे, इस चाय और सब्जी में क्या फायदा है? खाना खाने जाते हो तो जेब से आधा रुपया ही निकालते हो। फिर पेठ के उस लंगड़े चूहे से ट्रक क्यों खरीदा?’’
"किस पर?"
"बाजार में! पीछे वाले दरवाजे पर शराब की दुकान है और आगे वाले दरवाजे पर खाने का स्टॉल! क्या हमें आगे वाले दरवाजे पर जाकर पुणे-बैंगलोर मार्ग पर कहीं 'पिंतक' (एक तरह का नाश्ता) करना चाहिए?"
"हाय पाटिल, उनकी जगह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है!"
"चलो कुछ मौज-मस्ती करते हैं। मौज-मस्ती करने का क्या मतलब है? लेकिन क्या होटल का 'अभ्यास' पहले नहीं हुआ था?"
"तुम्हारा सच में यही मतलब है!" डैटोबा ने सोच-समझकर कहा।
और दत्तोबा ने ढालगांव चौकी पर ‘धी शिवाजी मराठा खानावल’ शुरू किया। लेकिन इस बार भी वही हुआ। उस समय लोग मुफ्त चाय-भाजी खाकर

चले जाते थे; इस बार तो वे मुफ्त में खाने लगे और वजीफा लेकर जाने लगे। दत्तोबा का अंत आ गया। दत्तोबा का यह विश्वास कि वे किसी भी तरह का होटल चलाने और चार पैसे कमाने के लायक नहीं हैं, गलत साबित हुआ, और ‘धी शिवाजी मराठा खानावल’ हमेशा के लिए बंद हो गया!
यह सब ध्यान से देख रहे बापू चौगुले मुस्कुरा रहे थे। बापू जानते थे कि इस गाँव में अभी तक माया का एक भी बच्चा पैदा नहीं हुआ था जो उनसे प्रतिस्पर्धा कर सके।
ढालगांव पुणे-बैंगलोर सड़क से लगभग तीन मील पश्चिम में स्थित था। जब यह गाँव बसा था, तब इसमें कोई खास बात नहीं थी; लेकिन बाद में कई कारणों से गाँव का महत्व बढ़ने लगा। मवेशी बाजार में भारी भीड़ होने लगी। इनमें से, बकरियों, भेड़ों और बकरों का साप्ताहिक शुक्रवार का बाजार इतना भर गया कि कोल्हापुर, करहाड़, सतारा और पुणे के कसाई अपना सामान खरीदने और वहीं ठहरने के लिए कुछ दिनों के लिए ढालगांव आने लगे। गाँव के लिए एक जल निकासी तालाब की योजना को मंजूरी मिल गई। सैकड़ों मजदूर दिन-रात विशाल बांध पर काम करते रहे। ढालगांव के पश्चिम में पहाड़ों से निकलने वाली सीना नदी कभी सूखी नहीं थी; लेकिन मानसून के मौसम में सीना बेसिन में पानी बेरोक-टोक बहता था। उस समय, सीना नदी को किसी बिंदु पर रोककर बांध बनाने की योजना पर कई वर्षों से चर्चा चल रही थी। आखिरकार, इसे लागू किया गया। इंजीनियर आए और नक्शे तैयार किए गए। ट्रक और ट्रैक्टर इकट्ठा हुए और सीन नदी पर बांध बनाने का काम गति पकड़ने लगा।
सैकड़ों लोग काम की तलाश में ढलगांव आ रहे थे और बापूराव चौगुले के होटल में जगह नहीं थी। हजारों की भीड़ जमा हो रही थी। बापू चौगुले ने उसे देखते ही अपना कट्टर समर्थक बना लिया।

बापुरवाला को शायद इस बात का एहसास नहीं था कि जब किसी का भाग्य इतना अच्छा होता है, तो बहुत से लोग उससे ईर्ष्या करने लगते हैं। बापुरवाला की कमाई गाँव में चर्चा का विषय बन गई थी। कई लोग जल रहे थे, कई लोग घृणा से भर रहे थे; वहीं कई लोग बापुरवाला की इतनी प्रशंसा कर रहे थे कि उनके मुँह में पानी आ रहा था। लेकिन भले ही बापुराओ ने चार गांवों का पानी खुद न पिया हो, फिर भी उन्होंने चार गांवों के चार लोगों को पानी पिलाया था। वे इतने शक्तिशाली असमिया थे कि सबको दफना सकते थे। उन्हें समझ आ गया था कि दुनिया किसलिए बातें कर रही है!
“चाहे कितना भी हो जाए, मैं प्याले और कटोरे धोऊंगा!” जब यह आलोचना बापुरा तक पहुंची, तो उन्हें थोड़ा बुरा लगा। बापुरा समझ गए कि प्रतिष्ठा केवल पैसे से नहीं मिलती, इसलिए उन्होंने ढालगांव क्षेत्र में आठ से दस एकड़ जमीन खरीदने, खेत में कुआं खोदने, रहने के लिए एक छोटा सा बंगला बनाने और एक जीप खरीदने का फैसला किया! अब देखते हैं आलोचकों की हिम्मत कैसे होती है! बापुरा द्वारा जमीन खरीदने की खबर ढलगांव इलाके में हवा की तरह फैल गई। बापुरा की जमीन देखने के लिए अभियान शुरू हो गया।
0-0-0

दो

ढालगांव में अपने नवनिर्मित बंगले में आरामकुर्सी पर बैठे बापुराव सोच रहे थे, "अगर उस दिन दगडू टाटा ने मुझे होटल से निकाल दिया होता, तो क्या मैं आज का दिन देख पाता? टाटा ने मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया है?"
बारह साल पहले की उस गर्मी में! भीषण गर्मी थी। यहाँ तक कि कभी न सूखने वाली सीना नदी भी सूखे की चपेट में थी। पूरा महाराष्ट्र इस बात को लेकर चिंतित था कि साल भर कैसे गुजारा होगा। ढालगाँव के प्रवेश द्वार पर तुराती घास और पन्हाली पत्तों की छत वाले और टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में 'बजरंगबली होटल' लिखे बोर्ड वाले पत्थर के कारीगर भी चिंतित थे। लोगों को जब बताया जाएगा कि पानी नहीं है, तो उनके मुँह में पानी आने में कितना समय लगेगा? जब सब कुछ ठीक-ठाक होता है, तभी इंसान को थोड़ा आराम करने का मन करता है; लेकिन इन पत्थर के कारीगरों को होटल शुरू करना था और सूखा पड़ गया।
दगदुताता की परेशानी इसलिए नहीं थी कि ग्राहक नहीं रहे; बल्कि इसलिए थी कि होटल में काम करने के लिए बच्चे ही नहीं थे! आखिर, दगदुताता के होटल में काम करने का मतलब था आधा मील चलकर समुद्र तक जाना, रेत में कुआँ खोदना और नारियल के छिलके से घड़ा पानी भरना। एक घड़ा भरने में कम से कम आधा घंटा लगता था! अगर नीचे गर्म रेत पर चलने के लिए चप्पलें होतीं तो ठीक था; वरना घड़ा भरने और घंटों तक घड़ा ढोने का काम करने के लिए बच्चे ही नहीं थे, जो इतनी गर्मी सहन करते थे मानो किसी तवे पर चल रहे हों और

ऊपर से आती चिलचिलाती धूप को झेलते थे! और अगर पानी की इतनी कमी थी, तो होटल कैसे चल सकता था?
दगदुताता वहाँ चिंतित होकर बैठी थी। होटल सुनसान था, और चौदह या पंद्रह साल का एक सजग लड़का आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। "तुम्हें क्या दिख रहा है?" तात्या ने पूछा।
"जॉब!" उसने अपनी तर्जनी उंगली से माथे से पसीना पोंछते हुए कहा।
"नौकरी? अब दिवालिया होने की बारी मेरी है, और मैं तुम्हें किस तरह की नौकरी दूं?"
"मुझे कुछ बीज दे दो। मैं पानी लाने के लिए इतनी मेहनत कर रहा हूँ!" उसने एक ही साँस में कहा।
‘‘पानी एंटोस? तो चलो!” दगदुतात्या बोला और चला गया। ‘‘दिन में चार-दो दिन, कीड़े!’’
"मुझे जो चाहो दे दो। मैं खाली हाथ भी काम कर दूंगा!" लड़के ने बेबसी से कहा।
"आपका क्या नाम है?"
"तुम मुझे पिता कहते हो!"
"कोनसा गाँव?"
मैं येलूर से हूँ, मैं चौलगाया से हूँ!
‘‘चाऊलगा? कंचा रं, दत्त्या चाऊलगा का सिद्या चाऊलगा!’’
"रामू, मैं तुम्हें बताने जा रही हूँ, मेरे प्यारे!"
‘‘जी हां, मैं ही हूं! तुम रामू चौल के पोते हो! तुम्हारे पिता चक्की चलाते थे और उनकी आग में जलकर मौत हो गई थी!’’
‘‘जी हाँ! और मैं आपके पास से गुजर रहा हूँ। गेलन साली आईबी का देहांत हो गया है।
"ऐसा कहने वाला मैं अकेला ही हूँ!"

‘‘हाँ। पैट की बहन सचमुच थी; लेकिन उसका जन्म और मृत्यु लगभग एक ही समय में हुई थी!’’
"मैं काले बालों वाला आदमी हूँ! मेरे पिता चले गए, मेरी माँ खो गई, मैं ज्यादा दिन जीवित नहीं रहा। पिताजी, क्या आपको लगता है कि आप मुझसे लकड़ियाँ इकट्ठा करवा रहे हैं?"
"नहीं, नहीं, तात्या! तुम्हारा नाम सुनकर, लाई आशानम अलॉय हितपतोर!"
"ठीक है, ठीक है, वो जग लो और जाकर थोड़ा पानी ले आओ!"
सबसे पहले बापू ढलगांव आए। पत्थर तराशने वालों ने सोचा कि बापू शुभ संकेत हैं, और एक सप्ताह के भीतर ही उनका यह विश्वास सच हो गया। पूरी धरती गर्मी से फट गई, पेड़ों के पत्ते झड़ गए, शरीर की त्वचा उड़ने लगी; और तभी अचानक एक तूफानी हवा चली। किसी दैवीय शक्ति को धरती पर मौजूद असहाय जीवों पर दया आ गई थी। ऐसा लग रहा था मानो वह उनके कष्टों पर अपनी फूंक मारना चाहता हो। पहले तेज हवा चली, हवा अपने साथ बादलों की एक श्रृंखला लेकर आई और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। चारों ओर से बारिश की बौछारें गिरने लगीं। ऐसा लग रहा था कि ढलगांव का नया बना बांध भी बाढ़ को रोक नहीं पाएगा; लेकिन सौभाग्य से ऐसा कुछ नहीं हुआ। आठ दिनों तक दिन-रात बारिश होती रही।
पूरी धरती तृप्त हो गई। उसकी तृप्ति, चारों ओर फैली उमंग, हरी घास के बीजों में प्रकट हुई। ढालगांव का पूरा इलाका हरा-भरा हो गया। गांव छोड़कर जा रहे ग्रामीण लौट आए। सब कुछ आबाद हो गया। बापू को ज्यादा देर तक कष्ट नहीं सहना पड़ा और दगडू टाटा के अंधविश्वासी मन ने मान लिया कि यह बच्चा किसी अज्ञात का नहीं, बल्कि किसी अज्ञात का बच्चा है! बाप्या आया और अपने साथ बारिश लेकर आया। लेकिन बारिश सिर्फ ढालगांव में ही नहीं, बल्कि हर जगह

हुई; लेकिन टाटा ने बारिश और बापू के आगमन के बीच संबंध स्थापित कर लिया। परिणामस्वरूप, बापू के प्रति उनका नजरिया पूरी तरह बदल गया।
होटल का कारोबार खूब फल-फूल रहा था। बापू धीरे-धीरे लोगों के बीच घुलमिल रहे थे। दगदुताता को बापू से बहुत सहयोग मिलने लगा था। और वह भी उनके साथ समान सम्मान से पेश आने लगे थे।
इस झील ने गाँव का कायापलट कर दिया। जो ज़मीन पहले बारिश पर निर्भर थी, उसे अब सात से आठ महीने तक झील से पानी मिलता था। ढालगाँव का उजाड़, बंजर इलाका साल भर मनमोहक लगता था।
बापू अब महज़ एक होटल में काम करने वाला लड़का नहीं था; वह दगडू के घर का अभिन्न अंग बन चुका था। दगडू के कई सपने थे। वह बापू को पालना-पोसना चाहता था, उसकी शादी एक सुंदर पत्नी से करवाना चाहता था, और चाहे वह पति-पत्नी हो या न हो, उसे भारत के सभी मंदिरों की सैर करवाना चाहता था! लेकिन दुर्भाग्य गलत समय पर आता है! यही बात उनके सपनों में बाधा बन गई। अगर आप होटल में कुर्सी पर लंबे समय तक बैठे रहते हैं, तो आपके पैरों में झुनझुनी होने लगती है; लेकिन यह अस्थायी होती है। अगर आप उठकर कुछ कदम चलते हैं, तो सब ठीक हो जाता है। लेकिन उस दिन, दगडू को अपने पैरों में कुछ अजीब सी झुनझुनी महसूस हुई। फिर भी, वह कुर्सी से उठा। लेकिन इस बार, खड़े होने के बजाय, वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके बाएं पैर की सारी संवेदना गायब हो गई थी। उसे यह भी समझ नहीं आया कि कब और कैसे लकवा आया और उसके पैर को बेजान बना दिया।
बापू मदद के लिए दौड़े। उन्होंने तात्या के कंधे पर हाथ रखा और खड़े होते हुए बोले, "तात्या, तुम ऐसे क्यों हो?"
"मेरी जान खतरे में है, बेटे! चलो, मैं घर नहीं जाना चाहता-"

तात्या को बैलगाड़ी में बिठाकर गाँव लाया गया। बूढ़े आदमी ने ऊँट की कमर तोड़ दी। बूढ़ी औरतें इकट्ठा हो गईं। कुछ ने सोचा; तात्या मर गया होगा! और इस नज़रिए से देखा जाए तो, वह सचमुच मर चुका था।
तात्या, जिसने बड़े साहस से गाँव में होटल खोलने की हिम्मत दिखाई, इस मामले में अकेला बहादुर नहीं था। गाँव में लाठी लहराने में कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। जब वह छोटा था, तब गाँव में रामोशी गिरोह ने डकैती की थी। पचपन रामोशी पत्थर लिए और एक-दूसरे पर बम फेंकते हुए धलगाँव आए थे। आधी रात थी। उनकी चीख-पुकार सुनकर औरतों और बच्चों के दिल काँप उठे। यहाँ तक कि बड़े-बुजुर्ग भी अपनी जान के डर से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। और तभी दगडू उठ खड़ा हुआ। वह परद्या द्वार से गाँव के द्वार तक आया और हाथ में लाठी लिए अंधेरे में छिप गया। रामोशी गाँव के दो गब्बर घरों में घुस गए और चिल्लाते हुए वापस लौटे, और उसी क्षण, हाथ में लाठी लहराते हुए, दगडू बिजली की गति से उनके झुंड में घुस गया। इससे पहले कि उसे कुछ समझ आता, दस-पाँच रामोशी खून से लथपथ हो गए थे। किसी की आंख फूट गई थी, किसी का कान गायब हो गया था; किसी की पीठ से बहुत खून बह रहा था। एक व्यक्ति तो वहीं गिर पड़ा। रामोशी ने अपने हाथों में जो कुछ था उसे फेंक दिया और अपने घावों से खून पोंछते हुए दर्द से कराहते हुए भाग गया।
अगले दिन पुलिस आई, डीएसपी आए। रामोश्य के शव का पोस्टमार्टम किया गया। शव की पहचान तुरंत रामोश्य के रूप में हो गई। इसके बाद जब रामोश्य के घर पर छापा मारा गया, तो पता चला कि उनमें से कई लोग भाग गए थे। जी हां, वरना उनके शरीर पर लगे घावों से उनकी

पहचान तुरंत हो जाती। फिर भी, वे ज्यादा देर तक छिपे नहीं रह सके। उन्हें शिराल्या के पहाड़ों से वापस लाया गया।
यह मामला बहुत प्रसिद्ध हो गया। सरकार ने दगदूतता को इनाम के तौर पर पाँच हज़ार रुपये दिए! दगदूतता ने ऐसे कई छोटे-बड़े वीरतापूर्ण कार्य किए; अंत में, एक आधार बनाने के लिए, उन्होंने उसी पैसे से नदी के किनारे चार एकड़ ज़मीन खरीदी। लेकिन दुर्भाग्यवश! सरकार ने नदी पर ही बांध बनाकर एक झील बनाने की योजना बनाई। दगदूतता द्वारा पाँच हज़ार रुपये में खरीदी गई ज़मीन पानी में डूब गई। ग्राम मजिस्ट्रेट गाँव आए और उन्हें आश्वासन दिया कि जिनकी ज़मीनें डूब गई हैं, उन्हें नुकसान की भरपाई मिलेगी। लेकिन योजना पूरी होने के बावजूद, लोगों को मुआवज़ा नहीं मिला, इसलिए वे मजिस्ट्रेट की अदालत में निकल पड़े। लेकिन दगदूतता उनके साथ नहीं गए। उन्होंने कहा, "पीढ़ियों से गाँव में सूखा पड़ा हुआ था - एक बूँद पानी भी नहीं मिलता था। सिनाबाई उसे धोखा देती थी। अब उसकी पिटाई हो गई है। मेरा इकलौता जंगल तो सचमुच नष्ट हो गया; लेकिन अगर कई लोगों के जंगल भी डूब जाएँ, तो क्या फर्क पड़ता है?"
लेकिन लोग पत्थर तराशने वालों के इस सिद्धांत को पचा नहीं पाए। वे चिल्लाते रहे। किसी ने बांध में सुरंग बिछाकर उसे उड़ाने की बात शुरू कर दी; लेकिन पत्थर तराशने वालों ने उन्हें कुछ कठोर शब्दों में फटकार लगाई। उन्होंने कहा, "अरे वेश्याओं, क्या तुम्हारी मेज़ें टूटी हुई हैं या क्या?"
"हमारी रानियाँ चाँद में जन्म लेंगी!"
"हे येदियानु, गाँव को नदी से यह पानी मिल गया है। तुम्हारे बच्चे शांति और संतोष से रहेंगे।"
"लेकिन कम से कम हमें हमारा पैसा तो देखने दो!"

वे देते ही रहेंगे। बस धैर्य रखें...!
"तुम्हारा न बेटा है न बेटी! क्या तुम ये कहने वाले हो!" उनमें से एक ने बड़े गुस्से से कहा।
लेकिन आखिरकार सरकार की लालफीताशाही में ढील आई। खबर आई कि मुआवज़े की रकम ममलदार अदालत में पहुँच गई है। झील परियोजना में जिन धलगाँव की ज़मीनें डूब गई थीं, उन सभी किसानों ने बड़ी उम्मीद के साथ तालुका की ओर दौड़ लगाई। लेकिन उन्हें गहरी निराशा हाथ लगी। मुआवज़ा तो मिल गया, लेकिन कितना? ज़मीन की कीमत के चार आना भी नहीं। खुद दगदुताता को आठ सौ रुपये मिले। उन्होंने उसी ज़मीन के लिए पाँच हज़ार रुपये दिए थे!
आखिरकार उन्होंने अपनी कमाई से एक होटल में निवेश किया। होटल कुछ समय तक अच्छा चला; फिर सूखा पड़ा और सारा कारोबार संभालने का समय आ गया। लेकिन बापू आए और दगडू टाटा को नई जिंदगी मिली। ऐसा लगा जैसे भगवान ने अचानक हौसा काकू को, जो इतने लंबे समय से बेटे की चाहत में संघर्ष कर रही थीं, बेटा दे दिया हो। लेकिन जब दगडू टाटा को स्ट्रोक आया, तो बापू पर अचानक एक बड़ी जिम्मेदारी आ गई। उन्हें होटल संभालना था, टाटा को दवाइयाँ दिलवानी थीं और दिन-रात रोती हुई हौसा काकू को दिलासा देनी थी!
किसी ने उसे जंगली कबूतर का खून लगाने और उसी पक्षी के मांस का सूप बनाकर पीने को कहा; इससे लकवा ठीक हो जाएगा। बापू ने एक कसाई को बुलाया और एक सौ पंद्रह कबूतरों को ज़बह करवाया; लेकिन तात्या का लकवा उसके शरीर को और भी कमज़ोर करता जा रहा था। जब उसके मुँह के भी टेढ़े होने के लक्षण दिखने लगे, तो तात्या ने बापू को बुलाया और कहा, "बापू... पुत्र, अब मेरी क्या उम्मीद है!" ‘‘तुम मुझे ऐसा क्यों कहते हो, तात्या?’’
"सच में, बापू, अब मुझे ज़िंदा रखने की कोशिश मत करो!"

"तात्या, तुम इससे भी ठीक हो जाओगे!"
"चलो, चलो। मैं अब जा रहा हूँ। अब अपनी चाची का अच्छे से ख्याल रखना!"
हौसा की चाची, जो दरवाजे के पीछे से उनकी बातचीत सुन रही थी, आह भरे बिना नहीं रह सकीं।
महज चार दिन बाद, दगदुताता नींद में ही चल बसे। लेकिन बापू ने अपना वादा पूरी तरह निभाया। उन्होंने अंत तक हौसा काकू को बहुत प्यार किया और उन्हें अपनी माँ की तरह माना।
बापू बजरंगबली होटल के मालिक बन गए। समय तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। जब से ढलगांव में झील बनी थी, गांव का भीतरी इलाका बदल रहा था। गांव की पानी में डूबी ज़मीन पर अनगिनत तरह की खेती की जा रही थी। टमाटर, पत्तागोभी और फूलों जैसी सब्ज़ियों के साथ-साथ कई तरह की पत्तेदार सब्ज़ियां भी ढलगांव से ट्रकों द्वारा बड़े शहरों में भेजी जा रही थीं। जब ट्रकों के आने की बात होती, तो सड़कें बन जातीं। जब सड़कों के बनने की बात होती, तो एस.टी. (सिंगापुर) आ जाती, और एस.टी. के आने पर स्टॉल भी आ जाता... और वो कहाँ था? बजरंगबली होटल के सामने एक अलग मंज़िल पर! तीन रास्तों से आने वाले यात्री सबसे पहले इस होटल के सामने आते थे। अगर ट्रेन में समय होता, तो वे वहाँ चाय और भजिया का ऑर्डर देते। अगर दोपहर का समय होता और ट्रेन को एक घंटे का आराम मिलता, तो वे खाने का ऑर्डर वहीं छोड़ देते!
ढालगांव के युवा और बुजुर्ग सभी बापू चौगुले के लिए एक जाना- पहचाना चेहरा बन गए थे। बहुत से लोग अपनी बेटियों का विवाह बापू से कराने के इरादे से ढालगांव आने लगे, क्योंकि बापू इतनी कम उम्र में ही इतना साहस दिखा रहे थे। ढालगांव में कई दुल्हनें आईं; लेकिन बापू की किस्मत में लक्ष्मी लिखा था - जो एक रेस्तरां

मालिक की बेटी थी। इन रेस्तरां मालिकों ने अपनी बेटी का विवाह बापू से कराने से पहले एक शर्त रखी, "बापू, आपको चार एकड़ जमीन चाहिए। अगर आपको दो एकड़ जमीन मिल जाती है, तो आप जमींदार बन जाएंगे; लेकिन लाखों रुपये कमाने वाला होटल मालिक तो बर्तन धोने वाला ही रहेगा।"
बापू को यह सलाह पसंद आई होगी। उन्होंने ज़मीन खरीदने का अभियान शुरू किया। बापू ढलगाँव की नहर योजना के अंतर्गत आने वाली ज़मीन चाहते थे; लेकिन अब उन्हें ऐसी ज़मीन चाहिए थी जहाँ आठ-नौ महीने लगातार पानी मिलता रहे। ढलगाँव के रैयत उस ज़मीन को अपने दिल का टुकड़ा मानते थे। बापू को मनचाही ज़मीन नहीं मिली। लेकिन अंत में, बापू ने आठ एकड़ ज़मीन का विलेख इस इरादे से प्राप्त किया कि वे सूखी ज़मीन खरीदकर उसमें कुआँ खोदेंगे।
इनामदार की पुत्री बापू चौगुल्या की पत्नी बनीं।
इतने वर्षों बाद भी बापू को यह सब अतीत याद था।
0-0-0

तीन

धीरे-धीरे बापू ने ढलगांव में अपना छोटा सा बंगला बनवाया। उन्होंने सतारा के एक वास्तुकार से इसका नक्शा तैयार करवाया था। इस पर पचपन हजार रुपये का खर्च आया। बापू का बंगला देखने लायक था। जब घर बनकर तैयार हुआ, तो ढलगांव के सभी लोग जलेबी और मसालेदार चावल का कटोरा लेकर घर लौटे।
लक्ष्मी के लिए दिन बीतते गए। ईमानदार लोगों ने खूब दावत उड़ाई। आजकल, अगर ढालगाँव की बात आती, तो चर्चा बापू की संपत्ति पर आकर रुक जाती। भगवान देने के लिए छत भी फाड़कर दे देते, यही जवाब मिलता।
पहले दुबले-पतले दिखने वाले बापू अब थोड़े मोटे लग रहे थे। उनके चेहरे पर संतोष का भाव साफ झलक रहा था। अब कोई उन्हें "होटल मालिक" कहने की हिम्मत नहीं करता था। इन सब बातों के बावजूद बापू के मन में अभी भी असंतोष था। उन्होंने जो आठ एकड़ ज़मीन खरीदी थी, उसमें पानी नहीं था। नहर से पानी लेना भी मुमकिन नहीं था, क्योंकि ज़मीन नहर से काफी दूर थी। ऐसे में उनके पास कुआँ खोदने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। फिर ज़मीन में पानी के स्रोत खोजने का सिलसिला शुरू हुआ।
बारामती क्षेत्र के प्रसिद्ध जल उत्पादक लखू, ढालगाँव आए। वे बापुरवा के साथ दो दिन रहे। तीसरे दिन वे बापुरवा के साथ ज़मीन पर आए। उन्होंने पूरी ज़मीन का चक्कर लगाया और उसका निरीक्षण किया। उन्होंने जगह-जगह पत्थर गाड़े और उन्हें थपथपाया, मिट्टी चखी और इनकार में सिर हिलाते हुए कहा, "बापूसाहेब, अगर मैं आपको बताऊँ तो नाराज़ मत होइए!"

"आपका क्या मतलब है?"
"जमीन के नीचे पानी की एक बूंद भी नहीं है!"
"आप क्या कहते हैं?"
"जी हां, जी हां! मैं चालीस साल से व्यापार कर रहा हूं। मेरी उम्र साठ साल से अधिक है। आपका अनुमान गलत नहीं होगा!"
"लेकिन लखुममा, बहुत से लोग कहते हैं कि इस भूमि में पानी है!" "मुझे ऐसा नहीं लगता। हाँ! तुम बस मुझे बता दोगे कि तुम्हारे पास पानी है और तुम कुआँ खोदने में दस-पाँच हज़ार खर्च कर दोगे और अंत में निराश हो जाओगे! यह हमारा काम नहीं है! इस ज़मीन के नीचे ठोस चट्टान है!"
"वहाँ सात्वा फार्म में कुएँ में बारहमासी पानी रहता है। यहाँ मंगलकर फार्म में भी भरपूर पानी है। वहाँ सात्वा की ज़मीन पर स्थित कुआँ गर्मी में भी नहीं सूखता, और यहाँ जगदालेनन के फार्म में स्थित कुएँ का पानी पड़ोसी किसानों को भी दिया जाता है।" बापू ने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर, चारों ओर के खेतों में मौजूद कुओं के बारे में जानकारी देते हुए आगे कहा, "लखोबा, आप जितना भी पैसा मांगें, मैं देने को तैयार हूं; लेकिन मेरे खेत का जो भी हाल हो, कुआं जरूर बनवाना होगा!"
हंसते हुए लखोबा ने कहा, "आप पैसे तो दे देंगे, लेकिन नीचे मौजूद सूखी, ठोस चट्टान का हम क्या करेंगे? मुझे बताइए।"
"आप इसे एक बार फिर से जांच लें। अगर आपको जरा सा भी संदेह हो, तो मुझे बता दीजिए। मैं कल से छानबीन शुरू कर दूंगा!"
"मैं अब आपको यह कैसे समझाऊं? मुझे समझ नहीं आ रहा! बाप साहब, पानी की आवाज़ बंद कीजिए। अगर आप चाहें तो पास वाले तालाब से पानी ले आइए!"

"सातवें से? संभव नहीं। मेरे खेत को मेरे अपने कुएं से पानी चाहिए!"
"मुझे नहीं लगता कि यह इस जीवन में संभव होगा। आप व्यर्थ में बहुत सारा पैसा खर्च कर देंगे, बापूसाहेब!"
"लखोबा, मैं बहुत ईर्ष्यालु व्यक्ति हूँ। अब तक मैंने जो भी करने का मन बनाया है, वह अधूरा नहीं रहा है, और अब मैं इस भूमि में कुआँ खुदवाए बिना और इसे बाग में बदले बिना नहीं जाऊँगा। मैं वादा करता हूँ; मैं पत्थर तक तोड़ दूँगा!"
"मनुष्य को ईर्ष्या होनी ही चाहिए; लेकिन जो प्रकृति से ईर्ष्या करता है, उसे अंततः पछतावा होगा। खैर, मैं आ रहा हूँ। मुझे यहाँ से दो-तीन और गाँव जाने हैं!"
लखोबा यह कहते हुए चले गए कि बापू ज़मीन में कुआँ खोदने की कोशिश न करें; लेकिन बापू को चैन नहीं आया। उन्हें भूख नहीं लग रही थी। उन्हें चैन की नींद भी नहीं आ रही थी। उसी क्षण उन्हें लखोबा के शब्द याद आए, "अगर आप चाहें तो सातवें पड़ोसी से पानी ले लें; लेकिन आपकी ज़मीन तो अंत तक सूखी और कठोर चट्टान है। वहाँ पानी की एक बूँद भी नहीं है!"
"यह तो नामुमकिन है! वह तेराधा क्या कह रहा है? क्या वह ब्रह्मदेव है? चारों ओर पानी से भरे कुएँ बिखरे हुए दिख रहे हैं, और वह बूढ़ा कहता है, यहाँ पानी की एक बूँद भी नहीं मिलेगी। कुछ भी नहीं। कल किसी और को पानी लाने के लिए बुलाया जाएगा। चाहे वे भारत में हों या कहीं और, वे जितने चाहें उतने पानी लाने वालों को बुलाएँगे। एक बार हमें पता चल जाए कि पानी कहाँ है, तो बस! हमें तुरंत खुदाई शुरू कर देनी चाहिए! उस पानी का कितना थोड़ा सा हिस्सा ज़मीन में गया था! चाहे कुछ भी हो जाए, अंत में एक इंसान ही होता है, और जब आप इंसान कहते हैं, तो उसकी भी एक

सीमा होती है! चाहे कुछ भी हो जाए, इस ज़मीन पर एक कुआँ ज़रूर होगा। कुएँ पर एक बगीचा होगा! तब अगर मुट्ठी भर मिट्टी भी गीली हो जाए, तो भी काफी होगा!"
अब तक ढलगांव के पूरे गांव को बापू के वादे के बारे में पता चल चुका था। बापू की अब तक की तरक्की देखकर कई लोगों के मन में ईर्ष्या की भावना जाग उठी थी। यही उनके लिए काफी था। फिर चर्चा शुरू हुई।
"इस सब में गलत क्या है?"
‘‘इसमें हीरा क्या है भला!’’
"हीरा तो तराशा जा सकता है; लेकिन पानी क्यों नहीं? मैं पत्थर को क्यों काटूं और उसे अपने पास रखूं?"
"चलो इसे काट ही देता हूँ! कम से कम मुझे वदारास से नौकरी तो मिल जाएगी!"
वाह! घर का मालिक कौन है? किस्मत ने मुझे चार पैसे दिए हैं, तो मैं इन्हें खर्च करने जा रहा हूँ। चलो इन्हें सोने की थैली में रख देता हूँ!
लेकिन जब बापू को पता चला कि यह समूह इस तरह बातें कर रहा है, तो वह और भी क्रोधित हो गया, "अगर मैं तुम्हें जंगल में हीरा दिखाऊं, तो मैं तुम्हें बता दूंगा कि यह चार पैरों वाले परिवार से है!"
ऐसा हो गया! तो क्या हुआ, एक मछुआरा रोज़ आता था। वह बापू के साथ रहता और खाना खाता, और फिर जाकर कुछ ऐसा करता, "यहाँ थोड़ा मुनाफा कमा लो, वहाँ थोड़ा मुनाफा कमा लो।" लेकिन बापू भी कम चतुर नहीं थे। उन्होंने पाँच-छह मछुआरों को अलग-अलग ज़मीनें दिखाईं। खुदाई उस जगह से शुरू हुई जहाँ उनमें से ज़्यादातर ने

उन्हें दिखाया था। नींव का पत्थर रखा गया, और पहला फावड़ा चलाया गया। एक सौ से डेढ़ सौ मछुआरे काम पर लगा दिए गए।
अचानक, मिट्टी का एक विशाल टीला दिखाई देने लगा। पहले काला जंगल खत्म हुआ। फिर मुरमा का सूखा जंगल आया। वह भी खत्म हो गया और नीचे, काले और सफेद रंग की सरकंडे की घास दिखाई देने लगी। वादरों के नुकीले पहरेदार सुरंगों के लिए घर बनाने लगे। सुरंगें फटने लगीं। हर सुरंग के बाद, बापू दौड़कर ऊपर जाते और पानी का किनारा देखने के लिए झाँकते। फटी हुई सुरंग का घना धुआँ उनकी नाक में घुस रहा था, धुआँ उनकी आँखों में चुभ रहा था; फिर भी, बापू किनारे पर खड़े होकर झाँकते और अंदर आ रहे वादरों को ज़ोर से चिल्लाते - "अरे भीम, तुम्हें दिल कहाँ दिखता है, कमीने!" लेकिन हर बार उन्हें गहरी निराशा ही हाथ लगती थी। जितना ज़्यादा वे खोदते, चट्टान उतनी ही सूखी और सख्त होती जाती। उसमें नमी का नामोनिशान भी नहीं था। लेकिन बापू ईर्ष्या से जल रहे थे। ज़मीन को नीचे तक खोदना कोई बड़ी बात नहीं थी; लेकिन कुएँ में पानी तो होना ही चाहिए!
धीरे-धीरे गहराई बढ़कर डेढ़ से दो सौ फीट हो गई; लेकिन जमीन में रिसाव का कोई संकेत नहीं था। उसी समय, गाँव वाले बापू की योजना पर हंस रहे थे। खनिकों को मनोरंजन का अच्छा साधन मिल गया था। अब, जब उन्होंने कुएं के लिए खोदे गए गड्ढे को देखा, तो उनकी आँखें घूम गईं। खोदने वाले काम के लिए तैयार थे। खोदे गए पत्थरों का भार उठाने के लिए किनारे पर एक सीमेंट का पुल बनाया गया था। एक ठेले का पहिया लगाया गया था। गम्मलों से रस्सियाँ बाँधी गई थीं; लेकिन दो-तीन बार पत्थरों के भार से रस्सियाँ टूट गईं। एक-दो खोदने वाले घायल हो गए। अंततः, खोदने वालों ने खुदाई और काम करने से साफ इनकार कर दिया।

बापू को पाताल लोक तक जाने का अपना वादा बीच में ही छोड़ना पड़ा। लक्ष्मी वैनी बच्चे को जन्म देने के लिए अपनी मां के घर गईं। उन्होंने बापू से कहा, "अगर आपको पानी की जरूरत नहीं है, तो क्यों परेशान हो रहे हैं?"
"मैंने फ़ैसला कर लिया है!"
"अगर हमारी किस्मत अच्छी नहीं रही तो हमें पानी की जरूरत कैसे पड़ेगी?"
कमजोर लोग भाग्य पर निर्भर रहते हैं!
"यह सच है, लेकिन अब आप ठीक से खाना नहीं खा रहे हैं, आप सो भी नहीं रहे हैं। इससे आपके स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा!"
"जो भी हो जाए, कोई फर्क नहीं पड़ता। बस यह सुनिश्चित करें कि खेत में कुआँ खोदा गया हो और उसमें पानी आता रहे!"
लक्ष्मी ने और कुछ नहीं कहा। वह सिर झुकाए खड़ी रही। बापू द्वारा प्रकृति के विरुद्ध छेड़ी गई यह प्रतियोगिता उसे बिल्कुल पसंद नहीं थी। लेकिन वह एक स्त्री थी! वह बापू राव जैसे ईर्ष्यालु व्यक्ति को इस हृदयविदारक निर्णय से नहीं रोक सकती थी।
उसके जाने के बाद, बापू ने होटल के बरामदे में बैठने के लिए एक नया नौकर रख लिया और खुद खेत में ही रुक गया। उसने उस गड्ढे को भर दिया जिसे वह काफी समय से खोद रहा था और दूसरे पानी के घड़े से दिखाए गए स्थान पर खुदाई शुरू कर दी।
लेकिन इस बार भी वही हाल हुआ जो पहली बार हुआ था! मैंने बहुत गहराई तक खोदा; लेकिन पानी का कोई निशान नहीं था। खेत की चारों दिशाओं में लगातार चार बार यही हुआ, और अंत में बापू को लगा कि इस गुस्ताखी को रोकना ही होगा।

लेकिन उनका मन उस फैसले को भी आसानी से स्वीकार नहीं कर पाया।
उन्हें लगने लगा कि उनकी पिछली सारी प्रतिष्ठा नष्ट हो गई है।
उस रात बापू बहुत परेशान थे। लक्ष्मी घर पर नहीं थी। घर सुनसान था और एक ग्रामीण बापू से मिलने आया।
"राम राम बापूसाब!"
"रामराम, आओ"
"इसे घर बनाने के लिए काट दिया गया था!"
"कौन?"
"यह मैं हूं!"
"तो ठीक है?"
“पत्थर कम हैं। किसने कहा कि तुमने खान को शुरू किया? मुझसे पूछा गया था कि क्या मैं पत्थर इकट्ठा कर रहा था। क्या तुमने चार कारों को तोड़ दिया?”
"ये कौन सी औरत है जो कह रही है कि मैंने खदान शुरू की है?" बापू ने गुस्से से कहा।
“अब वे क्या कर रहे हैं? अब तो सब कुछ शुरू होने लगा है!”
"तुम क्या कह रहे हो? चले जाओ, मेरे पास कोई शाखाएँ नहीं हैं!" "गुस्सा मत करो, बापुसाब। वाह! अब तुम क्या करोगे जब तुम्हें घसीटकर बाहर फेंक दिया गया है? जंगल में पानी न होने में तुम्हारी क्या गलती है? मैं जा रहा हूँ।"
उसके आने-जाने के बाद बापू को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके सिर पर ज़ोरदार चोट मारी हो। उसे एहसास हुआ कि गाँव में उसकी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई है, उसका नामोनिशान मिट गया है, और बेवजह की ईर्ष्या के कारण उसे पच्चीस हज़ार रुपये का नुकसान हो गया है। अब इस मुसीबत से निकलने का क्या रास्ता है?

लेकिन बापू को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस पाने के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वे स्वतः ही उनके सामने आकर खड़े हो गए। अगले दिन दस-पंद्रह ग्राम नेता बापू से मिलने आए। उनमें से दो-तीन साठ वर्ष से अधिक आयु के थे।
“पिताजी, हम एक मिशन पर हैं!”
क्या बापू को लगा था कि कोई उन्हें पत्थर की खदान से पत्थर लाकर देने गया था? क्या वे सब यही तो नहीं मांग रहे थे? लेकिन ऐसा नहीं था।
गांव के मुखिया श्यामराव पाटिल, थोड़ा शर्माते हुए बोले, "बापूसाहेब, हम आपसे एक निवेदन करने आए हैं-"
‘‘बोला...!’’
"हम समझते हैं कि आप जैसे जिद्दी व्यक्ति को निराशा हो रही है। लेकिन निराश मत होइए। पानी न आने का कारण कोई संयोग नहीं है। इसलिए इस विषय को अपने दिमाग से निकाल दीजिए। और...!"
"और आपके अनुसार हमें क्या करना चाहिए?"
“इस बार ग्राम पंचायत का चुनाव है। हम चुनाव लड़ना चाहते हैं। हम सब चाहते हैं कि आप सरपंच बनें!” श्यामराव ने अपने साथ आए सभी लोगों की ओर देखते हुए कहा। सभी ने सहमति में सिर हिलाया। फिर बापूसाहेब ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, “मुझे इसमें क्यों घसीट रहे हो? मैं तो होटल व्यवसायी हूँ। मुझे राजनीति के बारे में क्या पता?”
"आपको किसने कहा कि राजनीति में शामिल हर कोई राजनीति समझता है?" "ऐसा नहीं है, लेकिन आप भी इंसान हैं। यहाँ आकर मैं और क्या करूँगा?"
“ऐसा नहीं है!” एक बूढ़े आदमी ने हांफते हुए कहा। “जो आदमी अपने घर में खा-पीकर नहाता है, वो राजनीति में आने पर अपनी जेबें भर

लेता है। फिर आम लोगों के साथ ऐसा क्यों नहीं होता? कृपया उसके पास मत आइए!”
"तो हम कहते हैं कि आप जैसे व्यक्ति, जो अपनी मेहनत से बलवान और सक्षम बने हैं, उन्हें कम से कम गाँव के मामलों पर ध्यान तो देना चाहिए!" श्यामराव ने बहस करते हुए कहा, "हाँ, और सिर्फ इसलिए कि पानी घास पर नहीं गिरा है, अपने सिर पर राख डालने का कोई कारण नहीं है!"
हांफते हुए दादाजी बोले, "तुम गाँव आए; फिर क्या हुआ? पानी नहीं था। दो पैरों वाला आदमी लेटा हुआ था। पानी नहीं था। मरे हुए आदमी की जीभ धोने के लिए भी पानी नहीं था। तुम आए और बारिश हो गई। पत्थर ने मुझे सब कुछ बता दिया! चलो, तुम्हारे कर्मों ने गाँव को झील में बदल दिया है।"
"यह सच है, लेकिन अगर आप मेरे खेत में चार जगहों पर भी खुदाई कर लें, तो पानी का कोई निशान नहीं मिलेगा। आप किस तरह के मूर्ख हैं जो मुझे समझते हैं?"
‘‘ऐसा ही होगा! दयालुता दिखाने वाले को कभी इनाम नहीं मिलता। ह्यो ह्यो सूर्या! वह पूरे संसार को प्रकाश देता है। सोता मातोर आधी रात को आग से जल रहा है! और, हाय देखो! अब इस स्मृति को दिमाग से निकाल दो।’’
"तो क्या मुझे फॉर्म कल भरकर लाना चाहिए?" श्यामराव ने पूछा। उन लोगों के आने से बापूसाहेब को सचमुच बहुत राहत मिली। उन्हें यह देखकर बहुत खुशी हुई कि इस गाँव में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उनकी असफलता को सहानुभूति और प्रेम की दृष्टि से देखते हैं। इतना ही नहीं, यह देखकर कि उन्हें यह महसूस हो रहा है कि गाँव में झील का निर्माण उनके आने के कारण ही हुआ है, बापूसाहेब का

दुख दूर हो गया। चाय के बाद, बापूसाहेब ने घोषणा की कि उन्होंने सभी की विनती पूरी करने का निर्णय लिया है।
0-0-0

चार

बापूसाहेब चौगुले ढलगांव के सरपंच बने और गांव का आंतरिक भाग मानो जादू से बदल गया। विद्यालय से लेकर पंचायत समिति कार्यालय तक, सभी इमारतें नई थीं। गांव की संकरी सड़कें और नालियां, जो पहले पशुओं के गोबर से भरी रहती थीं, अब तारकोल से पक्की हो गईं। नालियां बनवाई गईं। झील गांव से लगभग डेढ़ मील दूर थी और नहर से जुड़े खेत पानी से भरे रहते थे; फिर भी गांव को पीने का पानी कुएं से ही लेना पड़ता था। जल आपूर्ति योजना लागू की गई। तालाब के उद्घाटन में एक मंत्री उपस्थित थे। उन्होंने बापूसाहेब की प्रशंसा करते हुए उन्हें गांव की तेजी से बदलती स्थिति का जनक बताया। मंत्री जी ने जैसे ही बापूसाहेब के गले में माला डाली, गांव में जमा हुए सभी बुजुर्ग और युवा तालियां बजाने लगे।
उस रात बापूसाहेब को ऐसा लगा मानो आसमान में अंधेरा छा गया हो, और तभी खबर आई - "लक्ष्मी ने पुत्र को जन्म दिया है।" बापूसाहेब ने पट्टी बांधी और ढलगांव में सबको यह खबर फैला दी। उन्होंने अगले दिन सुबह लक्ष्मी के घर जाने का फैसला किया।
“तुम क्या कह रही हो? क्या कुएँ में पानी आ गया है?” बापूसाहेब ने अपनी प्रिय धनगर को गले लगाते हुए कहा, जो दौड़कर आई थी और उन्हें यह खुशखबरी दी थी।
‘‘बिरोबच्यानाम! स्वामी जी, ये मुशिंदा हैं। आतापाटोर हीरों से जगमगाएगा!”
"चलो, चलो, चलो। माँ, तुमने तो दुनिया जीत ली है। प्यारी, तुम्हारे लिए मेरे पास सौ रुपये का इनाम है!"

बापूसाहेब ने तो जूते पहनने की भी जहमत नहीं उठाई, प्रिया उनके पीछे दौड़ रही थी।
रास्ते में, सड़क पर मौजूद किसान हाथ उठाकर और चिल्लाकर बापूसाहेब को बधाई दे रहे थे, "शाबाश, बहादुर चौगुले, तुमने आखिरकार अपनी ईर्ष्या को संतुष्ट कर लिया!"
लेकिन बापूसाहेब को इसकी कोई परवाह नहीं थी। वे दौड़ते रहे। रास्ते में पत्थर उनके पैरों में चुभ रहे थे, वे लड़खड़ा रहे थे, गड्ढे में उनके पैर फंस रहे थे; लेकिन बापूसाहेब दौड़ते रहे। आज बापूसाहेब, जो आधे घंटे में खेत तक पहुँच गए थे, उन्हें यह दूरी मीलों दूर लग रही थी। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ रहे थे, वे लखोबा नवला की तीन पीढ़ियों को बचा रहे थे। “अरे कमीने! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की कि तुम्हें पानी की एक बूँद भी नहीं मिलेगी। उसके बाप का तो पानी बेचने का धंधा था! अब आकर देख! उसने मुझसे जो तीन सौ रुपये लिए थे, अब वो मुझसे वसूल रहा है! मेरे पैसों की क्या कीमत है? मैंने चोरी और घरों में सेंध लगाकर ये पैसे क्यों कमाए?”
बापूसाहेब दौड़ रहे थे। उनका मुंह सूख रहा था। आसपास के खेतों में बिजली की मोटरें पानी पंप कर रही थीं, नदी से पानी की धारा बह रही थी; लेकिन बापूसाहेब आज अपनी प्यास उस कुएं के पानी से बुझाना चाहते थे जिस पर वे काम करते थे!
प्रिया दौड़ते-दौड़ते थक गई थी। वह उसके पीछे-पीछे रेंग रही थी। बापूसाहेब ने उसे रोककर चिल्लाते हुए कहा, "अरे बदमाश! क्या हुआ है? उठो। कम से कम मुझे यह तो बता दो कि आज रात तुम्हें कितनी बोतलें चाहिए-"
‘‘बोतल में बंद? मालिक ने तो अभी-अभी बोतल से स्नान किया है। मैं तो सबके साथ तिलचट्टे की तरह बॉडीबिल्डर हूँ!’’

"ठीक है, ठीक है, तुम चिकन क्यों मांग रहे हो? मैं बकरी काट रहा हूँ और कंदुरी बना रहा हूँ! चलो, इसे उठा लो।"
बापूसाहेब प्रिया का हाथ पकड़े खेत के रास्ते पर चल रहे थे।
आखिरकार, उन्हें खेत के किनारे एक गोटी आम का पेड़ दिखाई दिया।
पेड़ के पीछे सौ-दो सौ लोग जमा थे। उस कुएँ के चारों ओर भारी भीड़ थी जिसे बापूसाहेब ने चौथी बार खोदना बंद कर दिया था। लाखों मधुमक्खियाँ घोंघे की तरह भिनभिना रही थीं।
किसी ने बापूसाहेब को देखा और कुएँ के किनारे खड़ी भीड़ अचानक एक तरफ हट गई। बापूसाहेब को जाने के लिए जगह मिल गई। बापूसाहेब तेज़ी से किनारे की ओर चलने लगे। उनके बगल में खड़ा किसान, यह सोचकर कि कहीं उनका संतुलन न बिगड़ जाए, उनकी कमीज़ पकड़कर उन्हें पीछे खींचने लगा।
बापूसाहेब ने देखा कि कुएँ की तलहटी से सचमुच एक तेज़ धारा फूट पड़ी थी। बुलबुले उठ रहे थे। पानी ऐसे नाच रहा था मानो उबल रहा हो और बुलबुले उठ रहे हों! बापूसाहेब इतने खुश हुए कि वे ज़ोर से चिल्ला उठे!
उनकी आवाज सुनकर उनके नौकर धनाजी दौड़कर ऊपर गए और दीपक जलाया। बापूसाहेब पलंग पर उठ बैठे थे। उनकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी। नौकर ने डरते हुए पूछा, "धनी, क्या हुआ? क्या हुआ! क्या तुम इतनी ज़ोर से रोए थे?"
"कैसा सपना! एक भयानक सपना!"
"लेकिन मैं इस तरह चीखते हुए कभी नहीं जागा!"
‘‘मुझे थोड़ा पानी दो, मुझे गर्मी लग रही है!’’
धनाजी ने मेज पर रखे तांबे के बर्तन से पानी एक गिलास में डाला और उसे बापूसाहेब के सामने रख दिया।
"यह पानी कहाँ है?"

"तुम्हारा क्या मतलब है? नल! क्या तुमने टैंक को परसों चालू नहीं किया था!"
"इस तालाब का पानी! यह तो कड़वा होता जा रहा है!"
फिर बापूसाहेब ने पानी का एक घूंट लिया और हाथ में पकड़ा गिलास दीवार पर पटक दिया। गिलास चकनाचूर हो गया। धनाजी उन्हें देखते हुए बोलीं, "आह!"
दीवार पर लगी घड़ी ने तीन बार आवाज़ की। धनाजी ने हिम्मत करके पूछा, “धनी, ये गिलास क्यों टूटा है?” और वे टूटे हुए गिलास के टुकड़े उठाने लगे। धनाजी के सवाल का जवाब दिए बिना, बापूसाहेब वहीं बैठे रहे और दोनों हाथों से अपना सिर कसकर पकड़े रहे। उन्होंने घबराकर कहा, “इसका क्या करोगे? आखिर ये तो एक सपना ही तो है!”
"ऐसा नहीं था, मेरे स्वामी, काश टुकड़े-टुकड़े होने का सपना सच हो जाता!"
"क्या कहा आपने?"
मृतकों के सपने सच होते हैं!
"लेकिन मेरा सपना सच नहीं होने वाला, धनाजी! बहुत अजीब, बहुत अजीब!"
‘‘अरे, बाग के धनी व्यक्ति, कल वनिसबासनी एक लड़का बन गया। अगर आप कोई सपना देखते हैं, तो वह सच हो जाता है। कौन बता सकता है?’’ "धनजी, मुझे अब नींद नहीं आ रही है। चाय चढ़ा दीजिए। हम जल्दी ही निकलेंगे। थोड़ा तंबाकू ले आइए और निकलने से पहले उसे थोड़ा भून लीजिए-"
धनाजी ने कांच के सभी टुकड़े इकट्ठा किए। उन्होंने उन्हें पुराने कागज में लपेटा और अपनी तर्जनी उंगली मुंह में डालकर

नीचे चले गए। बापूसाहेब ने उन्हें देखते ही कहा, "धना, क्या हुआ? क्या तुमने इसे काटा?"
‘‘हाँ। उगी ज़ारा हाय!”
"क्या तुम इसे सुबह नहीं निकाल सकते थे? तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है!"
"और अगर चलते समय आप गिर जाएं और बहुत ज्यादा खून बहने लगे तो क्या होगा?"
बापूसाहेब को वह सपना एक बार फिर याद आ गया। जब वे पीरा धनगारा के साथ दौड़ रहे थे, तो सड़न के कारण उनके पैर खून से लथपथ थे। और अब, धनाजी को भी पैरों से खून बहने की बात करते देखकर वे अत्यंत आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने दोनों हथेलियों को देखा। हथेलियों पर कुछ भी नहीं था; लेकिन उन्हें यह जानने की उत्सुकता हुई कि कहीं उनमें खून तो नहीं है।
0-0-0

पाँच

हालाँकि बापूसाहेब एक मोटरबाइक खरीदना चाहते थे, लेकिन उन्होंने अपनी शान-शौकत दिखाने के लिए एक घोड़ा बनवा लिया था। राज्य के विलय के बाद, उनके पास मौजूद घुड़दौड़ के घोड़ों को बिक्री के लिए रख दिया गया था क्योंकि अब उनके लिए उन्हें खिलाना-पिलाना संभव नहीं था। बापूसाहेब ने एक बेहतरीन, उच्च नस्ल का काला अरबी घोड़ा खरीदा। उन्होंने उस घोड़े को पेठ के रमज़ान नलबंद से बनवाया और उसे पीले और सफेद रंग से रंगवाया। बापूसाहेब खुद उस घोड़े पर बैठकर सवारी करते थे। घोड़े को चाबुक मारने के बजाय, वे चाबुक को उसके सिर पर इस तरह घुमाते थे, " ", और घोड़ा दौड़ पड़ता था। शायद उस उच्च नस्ल के घोड़े को तेज दौड़ने पर चाबुक खाना अपमानजनक लगता होगा!
उस दिन बापूसाहेब रेस्तरां गए थे। सुबह के उस अजीब सपने की घटनाएँ अभी भी उनके दिमाग में घूम रही थीं। उन्हें धनाजी के शब्द याद आए - "मृतकों के सपने सच होते हैं!"
घोड़ा अपने खुरों की थाप पर सरपट दौड़ रहा था। ढालगाँव से रेथर तक की आठ से दस मील की दूरी एक या डेढ़ घंटे में आसानी से तय की जा सकती थी। चलते-चलते बापूसाहेब ने अपने कोट की जेब जाँची। उन्हें याद नहीं आ रहा था कि उन्होंने सोने की मुहर किस जेब में रखी थी, जो बासु ने गाँव छोड़ते समय सुनार से ली थी।
रेथारिया जाने वाली सड़क अच्छी थी; लेकिन गाड़ी को तीन पहाड़ों के चक्कर लगाने पड़ते थे, और आखिर में म्हासोबा दर्रे से होकर गुजरना पड़ता था! यह म्हासोबा दर्रा कभी बहुत मशहूर था। दर्रे में घना, काला जंगल था और बीच में हाथियों के झुंड जैसी एक विशाल

चट्टान थी। इस दर्रे में चोर और लुटेरे रहते थे। यह दर्रा पुणे- बैंगलोर सड़क से लगभग छह मील दूर था। रात में और शादी के मौसम में, जब बैलों के गले में बंधी घंटियाँ बजती थीं, तो लुटेरे किनारे पर लगे बड़े-बड़े बलूत के पेड़ों के पीछे छिपकर धीरे- धीरे आगे बढ़ते थे और अचानक गाड़ियों पर हमला करके गोदामों को लूट लेते थे। लेकिन अब इस बहादुर गिरोह ने एक अच्छा धंधा शुरू कर दिया था - हाथ से गढ़ी हुई भट्टियाँ! पूरे म्हासोबा दर्रे से रसायनों की गंध आ रही थी। लेकिन फिर भी, रामोशी अपने पूर्वजों का नाम बचाने के लिए समय-समय पर साहसी डकैती करता रहता था; वह इधर-उधर भटकता रहता था। लेकिन उसमें एक खास बात थी। उसने कभी भी ढालगाँव और आसपास के गाँवों के लोगों को नुकसान नहीं पहुँचाया। क्योंकि अगर उसने इसके बारे में सोचा होता, तो म्हासोबा दर्रे में शरण लेना मुश्किल हो जाता।
हालाँकि अधिकांश रामोशी लोगों ने बिना पूंजी के और भारी मुनाफे के साथ अपना कारोबार शुरू किया, लेकिन गाँव का रानबा रामोशी चार गाँवों से चार "गुंडों" को इकट्ठा करके किसी न किसी को लूटने का काम करता था। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि इससे भी बढ़कर, गाँवों के लुटेरे रानबा के पास "प्रशिक्षण" लेने आते थे। रानबा उन्हें सबक देता था और उनसे किसी तरह की चोरी या सेंधमारी करवाता था और यह देखने के लिए उनकी परीक्षा लेता था कि वे सफल हुए या नहीं।
बापूसाहेब का घोड़ा एक दर्रे से गुजर रहा था तभी बरगद के पेड़ की एक बड़ी शाखा सड़क पर एक तरफ से दूसरी तरफ गिर पड़ी। शाखा के गिरने की आवाज से घोड़ा उछल पड़ा और हिनहिनाने लगा। बापूसाहेब ने लगाम खींची और उसे शांत करने की कोशिश की, लेकिन तभी सात-आठ काले मुंह वाले मेढ़े आए और बापूसाहेब को घेर लिया। उन्होंने

तुरंत उनके हाथ बांध दिए। उन्होंने घोड़े को मेढ़ों से अलग किया और उसे दोनों ओर की घनी झाड़ियों में ले जाकर छिपा दिया। उन्होंने बापूसाहेब को लगभग एक फर्लांग तक अंदर धकेला। उनके सामने, रानबा एक पेड़ के नीचे बैठा था। बापूसाहेब को उस हालत में देखकर वह उठा और उन्हें लाने वालों पर झपटा, “अरे वेश्याओं, तेरी माँ मर चुकी है! उसे यहाँ क्यों लाए?” यह कहते हुए उसने खुद बापूसाहेब के हाथ छोड़े और हाथ जोड़कर उनसे क्षमा माँगते हुए कहा, “क्या बकवास है, आजकल के बच्चे तो खाना बनाना भी नहीं जानते!”
"लेकिन तुम कब तक ऐसा करती रहोगी, रानब्या?"
"मैं क्या कर रहा हूँ, बापूसाहेब? ये सब होने वाला है, ये सब होने वाला है!"
"तुम्हारा खेल खत्म हो गया है। अब इसे छोड़ दो!"
‘‘सच कहूँ तो पिताजी, मैं इस शराब पर बहुत पैसा खर्च कर रहा हूँ। मुझे सच में इस धंधे में कोई दिलचस्पी नहीं है!’’
"किस तरह का मज़ा?"
"हम रात के अंधेरे में मीलों पैदल चलते, किसी के घर में घुसने के लिए अपनी जान जोखिम में डालते और धमाके के साथ भाग निकलते! फिर पुलिस बमबारी शुरू कर देती। इसे पकड़ो, उसे पकड़ो। हम अकेले ही ये सब करते और पुलिस किसी और को पकड़ लेती! हमें ये सब देखकर बहुत मज़ा आता था!"
“रैनबी, क्या यह कोई मजाक है? इसे छोड़ दो!”
"मैं भाग नहीं सकता, बापुसाब! मुझे लग रहा है कि मैं किसी मुसीबत में फंस रहा हूँ! अच्छा, तो आप सुबह क्यों भागे थे?"
बापूसाहेब को ला रहे लोगों की ओर दौड़ते हुए रानबा ने कहा, "अरे वेश्याओं, अपने पैर तैयार कर लो। कुछ को रोकना है, कुछ को छोड़

देना है; समझ रही हो? हाँ, मैं क्या कह रहा हूँ? यही तो बात है, मूर्ख, जैसे-जैसे मैं बोल रहा हूँ, मेरा ध्यान भंग हो रहा है!" "आप मुझसे पूछ रहे थे कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।"
‘‘हाँ, मुझे माफ़ करना! बागा। मैं सच में तुमसे पूछना नहीं चाहती थी!’’
"क्यों?" "मुझे माफ़ करना। माँ, आपने कहा था कि कल आपके यहाँ एक बेटा हुआ है! क्या यह सच नहीं है? तो क्या आज सोने का हाथी झील से उतरकर अशिला आएगा?"
‘‘रानबा, तुम तो बिल्कुल आश्वस्त हो। ये टाइगर सील!’’
तो बापूसाहेब ने अपनी जेब से गुलाबी कागज में लिपटी एक मुहर निकाली और उसे रानबा को दिखाया। रानबा ने उसे हाथ में रखकर एक-दो बार ऊपर-नीचे हिलाया, मानो उसका वजन कर रहे हों, और पूछा, "क्या आपने इसे फूलदान में रखा था?"
"हाँ!"
"फसलासा!"
"वह कैसा है?"
जंगली सूअर ने फूल के पास एक चिकने पत्थर पर उसे रगड़ा और बगल में खड़े अधेड़ उम्र के रामोश की ओर मुड़कर कहा, "सैत्य, उस नागमल मारवाड़ा महिला की मूर्ति से माला उतारो!"
शैतान ने पत्थर की बेंच में हाथ डाला और एक छड़ी निकाली। उसने उसमें से बीस मूर्तियों की माला निकाली और उन्हें जंगल के सामने लहराया। एक मूर्ति जंगल के पास गिर गई और उसी पत्थर पर रगड़ गई। उसने पत्थर को अपने पिता के सामने रखा और कहा, “देखो, यही फर्क है! मेरी पूरी जिंदगी सोना जमा करने में बीत गई। बापसु, मैं एक नाजायज बच्चे के लिए सो रहा हूँ। पीतल के सिक्के बन रहे

हैं। अगर मैं उस लड़के से सोना छीन लूँ, तो वह सौवें नंबर पर होगा। बनावट फट रही है। यह न्या जावा की मूर्ति!”
उसने बापूसाहेब द्वारा रणबाला को दिया गया फूल झाड़ियों में फेंक दिया।
"आप बहुत समय से होटल नहीं गए हैं?"
"क्यों आए हो?"
‘‘का?’’
"तुम जंगल में बैठे हो, गड्ढा खोद रहे हो, यह एक गड्ढे जैसा है!" "सच में, रानबा, वह तो बिल्कुल पागल था!"
"हो सकता है; लेकिन सच कहूँ तो, बापुसाब, अगर सोना गीला हो जाए तो क्या होगा?"
"ओह, मैं वहाँ बगीचे में एक बंगला बनाऊँगा, कुएँ पर एक मोटर लगाऊँगा, और उसे पूरी तरह हरा-भरा कर दूँगा!"
"क्या?"
और क्या? हम वहाँ जाकर आराम करने वाले थे। हम एक ऐसा खलिहान बनाने वाले थे जिसमें चार जानवर रह सकें और मुर्गियाँ पाल सकें! "क्या इसे 'फार्म हाउस' नहीं कहा जाना चाहिए?" रानबा ने अपना सिर खुजाया और सही शब्द ढूंढ लिया।
आप अच्छा कर रहे हैं, है ना!
‘‘मैंने बटेर की आवाज सुनी, बटेर! अच्छा, क्या मैं अब आपको एक कहानी सुना सकता हूँ?’’
"क्या?"
"तुम्हारा जंगल बाढ़ से नहीं डूबेगा!"
‘‘का?’’
आपको ऐसा नहीं करना चाहिए!
"लेकिन क्यों?"

‘‘ये जंगली भेड़ें हैं। जो भी जंगल पर कब्ज़ा करेगा, उसे गोता लगाना पड़ेगा। अगर तुम्हें गिराक मिल जाए, तो मुझे सारा जंगल दे दो, जाओ!
"लेकिन रानबा, मैं तो चाहता था...!"
“क्या मुझे हीरा नहीं हटा देना चाहिए? बापुसाब, ये शोर बंद करो। वह जंगल मेंढक के पेशाब जैसा दिखेगा!”
"लेकिन रानबा...!"
मुझे खेद है! आपने सूट पहना है, आपको हीरे मिल जाएंगे; लेकिन मैं आपको क्या बता सकता हूँ?
‘‘सांग की!’’
"क्या आप भगवान को मानते हैं?"
"ज़रूर! मुझे ईश्वर पर पूरा भरोसा है!"
‘‘तुम्हें क्या लगता है कि वे देवता कौन हैं?’’
"आपका क्या मतलब है?"
‘‘वाह, ये तो बढ़ई हैं, हाय बढ़ई!’’
"तुम बकवास कर रहे हो, रानबा!"
‘‘अरे, गले से। वे भगवान हैं, बढ़ई हैं। और यह बढ़ई कुछ नहीं बनाता; फिर यह जगह क्यों है?’’
"क्या?"
‘‘चलो, मैं उन्हें चरागाह साफ करवाता हूँ!’’
"कीला?"
‘‘हाँ। और ब्रह्म द्वारा सृजित मनुष्य में, वह हत्या करके त्याग देता है। कुणाला पोरबल ना हुनारी पचार। चाहे कोई पैरवी के लिए पानी की तरह पैसा बहा दे, बीज हीरे को पानी की ज़रूरत नहीं होती!” रणबा ज़ोर से हँसे और आगे बोले। ‘‘तो उसे पहचानना चाहिए

कि उसने अपने भीतर क्या मारा है और उसे शोर मचाना चाहिए। स्नान क्यों नहीं करता?”
"लेकिन रानबा। मुझे अब भी लगता है...!"
"'हाँ, बापूसाब, सही कहा। चलो, दगडू ने तुम्हारे पैसों से सोने जैसा कारोबार किया। उसने घर बनाया। उसे चार पैसे का नुकसान हुआ और अगर वह उस जंगल में मुसीबत में पड़ जाता तो क्या होता?'" "अभी बहुत उम्मीद बाकी है, रानबा!"
"मैं कोई महान संत नहीं हूँ, बापुसाब। लेकिन मैं आपको बताऊँगा। पहाड़ की उस आवाज़ को छोड़ दो। मैंने वह जंगल ढूंढ लिया है और मैं आपके साथ आ रहा हूँ!"
''अरन ए लक्या, तांगा जुपला का!''
"अरे वाह!" गली से एक आवाज आई।
बापूसाहेब उठ खड़े हुए। रानबा उसे देने आए। बापूसाहेब चौकी पर बैठ गए। फिर रानबा ने कहा, "बापूसाहेब, क्रोधित मत होइए। बच्चे दूसरी दुनिया से आए हैं!"
"रहने दो; लेकिन अब मुझे तुम्हें बताना होगा कि यहाँ व्यापार मत करो। मैं सरपंच हूँ; तुम जानते ही हो ना!"
"अस्तित्वहीन का क्या हुआ? आज और अतीत में, राजा और सम्राट इज़राइल से भाग सकते हैं, लेकिन सरपंच कौन है, उप सरपंच कौन है, बापूसाब इज़राइल से कैसे बच सकते हैं?"
बापूसाहेब को उस कथन में छिपा मज़ाक समझ नहीं आया होगा। वे बस ज़ोर से हँस पड़े। डाकू भी हँस पड़ा, और हँसते-हँसते बापूसाहेब ने अपना चाबुक हवा में लहराया और उनका घोड़ा देरी की भरपाई करने के लिए पूरी रफ़्तार से दौड़ने लगा।
जैसे ही रेथारे गांव के शिव नजर आए, बापूसाहेब ने गाड़ी की रफ्तार धीमी कर दी। हालांकि वे लड़के का चेहरा देखने के लिए

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

छह

कई साल पहले, ढलगांव में एक शो आया था। शो शहर का था, लेकिन उसमें नृत्यांगना पुणे की थीं - मैना पुणेकरिन। इस मैना का नाम थोड़ा अटपटा था। जब मैना नृत्य करना शुरू करतीं, तो दर्शक बेहोश हो जाते। इसी तरह, गायिका के रूप में भी मैना बहुत लोकप्रिय थीं। जब किसी बड़े शहर की मैना की बारी आती, तो सुरक्षा के लिए पुलिस को बुलाना पड़ता और जब ऐसा ही एक मैना का शो ढलगांव आया, तो एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हो गई।
ढालगांव में मीरासाहेब का एक उरुस था। उरुस के लिए चार नाटक आए थे; लेकिन भीड़ मैने के नाटक के लिए थी... एक बहुत बड़ी भीड़।
उस समय गाँव में एक पहलवान रहता था। शिवप्पा एक पहलवान था। यह शिवप्पा कुश्ती करता था, लेकिन बाद में उसका कुश्ती करियर समाप्त हो गया। एक बार जब उसे मैदान में हारा हुआ घोषित किया गया, तो उसने गुस्से में अंपायर को उठाकर पीट दिया। उसके बाद से कुश्ती जगत ने लगभग उसका बहिष्कार कर दिया। कोई भी उससे कुश्ती नहीं करना चाहता था। प्रशिक्षण के लिए भी कोई उसे नहीं बुलाता था। उसने कुश्ती करना भी छोड़ दिया। लोग उसके बारे में क्या कह रहे थे, उसने उस पर ध्यान नहीं दिया। शायद कुश्ती के दौरान थप्पड़ों से सूजे हुए उसके कान उसकी बदनामी को सुन ही नहीं पा रहे थे।
यह अकेला रहने वाला शिवप्पा कुछ समय तक रणबा के साथ रहा। रणबा ने उसे डकैती के कुछ सबक भी सिखाए; लेकिन शिवप्पा में एक लुटेरे के लिए ज़रूरी फुर्ती नहीं थी। कुश्ती छोड़ने के बाद से ही शिवप्पा जंगली सूअर की तरह इधर-उधर भागता रहता था। रणबा ने उसे

सीधे-सीधे चेतावनी दी, “शिव, यह तुम्हारा काम नहीं था। अगर तुमने आधी रात को पुलिस स्टेशन पर हमला किया, तो वे तुम्हारे झुंड को तितर-बितर कर देंगे!”
लेकिन शिवप्पा को इससे भी अपमान महसूस हुआ। "क्या मैं एक भी काम करने में असमर्थ हूँ? चलो इस गाँव को दिखाऊँ कि शिवप्पा की ताकत क्या होती है!"
फिर शिवप्पा पूरे गांव को चौंका देने का मौका ढूंढने लगे। इसी समय उर्स उत्सव समाप्त हो चुका था। अब मैना की बारी थी। शिवप्पा ने मैना को गांव से दूर ले जाने की योजना बनाई।
कार्यक्रम पूरे जोश में चल रहा था। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। फिर प्रश्नोत्तर सत्र शुरू हुआ। सोंगाद्य आए और अपने देहाती और अश्लील गीतों से वहाँ मौजूद चरवाहों को हँसाने लगे। फिर मथुरा की गौलाणियों का प्रसिद्ध नृत्य शुरू हुआ। तभी मैना कपड़े बदलने के लिए पास की छत पर चली गईं। लेकिन जब वह काफी देर तक बाहर नहीं आईं, तो तामसगीर भी उस छत पर गए। पर मैना वहाँ नहीं थीं। उनके मुँह में पानी आ गया। "मैना चली गईं... मैना चली गईं!" यह फुसफुसाहट दर्शकों तक पहुँच गई और भीड़ बहुत क्रोधित हो गई। डामर की नोक वाले तख्तों से बना मंच थोड़ी देर बाद ही गिर गया। गैस के दीपक फूट पड़े और बिखर गए। दंगा एक घंटे तक चलता रहा। अंधेरे और अफरा-तफरी में कई लोग कुचलकर मर गए।
यहां शिवप्पा मैना को बैलगाड़ी से उतारकर ले जा रहे थे। मैना छटपटा रही थी, चीख रही थी। वह तड़प रही थी; लेकिन व्यायाम से मजबूत हुए उसके शरीर पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था। ढालगांव के पश्चिम में पहाड़ों में एक जर्जर किला था। उसमें महादेव का मंदिर था। किले की तलहटी में बैलगाड़ी छोड़कर, शिवप्पा ने मैना को ऐसे उठाया जैसे कोई छोटे बच्चे को उठाता है। पता नहीं किले

पर चलने वाली ठंडी हवा का असर था या शिवप्पा के पुरुषोचित स्पर्श का, मैना का छटपटाना थोड़ा कम हो गया। वह चुपचाप बैठ गई, मानो किसी ऐसी मैना के पंख काट दिए गए हों।
मंदिर के सामने एक विशाल पत्थर से बना आंगन था। शिवप्पा ने आह भरी और मैना को अपने सामने बिठाया।
"तुम मुझे यहाँ किसलिए लाए हो?"
"मुझे यह आज ही चाहिए!" शिवप्पा ने मुस्कुराते हुए कहा।
"आपने आशी को मजबूर क्यों किया?"
"क्या आपको पता है कि आपने ऐसा क्यों किया?"
“बिल्कुल नहीं, ऐसा नहीं होने वाला। लाई वंगल ने कमाल कर दिखाया!”
"खैर, मेरी अभी शादी नहीं हुई है। गाँव में कोई भी मुझे बेटी देने को तैयार नहीं है!"
"तो मुझे यहाँ सिर्फ एक शो के लिए आना पड़ेगा?"
‘‘जी हाँ! गाँव वाले कह रहे थे, मुझे कुछ भी गलत नहीं है।’’ "लेकिन आपने मुझे ही अपने अधिकारों का दावा करने वाले के रूप में देखा?"
‘‘मैंने कई दिनों से तुम्हारा नाम सुना है। मैंने तुम्हारा तमाशा पाँच मिनट के लिए देखा और फिर मैंने मन ही मन तय कर लिया कि मैं भी वही करूँगा जो तुमने किया है!’’
"इसलिए?"
"मैं कई जगहों पर गया हूँ, यहाँ तक कि सतारा और कोल्हापुर भी; लेकिन मैंने तुम्हारे जैसा बड़ा कुत्ता कभी नहीं देखा! तब मैंने कहा, 'तुम्हें रस्सी उठा लेनी चाहिए!'"
"चलो, ऐसा ही एक शो करते हैं!"

"तो अब इसका क्या बचा है? लोगों की आंखों के सामने भाग निकलना कितना मजेदार है!"
"धा गांव के लोग इकट्ठा हो गए हैं। आपने उन सबको क्यों नाराज किया?"
"ज्यादा मत बोलो, रघुवानी। तुम मेरी हो। धीरे से बोलो, मेरी," शिवप्पा ने अपनी मजबूत कलाइयों से उसे अपनी ओर खींचते हुए और सीने से लगाते हुए कहा।
"छोड़ो इसे, छोड़ो इसे!"
लेकिन शिवप्पा उसे इतनी दूर तक लाकर यूं ही छोड़कर नहीं गए थे। उसका संघर्ष शांत हो गया।
सुबह के दो बज रहे थे। किले से नीचे का पूरा इलाका दिखाई दे रहा था। ढालगांव उरुसात की आवाज चार-पांच मील दूर तक सुनाई दे रही थी।
किले पर ठंडी हवा चल रही थी। ऊपर आकाश तारों से भरा हुआ था। मैना, शरीर मोड़े हुए, अँधेरे में शिवप्पा को देख रही थी। मैना को नहीं पता था कि आगे क्या होगा। कुछ देर तक अबोला चुप रही, और मैना ने धीरे से पूछा।
"अब आप क्या करने वाले हैं, गुरुजी?"
‘‘मैं थप्पड़ खाने के बावजूद लिखना जारी रखूंगा और हर दिन थोड़ा- बहुत अपनी ज़ुबान का इस्तेमाल करूंगा!’’
‘‘राक्षस हैस!’’
"अरे, अब तुम गांव से कितनी दूर जाओगे?"
"और?"
‘‘राजा-रानीवानी र्हाऊ!’’
"अरे बाप रे! क्या आपको लगता है कि मेरे मालिक चुप रहेंगे?" "क्या करेंगे आप?"

"ओह, मैं जा रहा हूँ, उस शो को और कौन देखना चाहेगा?"
तो चलिए किसी दूर देश की यात्रा पर चलते हैं!
"पहलवान आधा दर्जन लोगों से मिलकर बना होता है, यह सच है। अरे, खाने का क्या फायदा?"
"क्या मैं कमजोर हूँ? अगर मुझे करना पड़ा, तो मैं करूँगा!" लेकिन शिवप्पा के वे सारे सपने जो अंधेरी रात में देखे गए थे, दिन निकलते ही चकनाचूर हो गए। गाँव के पुलिसवाले ने बैलगाड़ी के निशानों से शिवप्पा और मैना का पता लगाया और मैना के अपहरण और व्यभिचार के आरोप में शिवप्पा के खिलाफ अदालत में मामला दर्ज कराया। शिवप्पा को सात साल की सजा सुनाई गई। मैना शो में लौट आई; लेकिन वह लंबे समय तक नाच नहीं सकी। शिवप्पा का बच्चा उसके गर्भ में पल रहा था। शो के मालिक ने उसे "खाली" करने की कोशिश की; लेकिन उसने यह काम गाँव के डॉक्टर के ज़रिए किया! मैना का अंत उसी तरह हुआ।
तब से लेकर अब तक ढालगांव में कभी भी कोई भव्य आयोजन नहीं हुआ। मीरा साहब के कई उत्सव वहां धूमधाम से मनाए गए; लेकिन बाद के किसी भी उत्सव में ढालगांव का आयोजन नहीं हुआ।
अब, भले ही उस घटना को कई साल बीत चुके थे, लेकिन तमसगीरों की दुनिया में एक भय पैदा हो गया था। अगर कोई महिला ढलगांव में तमाशा नृत्य करती है, तो उसकी मृत्यु हो जाती है! इसीलिए इतने सालों से कोई भी तमसगीर वहां नहीं गया था।
समय तेजी से बदल रहा था। पुरानी परंपराएं और अंधविश्वास अब लोगों में पहले की तरह प्रचलित नहीं रहे थे। बेशक, कुछ नए तामसगीरों को भी ढलगांव उरु में शामिल होने की आवश्यकता महसूस होने लगी थी। उनमें से एक ढलगांव के सुदाम कांबले भी थे!

से ठुकरा दिया। भीमनगर में एक-दो लोगों ने भी सुदाम की जगह रंगा को सुझाई; लेकिन रंगा ने कहा, "मेरी बेटी नाचा को नहीं दी जाएगी। कोई मुझसे इसके बारे में दोबारा न पूछे!"
जब सुदाम ने यह सुना तो उसके अहंकार को ठेस पहुंची। सुदाम को उम्मीद थी कि रंगा अपनी अपार प्रसिद्धि और धन को देखते हुए उसकी विनती मान लेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
यशोदा, जिसे पूरे हरिजनवाड़ा में “बामनीं” कहा जाता था, उसके मन में शहरी रीति-रिवाज इस कदर रचे-बसे थे जैसे रंग। वह हर सुबह नियमित रूप से स्नान करती, बालों की चोटी बनाती और सिर पर फूल लगाती। कभी-कभी वह दूसरों के घरों में जाती भी थी; लेकिन वहाँ कुछ नहीं खाती थी। उसे बड़े जानवरों का मांस खाना बिल्कुल पसंद नहीं था। कभी-कभी, हरिजन समुदाय किसी बूढ़े बैल या दुर्घटना में अपना पैर खो चुकी गाय को पैसे देकर खरीद लेता और उसे वध के लिए कसाईखाने ले जाता। पूरा भीमनगर अपना हिस्सा लेने के लिए इकट्ठा होता था। कोई और नहीं आता था, केवल लिंगदा ही आते थे!
यशोदा ने सात साल तक पढ़ाई की और रंगा गाँव लौट आई। आगे पढ़ने की इच्छा होने के बावजूद, वह पढ़ नहीं सकी। सुदामा कभी-कभी गाँव आता था, तंग पतलून और धारीदार बनियान पहने हुए। वह मुँह में सीटी लिए घूमता रहता था। यशोदा ने उसे कई बार देखा; लेकिन उसे भी उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं था।
लाउडस्पीकर पर घोषणा की गई कि सुदाम और उनके साथियों द्वारा एक लोक नाटक आज रात ढालगांव में प्रस्तुत किया जाएगा। इतने वर्षों बाद गांव में नाटक के दोबारा मंचन की घोषणा सुनकर भारी भीड़ उमड़ पड़ी। भीम नगर से तो अनेक लोग आए ही, साथ ही गांव के सरपंच बापूसाहेब और ग्राम पंचायत के सदस्य भी नाटक देखने उपस्थित थे।

लोक नाटक बहुत रंगीन था। सुदामा को कृष्ण का वेश धारण कराया गया था। हालांकि, बाजार अवरुद्ध करने वाला वह प्रसिद्ध दृश्य नाटक में नहीं था। सुदामा (कृष्ण) द्वारा अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाने का दृश्य देहाती हास्य के साथ प्रस्तुत किया गया था। अर्जुन को उकसाते हुए उन्होंने हर तरह के अपशब्द कहे। सबसे गंभीर बात यह थी कि कृष्ण ने अंत में अर्जुन को युद्ध के लिए उकसाने के इरादे से सीधे उसके मुंह में कुछ कह दिया।
गोपियों का नृत्य था, कामुक चुटकुले थे; लेकिन कौन जाने ढालगांव के उन बदमाशों को ये सब कितना समझ आया होगा! कुल मिलाकर, इतने सालों बाद ऐसा कुछ देखकर लोग खुश थे, बस इतना ही!
जब सरपंच मंच पर गए और सुदामा को बधाई दी, तो भीम नगर में मौजूद दर्शक तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे। यह ढालगांव के लिए एक जीता-जागता उदाहरण था कि छुआछीटी का उन्मूलन हो चुका है।
अगले दिन, बापूसाहेब चौगुल्या सुदामा के पूरे दल को अपने महल में ले गए और उन्हें भोजन कराया।
दिन इसी तरह बीतते गए। और बापूसाहेब धीरे-धीरे अपने दिल के घाव को भूलते हुए प्रतीत होने लगे। लेकिन बीच-बीच में कोई ऐसी घटना घट जाती, जब उस घाव पर जमी पपड़ी हट जाती और खून बहने लगता। चाहे वे कुछ भी कर लें, खून बहना बंद नहीं होता था।
0-0-0

सात

बापूसाहेब का गाँव की राजनीति में बहुत बड़ा योगदान था। गाँव में जब भी किसी घर में कोई समारोह होता, सबसे पहले बापूसाहेब को ही आमंत्रित किया जाता था। भीम नगर के गणपा कांबले से लेकर ढलगाँव के धनी साहूकार धोन्दिनाना डोइफोडे तक, सभी को लगता था कि पारिवारिक समारोहों में बापूसाहेब का होना ज़रूरी है। इसी वजह से कई लोगों में यह गलत धारणा बन गई थी कि अगर बापूसाहेब उपस्थित नहीं होंगे, तो समारोह उचित नहीं होगा! इसके अलावा, बापूसाहेब को आमंत्रित किया जाता था, तो हमेशा लाभ ही होता था; कभी हानि नहीं होती थी। बापूसाहेब किसी भी शादी पर सौ रुपये से कम खर्च नहीं करते थे।
इसी प्रकार, यदि कोई अटक जाता, तो उसे उठकर बापूसाहेब के द्वार पर हाथ फैलाकर खड़ा हो जाना चाहिए था। किसी की भी बारी नहीं होती थी कि वह हाथ फैलाकर वापस लौटे। उनके हाथों पर एक फूल या फूल की पंखुड़ी गिर जाती थी।
चार छोटे कुएँ खुदवाने के बाद भी बापूसाहेब के पास काफी धन बचा था। अब उनके होटल का क्या? उनका होटल बढ़िया चल रहा था। उन्होंने केरल से एक रसोइया रखा था। वह दक्षिण भारतीय शैली का इतना स्वादिष्ट मांसाहारी खाना बनाता था कि पुणे से बैंगलोर और बैंगलोर से पुणे आने-जाने वाले ट्रक ड्राइवर, सिख और पंजाबी, अपनी लदी हुई लेलैंड और मर्सिडीज गाड़ियाँ छोड़कर बापूसाहेब की कैंटीन में खाना खाने आते थे और अपनी पगड़ी लहराते थे। संयोग से, रास्ते में रुकने वाले ड्राइवर और सफाईकर्मी भी होटल में आ जाते थे! ढालगाँव के होटल में तो सिर्फ चाय, भाजी और मिसल ही

मिलती थी; इसीलिए बापूसाहेब ने पेठे के प्रवेश द्वार पर यह "हाईवे कैंटीन" शुरू की थी।
शाम को बापूसाहेब के होटल के सामने ट्रकों का एक काफिला खड़ा था। म्हासोबा दर्रे पर, नदी घाटी में उत्पादित "रानबा स्पेशल" शराब चेकपॉइंट पर गैलन भर-भरकर पी जा रही थी। दिन भर फुटबॉल की "इनरी" (शराब) पूरे जोश में थी। कुछ लोग इसे "रानबा स्पेशल" कहते थे, तो कुछ "वालवा स्पेशल"। इस शराब की खासियत यह थी कि इसमें हाथ से बनी शराब जैसा कड़वा स्वाद नहीं था। साथ ही, इसे पीने पर यह जीभ पर पानी जैसी लगती थी; लेकिन इसका नशा ज़बरदस्त था। बापूसाहेब के "हाईवे वैंटीन" रेस्टोरेंट में एक-दो गिलास "वालवा स्पेशल" पीने और भरपेट खाना खाने के बाद, बेंगलुरु से गाड़ी चला रहे सरदारजी, लेलैंड ट्रक की ड्राइविंग सीट के पीछे वाली बेंच पर सो जाते थे। अगले दिन, उनका ट्रक तरोताज़ा होकर मुंबई के लिए रवाना होता था।
वहाँ के खाने का आनंद केवल ट्रक चालक ही नहीं उठाते थे; निजी कारें भी! शाम के समय जब वे उस सड़क से गुजरते थे, तो तीखी गंध के कारण चालक अचानक ब्रेक लगा देते थे।
बापूसाहेब दिन भर गांव और गांव की राजनीति में व्यस्त रहते थे, फिर भी वे ठीक सात बजे आकर अपनी सड़क किनारे वाली ढाबे पर बैठ जाते थे। वे रात ग्यारह बजे तक, कभी-कभी तो बारह बजे तक भी बैठे रहते थे!
लक्ष्मीबाई बापूसाहेब के होटल से लौटने का इंतज़ार करतीं और खाना खातीं। लेकिन अब बापूसाहेब के होटल से लौटने का समय हो गया था। कभी-कभी वे लौटते ही नहीं, बल्कि सिर्फ़ संदेश भेज देते और लक्ष्मीबाई इस रहस्य को सुलझा नहीं पातीं। लेकिन जल्द ही यह रहस्य सुलझ गया। लक्ष्मीबाई को दोपहर करीब 12 बजे खबर मिली कि

बापूसाहेब पेठ स्थित नायकवाड़ा के घर जा रहे हैं और तब सब कुछ स्पष्ट हो गया।
नायकवाड़ की मुमताज़ गाँव की अनमोल रत्न थीं। मुमताज़ का परिवार मूल रूप से एक कलाकार परिवार था, और वह भी एक प्रतिष्ठित परिवार से। उन्हें सौ-दो सौ रुपये भी दिए जाते, तो भी वे गाने या प्रदर्शन करने को तैयार नहीं होतीं। वे कम से कम पाँच सौ रुपये लिए बिना किसी को भी अपने घर में प्रवेश नहीं करने देती थीं। महीने में एक गाना भी गा लें, तो मुमताज़ संतुष्ट हो जाती थीं। लेकिन अब ऐसे लोग बहुत कम बचे थे जो उनके लिए सौ-पाँच सौ रुपये खर्च करके गाना या प्रदर्शन करना चाहते। घर में बूढ़े पिता दाऊद थे, जो अपनी बीमारी से तंग आ चुके थे, और माता फातिमा थीं, जो अंधी थीं। मुमताज़ पर आर्थिक बोझ बहुत बढ़ गया था। उन्हें किसी के आश्रय और मदद की ज़रूरत महसूस हुई। लेकिन मुमताज़ को नहीं लगता था कि उस इलाके में बापूसाहेब के अलावा कोई और ऐसा आश्रय और मदद दे सकता है। लेकिन बापूसाहेब तक कैसे पहुँचा जाए, यह एक बड़ा सवाल था।
मुमताज दिनभर ऊपरी मंजिल की खिड़की पर बैठी सोचती रही, "मुझे क्या करना चाहिए, कैसे करना चाहिए? बापूसाहेब तो दयालु हैं। अगर उन्हें मेरी ज़रूरत समझ आ गई तो वो मेरी मदद ज़रूर करेंगे; लेकिन मैं कब तक दूसरों से पैसे लेकर गुज़ारा कर पाऊँगी?" मुमताज़ खिड़की पर खड़े सोच रहे थे कि तभी उन्होंने लंगड़े ताजुद्दीन को नीचे से आते देखा। ताजुद्दीन तो ऐसे व्यक्ति थे जो गाँव में किसी के भी घर में दादा या चाचा बनकर दाखिल होते थे। जब मुमताज़ कहीं बाहर जाते, तो ताजुद्दीन उनके घर के फर्श पर लेट जाते थे। ताजुद्दीन सेठ परिवार के लिए पान और सिगरेट लाने का काम बड़े चाव से करते थे। कुछ संगीत प्रेमियों को संगीत

सुनते हुए शराब पीने की आदत थी। ताजुद्दीन उनके लिए बाज़ार से सोडा की बोतलें, शेव, चिवड़ा और घटिया लाने का काम भी बड़े चाव से करते थे। अगर उन्हें उस भुगतान में एक पेग भी बच जाता, तो ताजुद्दीन अपना काम नहीं करते थे! कुछ प्रेमी मुमताज़ के हाथ का बना मिश्रित भोजन बड़े चाव से खाते थे, और अगर कभी ऐसी दावत का आयोजन होता, तो ताजुद्दीन को ज़रूर बुलाया जाता था। ऐसे दिनों में, ताजुद्दीन को चाहे कितनी ही बार बाहर के छोटे-मोटे काम करने को कहा जाता, वे कभी आनाकानी नहीं करते थे।
लेकिन मुमताज़ की आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण ताजू उसके आसपास कम ही रहता था। आज जब मुमताज़ ने उसे अचानक देखा, तो उसने ताली बजाई और उसे ऊपर बुलाया।
‘‘ताजू ऽऽ, मेरा एक काम करेगा?’’
‘‘बोलो!’’
‘‘बापूसाब को जानता है ना?’’
"बापूसाब, होटल व्यवसायी?"
‘‘हां ऽ ऽ हां! वोही!’’
‘‘क्या उनको बुलाके लाने का?’’
‘‘नहीं रे, खाली उनसे...!’’
मुमताज़ सोच रही थी कि ताजू से क्या कहे। उसने थोड़ी देर सोचा और फिर बोली, "ताजू, मुझे पैसों की ज़रूरत है!"
‘‘हां ऽ ऽ ऽ अभी समझ मे आया. जाता हूँ- जाता हूँ!’’ मुमताजला आणखी काहीतरी सांगायचं होतं, तोवर ताजू लंगडत निघून गेलादेखील! घोड़े के प्रिंट वाली रेशमी कपड़े की घुटनों तक लंबी नेहरू शर्ट, सफेद धोती और काले मोटे जूते पहने बापूसाहेब अभी-अभी अपने राजमार्ग किनारे स्थित ढाबे पर पहुँचे थे। उन्हें देखकर ताजुद्दीन ने कहा, "सलाम बापूसाहेब!"

"रामराम! क्या हाल है, क्या हाल है?"
‘‘काम है! लेकीन मेरा नहीं है!’’
"तो फिर आप किसके द्वारा नियुक्त किए गए पावर ऑफ अटॉर्नी को लेकर आए थे?"
‘‘वकी ऽ ऽ ल? कैका साब?’’
"अच्छी तरह से बोलो! यह किसका काम था? किस प्रकार का?"
‘‘आपको मुमताज मालूम है?’’
"मुमताज़? उस कलाकार अमीना की बेटी?"
‘‘हां ऽ ऽ वोही मुमताज! अभी वो बहोत तकलीफ में है बापूसाब!’’ "क्या हुआ? क्या आज आपका दिन खराब है या कुछ और?"
‘‘वो बीमार नही. उसके माँ-बाप बीमार रहते हैं हम्मेशा के लिये!’’ "तो ठीक है?"
‘‘उसको थोडी मदद की जरूरत थी!’’
बापूसाहेब मन ही मन हँसे। अपने बालों में हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, "अरे, दुनिया में अनगिनत लोग हैं जिन्हें पैसों की सख्त जरूरत है। मैं अकेला किसी की जरूरत कैसे पूरी कर सकता हूँ?"
‘‘नहीं, नहीं... वैसा नहीं साब! वो कभी माँगनेवाली औरत नही. परेशान होकर पडी है इसलिये मैं आपके पास आया हूँ!’’
"ठीक है, ये दो सौ रुपये ले लो। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उसे ये दे दूंगा क्योंकि वो एक महान कलाकार है; लेकिन इसे वापस मत मांगना।"
बापूसाहेब ने ताजू के हाथ में दो सौ रुपये का नोट रख दिया। ताजू ने फिर से सलाम किया और चला गया।
मुमताज दरवाजे पर खड़ी उसका इंतजार कर रही थी। "क्या बात है, ताजू?" उसने बेसब्री से पूछा।

‘‘जब मैं जाता हूँ तो काम फत्ते करके आता हूँ मुमताजबी. लो. दो सौ हैं.’’
‘‘क्या बोले साब?’’
‘‘साब बोले, और कभी जरूरत लगी तो जरूर आना! हूँ ऽऽ!’’
ताजू ज़ोरदार धमाके के साथ चला गया। मुमताज़ ने एक महीने तक पैसे छुपाए रखे और फिर ज़रूरत पड़ गई। ताजू की बातों पर विश्वास करके मुमताज़ ने बापूसाहेब को फिर से संदेश भेजा; लेकिन इस बार पैसे लेने के बजाय बापूसाहेब स्वयं आ गए।
मुमताज को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि बापूसाहेब स्वयं आएंगे। उनके आने पर उन्होंने मुखिया के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की।
मुमताज के पिता, नायकवादी, तकिये पर सिर झुकाए, घुटने मोड़कर प्रार्थना कर रहे थे। उनकी माँ पूरी तरह अंधी थीं! उन्हें यह भी नहीं दिख रहा था कि कौन आया है। लेकिन बापूसाहेब उनके सामने खड़े होकर बोले, "यह क्या है, अमीनाबी, तुम तो बहुत थकी हुई हो!" ‘‘क्या करना बाबा, आँखो से दिखता नही. मौतबी आती नहीं!’’
"मौत थोड़ी देर से आती है, है ना? लेकिन जब आती है, तो कभी चूकती नहीं! मुमताज कहाँ है?"
‘‘है उप्पर! तुम इतने बडे होकर भी गाने-बजाने का शौक करते नहीं? हम लोगों ने वैâ से जीना अब?’’
बापूसाहेब हँसे और बोले, "अमीना, इस व्यापार और राजनीति के झंझट में तुम्हें संगीत सुनने का समय कब मिलेगा?"
‘‘बहुत नाम कमाया बेटा, आँखो से दिखता नहीं; लेकीन बार बार सुनती तो हूँ!’’
"चलो चलें! सिर्फ पेट भरने के लिए जीने का क्या फायदा?"

"मुमताज़! ओह मुमताज़!" अमीना ने पुकारा; लेकिन मुमताज़ नीचे नहीं आईं। बापूसाहेब सीधे ऊपर चले गए। सफेद साड़ी और मैचिंग ब्लाउज पहने मुमताज़ उन्हें देखकर खड़ी हो गईं। कई सालों बाद उन्होंने मुमताज़ को देखा था। उनकी उम्र अब तीस पार हो चुकी थी; लेकिन उनका चेहरा और शरीर अब भी इतने युवा थे कि कोई भी उन्हें बीस या पच्चीस साल का समझ लेता। मुमताज़ ने अपने घुटनों तक पहुँचने वाली लंबी चोटियों को हिलाते हुए कहा, "ये तो बहुत शर्मीली लग रही हैं!"
"कैसे?"
‘‘बार बार पैसे माँगने की!’’
"लेकिन ताजू के एक बार मना करने के बाद भी तुमने पैसे क्यों मांगे?"
‘‘क्या कहा था आपने ताजू को?’’
"क्या उसने तुम्हें नहीं बताया?"
‘‘हां ऽ ऽ कहा था... लेकिन...!’’
"देखो, मुमताज, अगर तुम्हारी शादी हो गई होती, तो तुम सुखी जीवन जीती!"
‘‘और ये माँ-बाप को छोडकर कहाँ जाऊँ ऽ?’’
"यह भी सच है! क्या तुम अब भी गा रहे हो?"
‘‘अभी छे महिने से बंद कर दिया!’’
‘‘का?’’
मुमताज़ ने कुछ और नहीं कहा; लेकिन उसकी आँखों में आँसू भर आए। बापूसाहेब ने सोचा कि महिलाओं की यही आदत होती है - जब उन्हें दिखावा करना होता है, तो वे पहले अपनी आँखों में आँसू ले आती हैं! राजनीति में आने के बाद बापूसाहेब का कोमल हृदय भी कठोर हो

गया था। वे किसी की भी गलतियों को आसानी से माफ नहीं करते थे। अब, मुमताज़ की आँखों में आँसू देखते ही वे भी वैसे ही हो गए। "देखो मुमताज़, मैं तुम्हारे लिए एक ऐसा पति ढूंढ रही हूँ जो तुम्हें स्वीकार करे, चाहे ये बूढ़ा आदमी हो या बूढ़ी औरत। इस होटल की वजह से मेरी यहाँ कई जान-पहचान हो गई है। जब मैं रात के खाने पर आती हूँ, तो वे बेझिझक पूछते हैं कि क्या खाने के लिए जगह है। मेरी कई अमीर लोगों से जान-पहचान हो गई है। अगर तुम मान जाओ, तो मैं तुम्हारी ही जाति का एक 'सलाहकार' ढूंढ दूँगी, बोलो!" लेकिन मुमताज़ चुपचाप खड़ी रही। यह समझते हुए कि वह इस सुझाव से सहमत नहीं है, बापूसाहेब अपनी कुर्सी से उठे और बोले, "यह तुम्हारी मर्ज़ी है। लेकिन समय-समय पर किसी से मदद माँगते हुए जीवन जीने का कोई मतलब नहीं है!"
बापूसाहेब चले गए हैं।
उसके बाद, एक-दो घंटे बीत चुके होंगे, ताजुद्दीन रो रहा था। ‘‘बापूब, चलो, जल्दी करो। मुमताज ने टिक-ट्वेंटी की बोतल खत्म कर दी है। अब वो एक घंटे भी नहीं जी पाएगी!’’
जब बापूसाहेब दौड़ते हुए आए, तो मुमताज़ के चारों ओर दस-बारह औरतें जमा थीं। मुमताज़ की आँखें पीली पड़ गई थीं। बूढ़ी अमीना शव को कसकर पकड़े हुए ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। बूढ़ा नायकवाड़ी तो और भी ज़्यादा डरा हुआ था, उसे डर था कि आगे उसे क्या झेलना पड़ेगा।
बापूसाहेब तुरंत उसे तालुका अस्पताल ले गए। वहाँ डॉक्टर ने उसकी नाक और मुँह में रबर की नलियाँ डालीं और पेट की सफाई की, ग्लूकोज दिया और ऑक्सीजन प्रदान की। आधी रात के बाद मुमताज को होश आया। फिर उसे कोयले की गोलियाँ दी गईं। बापूसाहेब और ताजू पूरी रात उसके बिस्तर के पास बैठे रहे।

भोर के समय, जब डॉक्टरों ने घोषणा की कि वह खतरे से बाहर है, तो बापूसाहेब ने राहत की सांस ली; लेकिन उन्हें अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि उसने आत्महत्या का प्रयास क्यों किया।
सुबह वे ताजू को अस्पताल परिसर से बाहर ले गए और उससे पूछा, "ताजू, उस मुस्लिम की तरह बात करना बंद करो और मुझे बताओ कि उसने ऐसा क्यों किया?"
"मैं आपको अभी कैसे बताऊं, महोदय?"
‘‘का?’’
"तुम सोपानबुआ को जानते थे, है ना?"
“सोपानबुआ?”
‘‘जी हां, सोपानबुवा जाधव। वो उसे गाना सिखाने वाले हैं!’’
"हां, छह महीने पहले मोटरसाइकिल दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी, है ना?"
"हाँ, देखो! सोपानबुआ और मुमताज़ ही एक साथ आए थे!"
"आप क्या कह रहे हैं?"
‘‘माँ कसम! सच कहता हूँ!’’
"अरे, मुझे साफ-साफ बताओ! यह सच था, है ना? फिर मुझे इसके बारे में पता क्यों नहीं चला?"
"क्या आपके पास इस जगह पर आपकी जमीन, उस पर मौजूद कुएं, राजनीति और 'हाईवे होटल' के कारोबार से जुड़ी बातों को सुनने का समय है?" "यह सच है। पिछले दो-तीन सालों में किसी के भी खिलाफ किसी भी तरह के गलत काम के लिए जांच नहीं हुई है। अच्छा, अगर सोपान जाधव और वह एक साथ आ जाएं तो क्या होगा?"
"हाँ! लेकिन सोपान कहा करता था कि तुम्हें अपना धर्म बदल लेना चाहिए।" वह कहती, "मैं तैयार हूँ; लेकिन मेरे माता-पिता पुराने विचारों वाले हैं। जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि मैंने अपना

धर्म बदल लिया है, वे बुढ़ापे से मर जाएँगे। मेरे माता-पिता की यह कितनी बड़ी कमजोरी है! वह बूढ़ा आदमी अस्थमा से बहुत कमजोर है; लेकिन वह जल्दी नहीं मरता। बुढ़िया की आँखें कमजोर हो गई हैं; लेकिन जब घंटी बजती है, तो उसके कान बजने लगते हैं। उस बेचारी औरत पर कितना तरस आता है!"
"अरे, लेकिन वह इतने लंबे समय से गा रही है और बैठकें कर रही है, और यह सब जानते हुए भी, वह सोपान की गड़बड़ी में कैसे फंस गई?" "ऐसा कैसे? साहब, वह तो हर दिन तीन घंटे अभ्यास करती थी। हम दोनों ऊपर ही होते थे। तैयार होने में समय लगता है, है ना?" "अरे, लेकिन मुझे लगता है कि वह सौतेला पिता शादीशुदा है और उसके बच्चे भी हैं। तो इसमें बड़ी बात क्या है?"
"उसकी गर्दन पर! महोदय, मुझे नहीं पता आपने उसका गाना सुना है या नहीं; लेकिन जब मैंने उसका गाना सुनना शुरू किया, तो मेरी भूख-प्यास गायब हो गई। रेडियो पर वह भजन देखिए, ''इंद्रायणी काठी...'' उसे कौन गाता है?"
"अरे, वो भीमसेन जोशी!"
"हाँ, बिल्कुल यही धुन है! अबाबील मर गया! बेचारा सोपान मर गया!" "लेकिन क्या, उसकी मौत इस तरह कैसे हुई?"
जब उसने कहा कि वह अपना धर्म बदलने के लिए तैयार नहीं है, तो उसने उसके पास आना बंद कर दिया। उसने शराब पीना भी सीख लिया; और कोयने पुल पर उसकी मुलाकात बैंगलोर जा रहे एक मोटरसाइकिल सवार से हुई। उसका सिर फट गया था!
"लेकिन क्या, आपको लगता है कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों के इस बैठक में आने के बावजूद यह पूरी तरह से 'खाली' रहा होगा?"
मैं अभी आपको कैसे बताऊँ? अगर कुछ हुआ भी तो क्या वे मेरे सामने करेंगे? मुझे खाना-पीना मिल गया है। एक बार मैं बाहर चला गया तो

सब खत्म। मैं क्यों जोखिम उठाऊँ? मेरा एक पैर पहले से ही लंगड़ा है!
"अगर हां, तो कितना?"
जब बापूसाहेब गहरी सोच में डूबे हुए थे, तभी पेठ का मुखिया कांस्टेबल आगे से आया। बापूसाहेब को सलाम करते हुए उसने पूछा, "आप जीवित हैं या मर चुके हैं?"
‘‘का हो?’’
"क्यों नहीं? अगर वह मर चुकी है, तो हम बच जाएंगे, लेकिन अगर वह जीवित है, तो हमें मुकदमा दायर करना पड़ेगा!"
"केस? और यह किसलिए है?"
"बापूसाहेब, जिस प्रकार मनुष्य किसी दूसरे का जीवन नहीं ले सकता, उसी प्रकार वह अपना जीवन भी नहीं दे सकता!"
"आपका क्या मतलब है?"
"अरे, आत्महत्या का प्रयास करना दंड संहिता में अपराध माना जाता है! आत्महत्या का प्रयास करना अपराध है; लेकिन अगर प्रयास सफल हो जाता है, तो यह अपराध नहीं है!"
‘‘ते का?’’
"अगर यह प्रयास सफल हो जाता है, तो आप किसके खिलाफ मुकदमा दायर करेंगे? क्या वह व्यक्ति पहले से ही मर नहीं चुका है?"
"ओह! अगर ऐसा है तो! लेकिन कांस्टेबल साहब, क्या अब इससे निकलने का कोई रास्ता है?"
तब कांस्टेबल ने दिल खोलकर मुस्कुराते हुए कहा,
"बापूसाहेब, क्या कभी ऐसा समय आएगा जब कोई रास्ता ही न बचे?" "लेकिन कौन सा?"

फिर कांस्टेबल ने बापूसाहेब को रास्ता बताया और बापूसाहेब ने कहा, "लेकिन मेरे पास अभी उतने नहीं हैं। मैं पेठ पहुँचने पर आपको दे दूँगा-"
"यह काम करेगा! हमें आप पर पूरा भरोसा है। लेकिन जवाब में, मुमताज को बता देना कि तुम क्या कहना चाहते हो-"
"क्या यह सही नहीं है? घर में दवा की बोतल के बगल में खांसी की दवा की एक बोतल रखी थी और गलती से दवा की जगह उसे उठा लिया गया?" “जी हां, बिल्कुल! फिर भी! तो मैं इसी जवाब के साथ आगे बढ़ूंगा।” "देखो, डॉक्टर से पूछो। अब उसे थोड़ा बेहतर लग रहा है। अगर तुम इसे लंबे समय तक करते रहोगे, तो उसे और भी ज्यादा तकलीफ होगी!" "ठीक है! ठीक है! कोई बात नहीं। मैं कल तक यहीं रहने के लिए तैयार हूँ!"
0-0-0

आठ

बापूसाहेब और मुमताज की बात गांव या ढालगांव में जल्द ही समझ में आ गई। बस लक्ष्मीबाई को थोड़ी देर से पता चला! हालांकि कई लोगों को इसके बारे में पता था, लेकिन लक्ष्मीबाई तक पहुंचने में समय लगा; इसका कारण यह था कि लक्ष्मीबाई आमतौर पर गांव की अन्य महिलाओं से मेलजोल नहीं रखती थीं, और अगर संयोग से उनसे मिलने वाली महिलाओं को पता भी होता, तो वे उन्हें बताना नहीं चाहतीं, क्योंकि इससे दोनों के बीच अनावश्यक दूरी पैदा हो जाती।
लेकिन पत्नियां बेहद चालाक होती हैं! जब बापूसाहेब देर से घर आते थे, तो लक्ष्मीबाई ने पहले कुछ दिनों तक इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन फिर, जब उन्होंने देखा कि वे कुछ दिनों से बाहर रह रहे हैं, तो लक्ष्मीबाई ने उनकी गतिविधियों पर संदेह भरी नजरों से देखना शुरू कर दिया।
जब बापूसाहेब ने होटल में अत्यधिक भीड़भाड़ की शिकायत करना शुरू किया, तो लक्ष्मीबाई ने कहा, "हम परिसर में ही एक घर क्यों नहीं खरीद लेते?"
"और ऐसा क्यों?"
"इसे आने-जाने में समय लगता है, क्या इसे पढ़ना सार्थक नहीं है?" मुझे बताओ यह कितनी दूर है!
"ज्यादा समय नहीं लगेगा; लेकिन कम से कम मैं समझ सकता हूँ कि आपके पास ऐसा कौन सा महत्वपूर्ण काम है जो आपको वहाँ रहने के लिए मजबूर करता है!"
"क्या कहा आपने?"

"तुम समझ गए ना मेरा मतलब। पागल मत हो जाओ, चलो इसे छुपाने की कोशिश करते हैं!"
"लक्ष्मी, हमारे परिवार की महिलाओं का इतना ज्यादा बोलना ठीक नहीं है!"
"जी हाँ! मुझे अच्छी तरह पता है। लेकिन हमारे परिवार में यह परंपरा है कि जब समय आता है तो चुपचाप बैठे रहना अच्छा नहीं होता!"
"यह आपके परिवार में हो सकता है; लेकिन याद रखें कि अब आपका अपने परिवार से कोई संबंध नहीं है!"
लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम अचानक अकेले मेरे पास क्यों आए हो!
"मैं समझ गई, मैं समझ गई! अगर आपको अपने इनामदार परिवार पर इतना गर्व था, तो आपने मुझसे शादी करने के लिए क्यों सहमति दी?"
"अगर आप झगड़ा शुरू करना चाहते हैं, तो कर लीजिए; लेकिन मेरे परिवार का जिक्र करने का कोई कारण नहीं है!"
"लक्ष्मी, बस करो! ज्यादा मत बोलो। मैं तुम्हारी योग्यताओं को समझ गया हूँ!"
"और मुझे भी गलतफहमी हुई थी!"
"आपने क्या पाया?"
मैंने वह सब सीख लिया जो मुझे सीखना था। बस थोड़ा देर से सीखा! "ठीक है। तो मुझसे बहस करना बंद करो। और अगर लड़ाई हुई तो मैं चार-दो दिन में आ जाऊँगा, आठ-आठ दिन में नहीं!"
"मत आओ। क्या तुम किसी सुंदर अप्सरा से मिले हो? तुम ऐसी जगह जा रहे हो जहाँ पूरी दुनिया थूक रही है। तुम्हें शर्म आनी चाहिए।" वो चाहे जितनी भी बातें करे, वो वेश्या ही है!

"लक्ष्मी..." बापूसाहेब चिल्लाए और अचानक आगे बढ़कर एक शरारती मुस्कान के साथ लक्ष्मीबाई के गाल पर थप्पड़ मार दिया। लक्ष्मीबाई की आँखें चमक उठीं। उनका पूरा शरीर क्रोध से काँप उठा। उन्होंने अपने गाल पर हाथ रखकर कहा, "मैं यहाँ नहीं रहना चाहती!"
"ठीक है। आप जहां चाहें जा सकते हैं!"
मुझे कहीं जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे पति मेरी मृत्यु तक मेरा ख्याल रखने में सक्षम हैं!
"जाओ! अभी के लिए अपना चेहरा काला कर लो। लेकिन याद रखना, अगर तुमने यहाँ से एक बार भी मेरे खिलाफ जाने की कोशिश की, तो तुम मेरा चेहरा फिर कभी नहीं देख पाओगे।"
मैं तुम्हारा चेहरा क्यों देखना चाहता हूँ?
‘‘क्या हम नहीं? ठीक है! पिर्या... हाँ पिर्या...’’
‘‘जी...!’’
"टंगा जंप और बैसाहेब को रेस्टोरेंट पर छोड़ दो!"
जब लक्ष्मीबाई बच्चे को गोद में उठाने गईं, तो बापूसाहेब आगे आए और बोले,
आप उसे कहाँ ले जा रहे हैं?
"यह बच्चा मेरा है!"
"ये तो मेरा भी है!"
लेकिन उसका अपनी उस माँ से कोई रिश्ता नहीं है जो घर छोड़कर चली जाती है!
"घर छोड़कर जाने वाले पिता के साथ भी नहीं। दूर चले जाओ; वरना मैं तुम्हारे सामने यहीं अपना सिर पटक कर मर जाऊंगी!"

आज लक्ष्मी सचमुच कड़क लक्ष्मी के रूप में प्रकट हुई थीं। तब बापूसाहेब ने थोड़ा झुककर प्रणाम किया। वरना सवाल उठता कि उनके जाने के बाद बच्चे की देखभाल कौन करेगा!
इनामदार लक्ष्मी वैनी को इतनी जल्दी अपनी मां के घर आते देखकर थोड़ा आश्चर्यचकित हुआ। उस रात, उसे इनामदारिनबाई से पूरी सच्चाई पता चली। फिर उसने कहा,
"अगर ऐसा है तो यह तो पक्का समझौता है! लेकिन लक्ष्मी के पास इतनी परेशानी खड़ी करने का कोई कारण नहीं था!"
"जब कोई पति बदतमीज महिला के प्यार में पड़ जाता है तो पत्नियों को क्यों हंसना चाहिए?"
आपको हंसने की जरूरत नहीं है; आपको बस शांत बैठना है!
"ख़ूब कहा है!"
वरना और क्या! बाप साहब तो कर्मठ व्यक्ति हैं। व्यापार में खूब पैसा कमाते हैं। गाँव में उनकी बात अनसुनी नहीं की जाती। सारे काम-काज उन्हीं की सलाह से चलते हैं। और अगर ऐसा आदमी शौक के तौर पर ऐसा कुछ करता है, तो इस पर इतना हंगामा करने की क्या ज़रूरत है। तुम भोली-भाली औरतें ये बात समझती ही नहीं हो!
"आप कहते हैं कि आप इसे स्वीकार करते हैं, तो क्या यही उनका व्यवहार है?"
"बिल्कुल! मुझे यह पसंद नहीं आता जब कोई किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निजी जीवन में दखल देता है!"
"तो ऐसा करो, उन्हें एक-दो और बाज़ारों तक पहुँचने दो। अरे, लड़की की खुशी का थोड़ा आनंद तो लो!"
"खुशी! उसे किस बात की कमी थी? क्या उसे कम खाना मिलता था, कम पीना? क्या उसे कभी कपड़ों या गहनों की कमी हुई? अगर आप उसे बच्चा कहना चाहें, तो वह तो पहले ही हो चुका है। तो फिर हमें उन

महिलाओं से ईर्ष्या क्यों करनी चाहिए जो सोचती हैं कि उन्हें अपने पतियों द्वारा बांधे गए पट्टे पर घोड़ों की तरह चलना चाहिए?"
"तुम समझते नहीं हो! केवल औरतें ही औरतों का दर्द समझ सकती हैं! तो, भले ही उन्हें खाना-पीना, कपड़े और गहने मिलें, क्या औरतों को अपने पतियों को किसी भी तरह का अनुचित व्यवहार करने की अनुमति देनी चाहिए?"
"देखो, अतीत का इतिहास है। मुझे बेवजह सिखाने की कोशिश मत करो। मेरी राय में, बापूसाहेब ने एक भी बात नहीं छोड़ी है। उन्हें अपनी राय व्यक्त करने दो। उस बच्चे को बेवजह प्रोत्साहित मत करो और उसे उकसाओ मत। उसे समझ की चार बातें बताकर विदा कर दो।" "क्या आप कह रहे हैं कि आप इसे अभी भेजेंगे?"
"मैं ऐसा नहीं कह रहा! उसे चार से आठ दिन तक रहने दो, जैसे वह आई है। फिर धीरे-धीरे उसे विदा कर दो। लेकिन समझदारी से काम लो। अगर तुम्हें ऐसा पति चाहिए, तो तुम्हें थोड़ा और समझदार होना चाहिए! अगर तुम स्कूल टीचर या क्लर्क होतीं, तो ऐसे जाल में क्यों फंसतीं?"
"तुमने मुझसे बहुत बात कर ली है। कृपया, ऐसी बकवास मत करो, कम से कम लक्ष्मी के सामने तो बिल्कुल नहीं! यह शर्मनाक है!" इनामदारिनबाई ने वहां से धमाकेदार विदाई ली। जाते समय उन्होंने कहा, “असली काम तो एक दिन तुम्हारे पास आएगा। मुझे चार पैसे मिले। मुझे इतनी ताकत मिली कि अब किसी को अपने सिर की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, कमर की तो बात ही छोड़ो!”
ये शब्द सुनकर इनामदार साहब जोर से हंस पड़े।
लक्ष्मी को रेस्टोरेंट आए चार महीने हो गए हैं। इस दौरान बापूसाहेब एक बार भी वहां नहीं आए। साथ ही, इनामदार साहब अपनी

बेटी को समझाते थे, "यह पुरुष का रिवाज है। हमें उसे बेवजह बंधन में नहीं रखना चाहिए। कुछ समय बाद उसे समझ आ जाएगा कि हम उसके साथ क्या गलत कर रहे हैं। अगर हम गुस्सा करेंगे तो हम खुद ही मुसीबत मोल लेंगे।"
हालांकि लक्ष्मीबाई इनामदार की सलाह से सहमत नहीं थीं, फिर भी उन्हें यह महसूस होने लगा कि उस लड़ाई के दौरान उन्होंने अपने मायके में जन्म लेने के बारे में सोचा था; लेकिन यह असंभव था। इसके विपरीत, अगर हम हठपूर्वक यहीं रहे, तो वे और भी अनियंत्रित व्यवहार करने लगेंगे। अगर हम अपने बच्चे को अपनी आँखों के सामने देखते रहे, तो किसी न किसी दिन उन्हें यह एहसास हो जाएगा कि हम जो कर रहे हैं वह सही नहीं है!
ऐसा सोचते हुए लक्ष्मीबाई ने अपना सामान पैक किया। हार तो हुई, लेकिन कर्तव्य की भावना से ही उन्होंने इसे स्वीकार किया। इनामदार स्वयं इसे देने गए। सौभाग्य से बापूसाहेब ढलगाँव में थे।
लक्ष्मीबाई को बच्चे के साथ लौटते देख उन्हें थोड़ी हैरानी हुई। चार महीने बीत जाने के बाद वे भी उस घटना को भूल चुके थे।
आते ही उन्होंने बच्चे को उनकी गोद से उठा लिया। इनामदार साहब को इसकी उम्मीद थी। वे मुस्कुरा उठे।
दो दिन रुकने के बाद वे रेस्तरां लौट आए। इन दो दिनों के दौरान, बापूसाहेब प्रतिदिन ग्यारह बजे तक लौट आते थे।
जिस रात लक्ष्मीबाई आई थीं, उस रात की घटना-
खाना खाने के बाद दोनों बेडरूम में चले गए। बच्चा लगभग एक साल का हो चुका था; लेकिन वह अभी भी पालने में था। लक्ष्मीबाई ने पालने पर मच्छरदानी ठीक की और दीवार से पीठ टिकाकर चारपाई पर सीधी लेट गईं।

बापूसाहेब के पलंग के पास पहुंचने के बाद भी काफी देर तक किसी ने कुछ नहीं कहा।
‘‘लक्ष्मी...!’’
‘‘...!’’
‘‘लक्ष्मी?’’
‘‘अं...?’’
"क्या गुस्सा अभी तक शांत नहीं हुआ?"
‘‘...!’’
"क्या तुम बात नहीं करोगी?" बापूसाहेब थोड़ा और आगे बढ़े और धीरे-धीरे अपना हाथ उसकी पीठ पर फेरने लगे।
लेकिन लक्ष्मीबाई दीवार के थोड़ा और करीब चली गईं।
"लक्ष्मी, ओह, मैंने उस दिन गुस्से में बोल दिया था। अब मेरे दिमाग में कोई विचार नहीं बचा है!"
"और मुझमें ऐसा क्या है? लेकिन आप तो बहुत दुष्ट हैं?" लक्ष्मीबाई ने पीठ फेरते हुए और बापूसाहेब की छड़ी को चुटकी से पकड़ते हुए कहा।
"अरे! अरे! अरे, लेकिन तुम मुझे यह क्यों नहीं बताती कि मैंने क्या बुरा काम किया है?" बापूसाहेब ने लक्ष्मी को चुटकी काटते हुए हाथ को मरोड़ते हुए कहा।
"मुझे गए हुए चार महीने हो गए हैं। कम से कम मैं तो नहीं गई थी, लेकिन बच्चे को देखने के लिए गई थी!"
"आपको विश्वास नहीं होगा। मैंने सोचा कि मुझे आना चाहिए; लेकिन मैंने सोचा, मामासाहेब क्या कहेंगे? उन्होंने परिवार के अन्य लोगों की बात सुने बिना आपको बेटी क्यों दे दी?"
"अरे, अगर तुम उन्हें अभी अपनी राय बता दोगी तो वे भड़क उठेंगे!" लक्ष्मीबाई ने बापूसाहेब की गोद में सिर टिकाते हुए कहा।

अपने बालों में हाथ फेरते हुए बापूसाहेब ने पूछा, "उसने क्या कहा?"
"वे सब कुछ नहीं कहते; लेकिन वे आपसे ज़रा भी नाराज़ नहीं हैं!" "क्या तुम सच कह रही हो?" बापूसाहेब ने लक्ष्मीबाई के गाल चूमते हुए कहा।
"सच में! मैंने गलत व्यवहार किया। मैंने वो कह दिया जो मुझे नहीं कहना चाहिए था!"
"'यह तुमने नहीं कहा, मैंने कहा है। लक्ष्मी, तुम मेरी पत्नी हो, मेरे बच्चे की माँ हो। यह जानते हुए, मैंने वही किया जो मुझे करना था। मैं अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह समझता था। मुझे शुरू से ही पराया होना पसंद नहीं था। लेकिन जानबूझकर या अनजाने में, यह सच है कि मेरा उसके साथ रिश्ता कामयाब रहा। लेकिन इससे तुम्हारे लिए मेरा प्यार ज़रा भी कम नहीं हुआ है। मुझ पर भरोसा रखो-''
अब बापूसाहेब ने तकिये के पास रखा दीपक बुझा दिया। लक्ष्मी को पता भी नहीं चला कि चार महीने के लंबे वियोग के बाद वह रात कैसे गुज़री।
इस प्रकार का सुलह समझौता हुआ।
दो दिन बाद इनामदार रेस्तरां लौट आया। उसके व्यवहार से स्पष्ट था कि बापूसाहेब ने अब से लक्ष्मीबाई के साथ समझदारी से पेश आने का फैसला कर लिया था। उसे घर के बने खाने की कमी महसूस नहीं होती थी। वह बारह बजे तक घर लौट आता था; लेकिन सप्ताह में एक दिन - यानी शुक्रवार को - वह कुछ समय के लिए शहर से बाहर चला जाता था। फिर, लक्ष्मी के पूछने से पहले ही, उसने कहा,
"देखो, परसों मेरी मुलाकात एक डॉक्टर से हुई थी-"
"तो ठीक है?"

"अनौपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा, 'आपकी छुट्टी किस दिन है?'"
"इसलिए?"
"तो क्या हुआ? मैंने कहा था कि मैं कोई छुट्टी नहीं ले रहा हूँ। डॉक्टर ने कहा कि अगर आप स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो आपको सप्ताह में एक दिन पूरी तरह से आराम करना चाहिए। इंग्लैंड और अमेरिका में एक प्रणाली है, और इसीलिए वहाँ के लोग सप्ताह में दोगुनी तेज़ी से काम करते हैं!"
तो आपने भी छुट्टी लेने का फैसला कर लिया है?
‘‘हो!’’
"महोदय, क्या आपको लगता है कि मैं सिर्फ इसलिए इस गांव में रुका रहा क्योंकि मेरा जन्म आपके गांव में हुआ था?"
"आपका क्या मतलब है?"
"मुझे पता है कि तुम हर शुक्रवार कहाँ जाते हो और क्या करते हो। मैंने तय कर लिया है कि अब मैं इस मामले पर ध्यान नहीं दूंगी, इसलिए मैंने कोई हंगामा नहीं किया। तुम हर शुक्रवार करहाद जाते थे। तुम मुमताज को उसकी माँ के साथ वहाँ ले गए थे। तुमने उसके लिए एक घर खरीदा था। वह उस घर में रह रही है और 150 रुपये किराया देती है, जिससे वह अपने खर्चे चलाती है। मेरी चार महीने की अनुपस्थिति में तुमने ये सारी व्यवस्थाएँ बिना किसी झंझट के कर दीं। तो छुट्टी लेने, डॉक्टर के आदेश आदि की ये बकवास बंद करो। समझे?"
बापूसाहेब ने उन्हें आश्चर्य से देखा।
बापूसाहेब की राजनीति में अब कोई राजनीति नहीं बची थी। बापूसाहेब खुद भी इस तरह की राजनीति में आनंद महसूस करने लगे थे। गाँव तेजी से तरक्की कर रहा था। बापूसाहेब उसे "झंझट करने

वाला" कहा करते थे। अब लोग बापूसाहेब की आलोचना करना भी नहीं चाहते थे। कुछ लोग उन्हें दयालु मानते थे, तो कुछ उन्हें फरिश्ते के समान। गाँव का मामला अब अदालतों में नहीं जाता था। पहले, अगर कोई किसी दूसरे की ज़मीन पर कब्ज़ा कर लेता था, तो झगड़े होते थे। अगर कोई गलती से हल चलाते समय सीमा का पत्थर हटा देता था, तो सिर फूट जाते थे। अगर किसी पर चार पैसे का कर्ज़ होता और वह उसे माँगता, तो मामला तुरंत गरमागरम बहस में बदल जाता था। लेकिन जब से बापूसाहेब सरपंच बने हैं, ऐसे मामले पंचायत स्तर पर सुलझने लगे हैं।
शाम होने ही वाली थी। छह बज चुके थे। बापूसाहेब को गांव के होटल तक पहुंचने में अभी एक घंटा बाकी था। इसी बीच, भीम नगर से रंगा लिंगाडे और सात-आठ नव-बौद्ध पंचायत कार्यालय के सामने पहुंचे। वे किसी तरह की शिकायत लेकर आए थे।
"बापूसाहेब!" रंगा लिंगाडे ने बाहर से कहा, "दो मिनट, भाई?"
"तुम बाहर क्यों हो? अंदर आओ! यह ग्राम पंचायत है। यहाँ कोई भी आ सकता है। बताओ, रंगा, भंगड़ क्या है?"
"भंगड़ हमारा निजी मामला है। ये कृष्ण कांबले हैं!"
मुझे पूरा यकीन है। उनका बेटा ट्रेनिंग के लिए जाता है। वह कुश्ती अच्छी तरह खेलता है।
"देखो, उसने कुश्ती करना छोड़ दिया है। बूढ़ा आदमी और उसकी माँ घर में अकेले हैं। वह दो एकड़ 'महाराकी' ज़मीन से जैसे-तैसे गुज़ारा करता था; लेकिन वह झील में डूब गई। उसे जो मुआवज़ा मिला, वह एक साल भी नहीं चला। चूंकि लड़का कुश्ती करता था, इसलिए मेरे जैसे चार लोग उसे महीने में दस-पाँच रुपये खाने के लिए देते थे। लेकिन अब सब इस महंगाई से तंग आ चुके हैं। कृष्ण के इस बेटे - सोम

- ने भी कुश्ती छोड़ दी है। वह तभी कुश्ती करता है जब उसे कोई काम मिल जाता है। अब मेरी बेटी यशोदा - तुमने देखा ही है।"
"जी हां, मैंने उसे देखा है। लेकिन आपने उससे अभी तक शादी नहीं की है?"
"एक मिनट रुकिए! यह सारा झंझट उस शादी के बाद से ही चल रहा है।" रंगराव शहरी परिवेश के कारण बापूसाहेब से इतनी स्पष्ट भाषा में बात कर रहे थे। उनके साथ आए नव-बौद्ध उन दोनों को बस देखते ही रह गए।
"तो फिर आपको क्या लगता है कि शादी के बाद क्या हुआ होगा?" मैंने अपनी यशोदा को कृष्ण के सोम को देने का फैसला किया। लड़की को लड़के पसंद हैं, लड़के को लड़कियाँ। हमारी बेटी ने सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। उसने सातवीं कक्षा में ही स्कूल छोड़ दिया था। लेकिन उसने कहा, क्यों नहीं! मुझे एक-दूसरे से थोड़ी जलन हुई। पहले तो मुझे थोड़ा बुरा लगा; क्योंकि मैं लड़की को अच्छी तरह पढ़ाना चाहती थी - उसे गुरु और शिक्षक का हुनर सिखाना चाहती थी। नाचते समय उसका रूप ऐसा है कि कोई भी उसकी नकल कर सकता है! लेकिन मैं क्या करूँ? देखते ही देखते मेरा मन एक हो गया! "तो फिर अब समस्या क्या है?"
"बताइए - क्या आप सुदाम को जानते थे?"
"सुदाम? सुदाम? जी हाँ, वही गायक, नर्तक और लोक अभिनेता हैं!" "हाँ, देखो तो ज़रा! भीम नगर में एक नया दो मंज़िला मकान बन गया है। चार एकड़ ज़मीन खरीदी गई है। चार पैसे खर्च हो रहे हैं। वो कहता है कि यशोदा की शादी किसी और से नहीं होने देगा। अगर हुई भी तो मुझसे ही!"
‘‘ते का?’’

"पैसा तो मौज-मस्ती है! मेरी बेटी उसे सिर्फ इसलिए क्यों पसंद करे क्योंकि वह हिजरी नृत्य करता है?"
"अगर ऐसा है तो!"
"इतना ही नहीं, वह उसे हवेली से अगवा करने की धमकी भी दे रहा है!" "अरे बाप रे! क्या तुम इतनी दूर आ गए हो?"
"देखिए, बाप साहब, इसने क्या-क्या जमा कर रखा है। लोगों ने म्हासोबा की खिंदी से रानबा रामोशी को भी एक-दो बार इसके घर में देखा है। आप इस पर ध्यान दीजिए; वरना मैं पुलिस स्टेशन में अर्जी दाखिल कर पुलिस सुरक्षा में शादी कर लूंगी!"
बापूसाहेब हँसे और बोले, "मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि बात इतनी आगे बढ़ जाएगी!"
"आपने उसकी तारीफ की और उसकी पीठ थपथपाई, और अब वह और भी ज्यादा गर्व महसूस कर रहा है!"
"क्या शादी की तारीख तय हो गई है?"
"हाँ! आने वाले वैशाख में!"
"तो अभी डेढ़-दो महीने बाकी हैं। मुझे कोई आवेदन मत दीजिए। मैं उन्हें फोन करके समझा दूंगा। फिर काम हो जाएगा, है ना?"
"लेकिन इसका निपटारा होना ही चाहिए। वरना, अगर कल शादी होने पर वह बदले की भावना से मेरे दामाद और बहू को परेशान करना शुरू कर दे, तो इसमें गलत क्या है?"
"चिंता मत करो! मैं उसे मना लूंगा। वह कोई परेशानी नहीं खड़ी करेगा!"
"देखो, वह ठेला बेकार है! तुम्हारा क्या मतलब है, शादी के बाद सोम्या उसे बारह घंटे के लिए पिंजरे में बंद कर देगी?"
"सच में? ये लड़के तो कभी-कभी बिल्कुल पागलों जैसी हरकतें करते हैं। लेकिन चिंता मत करो। मैं उस बदमाश को भी फोन कर दूँगा!"

□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□

0-0-0

नौ

भीम नगर में सोमा और यशोदा के विवाह में स्वयं बापूसाहेब और लक्ष्मीबाई उपस्थित थे। पंचायत के अन्य सदस्य, रंगा के कुछ परिचित जागीरदार भी इस विशेष विवाह में शामिल होने आए थे। रंगा को अभी भी सत्या की पेंशन मिल रही थी। यद्यपि संस्थान का विलय हो गया था, संस्थान के सदस्यों की उदारता कम नहीं हुई थी। संस्थान के सदस्य निष्ठा और ईमानदारी से सेवा करने वालों की सहायता करना नहीं भूले थे। उन्होंने अपने निजी प्रबंधक के माध्यम से रंगा को पाँच सौ रुपये भेजे थे।
विवाह समारोह बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ। हरिजनवाड़ा में पहले कभी किसी का विवाह इतने भव्य ढंग से नहीं हुआ था; इतने बड़े जनसमूह का जमावड़ा पहले कभी नहीं हुआ था। सुदाम को छोड़कर भीमनगर के सभी लोग समारोह में उपस्थित थे। रंगा ने समारोह के सुचारू रूप से संपन्न होने के लिए बापूसाहेब के चरणों में सिर रखकर प्रार्थना की और कहा, "बापूसाहेब, मैं गरीबों की बहुत आभारी हूँ। केवल आपकी कृपा से ही यह विवाह सुचारू रूप से संपन्न हुआ।" रंगा ने दूल्हा-दुल्हन की तस्वीर बापूसाहेब के साथ उनके घर के सामने वाले हिस्से में फ्रेम करवा दी।
भीम नगर की यह सुंदर हरिजन कन्या सोमा कांबले की दुल्हन बनी। बापूसाहेब इस बात पर विशेष ध्यान दे रहे थे कि कहीं सुदाम बदले की भावना से कुछ न कर बैठे। शादी से पहले रंगा के आने-जाने के बाद, बापूसाहेब ने रणबा को बुलाया और उसकी खूब पिटाई की। रणबा खिड़की से म्हासोबा लेकर आया और बोला, “मैं सुदामा की तरफ से इस

शादी को तोड़ने के लिए कुछ नहीं करूंगा!” और सचमुच रणबा ने अपना वचन निभाया।
सोमा की शादी को अभी मुश्किल से चार महीने ही बीते थे कि रंगा लिंगाडे रोते हुए बापूसाहेब के पास आ गई।
"ये क्या हो गया? फिर क्या हुआ?"
"क्या होगा? सुदाम भीमनगर आ गया है!"
"क्या यह आ गया है?"
"उसने अपनी नौकरी छोड़ दी है। उसने दाढ़ी बढ़ा ली है और कहता है, 'मैं अपनी दाढ़ी तभी मुंडवाऊंगा जब यशोदा को उठाऊंगा!' अब सोमा मेरा दामाद बन गया है। एक पहलवान। आधा सिर वाला। अगर उसे पता चल गया और वह गुस्सा होकर मेरे सिर पर कुल्हाड़ी से वार कर दे तो क्या होगा? हम चैन से कहां बैठेंगे?"
"तुम सही कह रहे हो! मैंने तुम्हें फोन किया था, तो उस सुदामा को अलविदा कह दो। देखते हैं, अगर समोपचारा मेरी बात मान ले तो ठीक है!"
शाम को सुदाम बापूसाहेब से मिलने पेठवार होटल गए। बापूसाहेब होटल के सामने एक बेंत की कुर्सी पर बैठे थे। दरवाजे पर एक लंबी शेवरले कार खड़ी थी। उसमें बैठे लोग बापूसाहेब के सामने बैठकर बातें कर रहे थे। उनमें से एक फिल्म निर्देशक, एक निर्माता और तीसरा कहानीकार था। सुदाम के आते ही बापूसाहेब ने लोगों से कहा, "अगर आपको कोई नई कहानी चाहिए, तो हमारे सुदाम कांबले से पूछिए। उन्हें इस क्षेत्र की सारी बारीकियां पता हैं! सुदाम, क्या हाल है? आपकी फिल्म को एक चौंकाने वाली कहानी चाहिए। मुझे एक कहानी बताइए, फिर यह साहब उसे लिख देंगे।"
सुदामा ने सभी का अभिवादन किया और मुस्कुराते हुए विनम्रतापूर्वक एक तरफ खड़े हो गए। तभी निर्माता ने कहा, "कृपया

बैठ जाइए, नौजवान। बिल्ला, क्या आपको नहीं लगता कि इस नौजवान का व्यक्तित्व बहुत ही प्यारा है?"
‘‘यस सर्टनली! दॅटस वॉट आय वॉज थिंकिंग?’’
आपने अपना नाम क्या बताया था?
"सुदाम कांबले!"
“ये हमारे ही गाँव का है। ये अच्छा गाता है। भजन तो एकदम गायक की तरह गाता है। तमाशों में गायक का काम भी करता था। चार पैसे कमाता है!” बापूसाहेब ने सुदामा का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा।
"बापूसाहेब, उनसे पूछिए कि क्या वे हमारी कंपनी में शामिल होंगे। हम उन्हें सिनेमा ले जाएंगे। वे तमाशा करके दस साल में जितना कमाएंगे, उससे कहीं ज्यादा सिनेमा में एक साल में कमा लेंगे!"
"यह सच है; लेकिन एक नाजुक मामले के कारण वह थोड़ा निराश हैं!" बापूसाहेब ने यशोदा के विवाह की कहानी फिर से सुनाई।
यह सुनकर बिलिमोरिया जोर से हँसे और बोले, "अरे यार, छोड़ो ये सब! कितनी खूबसूरत लड़कियाँ हैं, चलो मुंबई चलते हैं! एक से बढ़कर एक! बस तुम्हारा नाम वहाँ होना चाहिए। और अगर तुम्हें एक्टिंग पसंद आई, तो हो जाएगा! फिर लड़कियों की भीड़ तुम्हारे पीछे पड़ जाएगी! तो आज तुम्हारे दिमाग में जो भी चल रहा है, उसे निकाल दो!"
इसी बीच, बापूसाहेब के नौकर ने "हाईवे" वाले तल से आवाज़ दी, "महोदय, सब कुछ तैयार है!"
जब सब लोग उठ गए, तो सुदाम बाहर ही रुका रहा। बिलिमोरिया ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा, "लगे रहो, नौजवान। घबराओ मत। हम तुम्हें सब कुछ भुला देंगे!"

‘हाईवे’ की पहली मंज़िल पर बड़े ग्राहकों के लिए एक खास कमरा था। उसमें हल्के नीले रंग की मेज़, वैसी ही कुर्सियाँ थीं और बगल की दीवार पर उमर खय्याम की एक पेंटिंग लगी थी, जिसमें एक हाथ में शराब का घड़ा और दूसरे हाथ से कमर पकड़े एक अधनंगी लड़की बनी थी। कमरे में हल्की नीली रोशनी थी। सुदाम कई सालों से पेठे आता रहा था; लेकिन उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि बापूसाहेब के होटल में इतना आलीशान कमरा होगा।
सुदाम का हाथ पकड़कर उसे अपने बगल वाली कुर्सी पर बिठाते हुए बिलिमोरिया ने अपने "कहानीकार" से कहा, "भैया, मगशी आने से पहले मैं इस सज्जन को क्या बता रहा था?"
"तुम्हारे दिमाग में जो कुछ भी है, उसे निकाल दो," कहानीकार ने उसे याद दिलाया।
"जी हां, जी हां! बिल्कुल सही।" और अगर इससे भी ठीक न हो तो हमारे पास दवा है। इतना कहकर उन्होंने अपने पर्स से स्कॉच व्हिस्की की बोतल निकाली और उसका ढक्कन खोला। उन्होंने टेबल पर रखे गिलास में व्हिस्की भर दी। जब उन्होंने सुदामा के लिए भी गिलास भरा, तो सुदामा ने हाथ जोड़कर कहा, "महोदय, मुझे यह नहीं चाहिए। मैं इसे कभी नहीं पीता!"
उनकी बात सुने बिना बिलिमोरिया ने कहा, "वार्नाकथ के तुम लोग किस तरह के लोग हो? मालिक बापूसाहेब, इतने लंबे समय से आग्रह करने के बावजूद, तुम लोग नहीं मान रहे हो, तुम भी नहीं मान रहे हो। क्या तुम लोगों ने सरकार द्वारा शराबबंदी को सफल बनाने की शपथ ली है?"
"ऐसा बिल्कुल नहीं है; लेकिन...!"
"चलो ना-" बिलिमोरिया ने गिलास उसके सामने रखते हुए कहा, "तुम्हारी आँखों की निराशा एक घूंट में पिघल जाएगी, अरे, तुम अभी

जवान हो। इसे पी लो और खुश हो जाओ!" "साला, इस दुनिया में क्या है? मरने के बाद सब खत्म हो जाता है! चलो ना... चियर्स!"
फिर सुदाम को वह गिलास, जिसे वह इतनी देर से अपने हाथ में पकड़े हुए था, अपने होठों से लगाना पड़ा।
अगले महीने, "रसभंग" में खबर आई, "के. सुदाम एस. बिलिमोरिया की फिल्म में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे!"
बापूसाहेब को सुदामा को मनाने की जरूरत नहीं पड़ी; वह अपनी मर्जी से चली गई।
इस प्रकार, सुदाम कांड का अंत हो गया। रंगा ने राहत की सांस ली। लेकिन दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था।
शादी के बाद, सोमा सिर्फ़ नौकरी करने और पेट भरकर खाने के बजाय, कभी-कभी कुश्ती देखने का मन करता था। जब भी कुश्ती का मैच होता, सोमा अपना सामान पैक करके दोस्तों के साथ चला जाता था। यशोदा भी उसे रोक नहीं पाती थी। जब सोमा ढेबेवाड़ी मेले में गया, तो उसके दोस्तों ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "सोम्या, अब तुम किस तरह की कुश्ती देखते हो?"
"क्यों, क्या उसे देखना नहीं चाहिए?" - एक अन्य व्यक्ति।
"अब मैदान में कुश्ती देखने का क्या फायदा?" - थर्ड।
“अब उसे अपने हाथों से कुश्ती खेलने दो!” - चौथा। सब हंसते हुए चले गए।
सोमा ने कहा, "बेटियों, किस धर्मग्रंथ में लिखा है कि शादी होने के कारण कुश्ती नहीं देखनी चाहिए? क्या ऐसे लोग नहीं हैं जो शादी के बाद भी कुश्ती खेलते हैं?"
"लेका, इस तरह बात मत करो। तुम्हारी सगाई हो चुकी है, कुश्ती तो खत्म हो ही गई!"
"क्या तुम जाना चाहती हो?" सोमा ने गुस्से से इरेला से कहा।

"क्या, तुम कुश्ती लड़ने जा रहे हो?"
"हाँ! हाँ!" सोमा ने खड़े होकर सिर हिलाते हुए कहा।
और देखते ही देखते उसने अपने कपड़े उतार दिए। उसे केवल डायपर पहने देखकर, उनमें से एक ने उसे अपना डायपर दिया, उसे पहनाया, और वह अपने दोस्तों के सामने खड़ा होकर बोला, "मेरे कपड़े उतार दो!" अखाड़े में कुश्ती चल रही थी। अंपायर इधर-उधर घूम रहे थे। वे पहलवानों के कद के अनुसार नए जोड़े ढूंढ रहे थे। इच्छुक पहलवान वहाँ खड़े होकर अपनी लंबी, मजबूत मुट्ठियों से लड़ने की तत्परता जता रहे थे। अंपायरों ने सोम्या का हाथ पकड़ा और उसे अखाड़े में ले आए। वे आसपास के पहलवानों में से उसके लिए एक उपयुक्त जोड़ी ढूंढने लगे और अंत में बारशी के एक युवक ने सोम्या से लड़ने की चुनौती स्वीकार कर ली।
शुरुआती कुछ मिनट काफी मुश्किल भरे थे। बरशीकर पहलवान ताकतवर था, लेकिन सोमा अपनी रणनीति में पूरी तरह तैयार लग रहा था। काफी देर तक किसी की तारीफ नहीं हुई; लेकिन अचानक सोमा ने अपनी छड़ी घुमाई, बरशीकर गिर पड़ा और सोमा ने तेंदुए जैसी फुर्ती से उसकी पीठ पकड़कर उसे नीचे गिरा दिया। उसने उसकी पीठ पर सवार होकर उसे जमीन पर गिराने की कोशिश की; लेकिन बरशीकर ने अपने हाथ-पैर फैलाकर अपनी जगह से हिलने तक की जहमत नहीं उठाई। वह जानता था कि यह ढालगांवकर अपनी रणनीति में पूरी तरह तैयार है। वह इस मौके का फायदा उठाकर किसी न किसी चाल से उसे गिरा देगा। सोमा काफी देर तक संघर्ष करता रहा। उसके दोस्त चिल्लाकर उसका हौसला बढ़ा रहे थे। सोमा जोश में आ रहा था। उसने बरशीकर को घुटने से धक्का देकर उसका दम घोंटने की कोशिश की और उसी समय बरशीकर ने सोमा का पैर पकड़कर उसे नीचे खींच लिया। सोमा ने अपना पैर छुड़ाने की कोशिश की; लेकिन बरशीकर ने सोमा का पैर मगरमच्छ की पकड़ की तरह कसकर

पकड़ रखा था, जो उसे काफी देर से परेशान कर रहा था। सोमा संघर्ष कर रहा था और उसी समय एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी और सोमा चिल्ला उठा। रेफरी दौड़कर आगे आया। सोमा का दाहिना पैर कटोरे से फिसल गया था। कुश्ती तुरंत रोक दी गई। सोमा के दोस्त मैदान की ओर भागे। उन्होंने उसे उठाया और मैदान से बाहर ले गए। एक ने उसके पैर की मालिश करने की कोशिश की; लेकिन सोमा असहनीय दर्द में था। सोमा को मिराज ले जाया गया और उसके पैर पर प्लास्टर लगाया गया। प्लास्टर तीन महीने तक टिका रहा, लेकिन उसके बाद भी डॉक्टर ने चेतावनी दी कि सोमा भारी काम नहीं कर पाएगा। यशोदा डेढ़ महीने तक मिराज में उसकी सेवा में रहीं। रंगा भी आता-जाता रहा।
बापूसाहेब खुद पांच-छह बार हालचाल पूछने आए। दो महीने बाद, प्लास्टर हटने तक सोमा को गांव ले जाने की अनुमति दी गई। जिस रात सोमा को गांव लाया गया, उसी रात सुदाम मुंबई से आया था। उसमें एक अजीब बदलाव था। इस बार वह होंडा मोटरसाइकिल से आया था। वह स्टेट एक्सप्रेस के अलावा कोई सिगरेट नहीं पीता था। बोलते समय वह मुंबई की खास बोली के शब्द जैसे "ऐला, साला, वैताग, फिरकी" इस्तेमाल करता था। जब रंगा को सुदाम के आने का पता चला, तो उसने कहा, "अरे बेचारा! पैसा उसके पीछे भाग रहा है!" और संयोग इतना अजीब था कि उसी समय सुदाम रंगा को "ढूंढने" आया था।
‘‘रामराम रंगामामा!’’
"रामराम! आओ, तुम कब आए?"
"मैं रात में आया था। लेकिन भाई, सोमा ने क्या गड़बड़ कर दी है?" उसने सिगरेट जलाते हुए कहा।
"मुझे पैदल चलना पड़ा! मैं ट्रेनिंग के दौरान कुश्ती खेलने गया था और मेरे घुटने में मोच आ गई!"
"आयला! उसे कुश्ती खेलने के लिए किसने कहा?"

"कौन और क्या?"
"यशोदा कहाँ है?"
"यह हद से ज़्यादा है। उसे हर दो-तीन दिन में गर्म पानी से पोंछना पड़ता है। वह अपने पैरों की वजह से नहा नहीं सकता।" "रंगमामा, मैं इसलिए आया हूँ क्योंकि आपने इस सोमा के पैर तुड़वाने में बहुत पैसा खर्च किया है और मुझे लगता है कि आप अभी भी आर्थिक तंगी में हैं। इसलिए मैं आपकी ज़रूरत की हर चीज़ मुहैया करा सकता हूँ। अब, आपके पैरों के पुण्य से, मैं अच्छी कमाई कर रहा हूँ!"
"सुदाम, मैं आपकी सद्भावना के लिए आभारी हूँ! मुझे पैसों की कितनी भी ज़रूरत क्यों न हो, मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता!" "रंगमां, सुनो, यशोदा मेरी किस्मत में नहीं थी। मैं बस यही चाहती हूं कि वो जहां भी हो खुश रहे। मैं यहां तक आ चुकी हूं, मुझे गलत मत समझो!"
"सुदामा, यह गलतफहमी मेरी नहीं, सोमा की होगी; यह पूरी दुनिया की होगी!"
"तो फिर मेरे पास कोई चारा नहीं! लेकिन अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो मुझे याद करना!" सुदाम यशोदा या सोमा से मिले बिना ही चला गया। अगले दिन पता चला कि वह मुंबई लौट गया है।
तीन महीने बाद सोमा के पैर से प्लास्टर हटा दिया गया। पैर ठीक तो हो गया था, लेकिन थोड़ा टेढ़ा हो गया था! अब सोमा न तो कुश्ती लड़ सकता था और न ही तेज दौड़ सकता था। यह उसके लिए हल्के-फुल्के शारीरिक काम जैसा था, लेकिन सवाल यह था कि ऐसे हल्के काम के लिए उसे एक दिन की मजदूरी कौन देगा। सौभाग्य से, वह बच गया। बापूसाहेब ने सोमा को अपने खेत में रखवाला नियुक्त किया। वेतन 150 रुपये प्रति माह था; लेकिन सोमा को दिन-रात वहीं रहना पड़ता

था! सोमा के वहाँ रहने के बाद, बापूसाहेब ने जानवरों के लिए एक शेड बनवाया। होटल के लिए दूध खरीदने के बजाय, उन्होंने चार जाफराबादी भैंसें लाने और घर पर दूध उत्पादन करने की योजना बनाई। तभी से सोमा जंगल में रहने लगा।
यशोदा सोमा के लिए भोजन लेकर जंगल हुआ करती थी।
बापूसाहेब द्वारा तीन बार खोदे गए कुएँ भर दिए गए थे; लेकिन चौथी बार खोदा गया कुआँ अभी भी वहीं था। इस सूखे कुएँ के पास पशुओं के लिए एक शेड बनाया गया था।
सोमा जंगल में रहता था; लेकिन पीरा धनगर भी उसकी मदद के लिए आता- जाता रहता था। पीरा धनगर बापूसाहेब का विशेष विश्वासपात्र था। पीरा की उम्र 51 वर्ष थी; लेकिन वह अविवाहित था; वैसे भी, उसके पास विवाह न करने का कोई ठोस कारण नहीं था। किसी नेक उद्देश्य के लिए जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करने की उसमें कोई गहरी बुद्धि नहीं थी। यह स्पष्ट था कि उसने अपना सब कुछ बापूसाहेब की सेवा में समर्पित कर दिया था। जब लक्ष्मीबाई शोक में अपने मायके चली गई थीं, तब पीरा बापूसाहेब के लिए खाना भी बनाता था। बापूसाहेब ने पीरा को कभी नौकर की तरह नहीं समझा। वह उनके परिवार का ही सदस्य था। दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति था जो उन्हें प्रिय था और वह थे बापूसाहेब! वह बापूसाहेब के लिए कोई भी बलिदान देने को तैयार था। सोमा और पीरा की देखरेख में बापूसाहेब की जाफराबादी भैंसें अच्छी तरह से विकसित होने लगीं। सोम वृक्ष को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने, शकरकंद तैयार करने और उन्हें सही समय पर पशुओं के सामने रखने का काम करता था; वहीं पीरा ने सातवों के कुएँ से बाल्टी भरकर पशुओं के लिए पानी लाने का जिम्मा संभाला था। सोम कमजोर होने के कारण यह बोझ उठाने में असमर्थ था!

दिन सुहावने बीत रहे थे, लेकिन अचानक पिछले शुक्रवार की आधी रात को, जब कुछ चोर बापूसाहेब की जाफराबादी भैंस चुराने की कोशिश कर रहे थे, सोमा जाग गया और बाहर चला गया। उसकी चोरों से लड़ाई हुई और लड़ाई में चोरों ने उसका गला काट दिया। उसका टूटा हुआ गला सूखे कुएं की तलहटी में खून से लथपथ पड़ा था। सोमा की मां, पिता, रंगा लिंगाडे और चार महीने की पोतुशी यशोदा धाई जोर-जोर से रो रहे थे। उनका दुख देखकर भीमनगर में सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक सभी शोक में डूबे हुए थे और आंसू बहा रहे थे।
0-0-0

दस

सुबह करीब छह बजे, बापूसाहेब ढालगांव पुलिस चौकी के सामने जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। “हवलदार, हे हवलदार, उठो, उठो। मैं सरपंच बापूसाहेब हूँ। मुझे शिकायत दर्ज करानी है!” चौकी कार्यालय का ताला चरमराया। हेड कांस्टेबल लक्ष्मण बाला देसाई आए और दरवाजा खोला और बापूसाहेब को नमस्कार करने के बाद पूछा, “आप किस तरह की शिकायत कर रहे हैं?”
"अरे, कांस्टेबल साहब, ये कोई हंसी की बात नहीं है। मेरे दोस्त सोमा कांबले की खेतों में कुछ अज्ञात चोरों ने हत्या कर दी है - ये हत्या है!"
"क्या?" "हाँ! एक भयानक, क्रूर हत्या! सोमा का सिर धड़ से अलग कर दिया गया है। शरीर किनारे पर है और सिर कुएँ में है, देखो!" "लेकिन आपके खेत में तो कोई कुआँ नहीं है, है ना?"
“यह सच है कि यहाँ कोई कुआँ नहीं है; लेकिन कुएँ के लिए खुदाई की गई थी, और यह भयानक घटना वहीं घटित हुई है।” कांस्टेबल ने तुरंत स्टेशन डायरी में प्रविष्टि कर दी। कांस्टेबल जयसिंह पाटिल रात भर गश्त करने के बाद देर से सोए थे। उन्हें जगाया गया और उन्होंने तुरंत दूसरे हेड कांस्टेबल को बुलाया और उन्हें डायरी का प्रभार सौंप दिया। अपने वरिष्ठों को तत्काल रिपोर्ट भेजने के बाद, कांस्टेबल बापूसाहेब के साथ उनकी कामता नामक ज़मीन के लिए रवाना हो गए। रास्ते में कांस्टेबल पूछ रहे थे, “आपको कब पता चला?” “मैं कल कुछ दिनों के लिए करहाद गया था। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो पीरा धनगारा ने मुझे मेरी वर्दी दी।”

"लेकिन क्या वह व्यक्ति पहले से ही इस चौकी पर आकर हमें सूचित नहीं कर सकता था?"
"मैं आ जाता; लेकिन वह बहुत डरा हुआ था। उसने मुझे पहले बताने के लिए करहाद आया! जैसे ही उसने मुझे बताया, मैंने तुरंत एक टैक्सी ली और यहाँ आ गया।"
"आप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि चोरों ने हत्या की?"
"झुंड में मौजूद दोनों भैंसों की पूंछें काट दी गई हैं। भैंसें अभी भी खुले घूम रही हैं!"
"उस समय पीरा धनगर कहाँ था?"
"वह भी बस्ती की छत पर था; लेकिन चीखें सुनकर वह आगे नहीं गया। इसके अलावा, वह अपनी जान के डर से आगे नहीं गया, उसने अनुमान लगाया कि वहाँ सात या आठ चोर होंगे, बस इतना ही!"
"अच्छा हुआ; नहीं तो वो भी मारा जाता!"
"बेशक ऐसा होना ही था, कांस्टेबल। लेकिन बहुत बुरी घटना घट गई! अब बेचारी की हालत थोड़ी बेहतर हो रही थी!"
"क्या सोमा कांबले उस रंगा लिगाडा का दामाद नहीं है?"
"जी हां! जी हां! वही है।"
‘‘क्या आपने पहल करके उनसे शादी की?’’
"जी हां! वो सोम है। कृष्ण कंबला के पुत्र हैं!"
"ढेबेवाड़ी मेले में कुश्ती लड़ने जाते समय उसकी टांग टूट गई! अरे बाप रे! लेकिन लड़का कितना सुंदर दिख रहा था, है ना, बापूसाहेब!"
"तो क्या हुआ! अगर उसका शरीर मजबूत होता तो वह चार-पांच लोगों को गिरा सकता था; लेकिन उसके पैर कमजोर थे।"
बात करते-करते वे बापूसाहेब के कामता नामक खेत पर पहुँच गए। तब तक खेत पर भारी भीड़ जमा हो चुकी थी। ढलगाँव का हरिजन वाड़ा -

जिसे वे भीम नगर कहते थे - बह गया था। सोमा के शव पर धोती रखी हुई थी और सोमा के पिता कृष्ण, माता चंद्र, ससुर रंगा लिंगाडे और चार महीने की गर्भवती पत्नी यशोदा वहाँ बैठकर रो रहे थे। कांस्टेबल और बापूसाहेब को आते देख ही उनके करीबी रिश्तेदार फिर से जोर-जोर से रोने लगे। बापूसाहेब उन्हें सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन जैसे-जैसे वे उन्हें सांत्वना दे रहे थे और समझदारी की चार बातें बता रहे थे, लोगों का शोक और भी बढ़ रहा था। उनका दुख देखकर वहाँ जमा हुए कई अन्य ग्रामीण भी गहरे द्रवित हो गए।
कांस्टेबल के पीछे-पीछे दो कांस्टेबल भी वहाँ आ गए। उन्होंने पहले मैदान के पास की भीड़ को हटाया और बापूसाहेब के पास पहुँचकर विनम्रता से कहा, “फौजदार साहब चले गए हैं; इंस्पेक्टर साहब भी उनके साथ आ रहे हैं!”
"ठीक है! मैं बस यही कह रहा था कि अगर डी.एस.पी. साहब खुद आकर निरीक्षण कर लेते तो बेहतर होता, है ना? चाहे कुछ भी हो जाए, हत्यारों और चोरों को ढूंढना ही होगा! मेरी जीवनरेखा छिन गई है!"
"बापूसाहेब, हम इन प्रयासों को विफल कर देंगे। सोमा के हत्यारे चाहे पाताल लोक में ही क्यों न छिपे हों, हम उन्हें ढूंढ निकालेंगे। हमें बिलकुल भी चिंता नहीं करनी चाहिए!"
"मैं यह करने के लिए तैयार हूं, भले ही इसमें सैकड़ों नहीं, बल्कि हजारों रुपये खर्च हो जाएं," बापूसाहेब ने कांस्टेबल की ओर देखते हुए कहा।
एक घंटे के भीतर, घटनास्थल पर दो जीपें पहुंचीं। फौजदार और इंस्पेक्टर एक जीप से उतरे; डीएसपी रामकृष्णन स्वयं दूसरी जीप से उतरे।

बापूसाहेब ने उनका अभिवादन किया और संक्षेप में पूरी कहानी सुनाई, और अंत में कहा, "साहब, इन हत्यारों की जांच शुरू होनी चाहिए। मैं इसके लिए कोई भी रकम खर्च करने को तैयार हूँ!" "बापुसाहेब, यह लागत का सवाल नहीं है; लेकिन हमें कुछ 'सुराग' तो चाहिए ही, है ना?"
"आप जो चाहें करें, महोदय; लेकिन इस युवक के हत्यारे कानून के शिकंजे से नहीं बच पाएंगे!"
फौजदारों ने साहब की मौजूदगी में शव का निरीक्षण किया। वे कुएं में पड़े सोमा के सिर को बाहर लाए और उसका भी निरीक्षण किया। उन्होंने दोनों को एक कंबल में बांधकर पोस्टमार्टम के लिए तालुका चिकित्सा अधिकारी के पास ले गए। एक कांस्टेबल बैलगाड़ी के साथ गया। तभी रंगा लिंगाडे आगे आए और बोले, “साहब, क्या हमें शव का अंतिम संस्कार करने की अनुमति नहीं दी जाएगी?”
"मैं इसे प्राप्त कर लूंगा; लेकिन पोस्टमार्टम के बाद!"
"अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो क्या काम नहीं चलेगा, साहब?" बापूसाहेब ने साहब से विनम्रतापूर्वक पूछा।
"यह कैसे हो सकता है, बापूसाहेब? हर हत्या के मामले में शव का पोस्टमार्टम होना चाहिए। यही कानून है। मृत्यु का कारण डॉक्टर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही पता चलना चाहिए!"
"लेकिन उसकी मौत का और क्या कारण हो सकता है जब ऐसा लगता है कि उसका सिर कुल्हाड़ी या दरांती से काट दिया गया था?"
"ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है; लेकिन हम कानून को यूं ही नहीं छोड़ सकते!"
"तो फिर हमारे पास कहने के लिए कुछ नहीं है!"
पुलिसकर्मियों ने पूरे इलाके का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने कुएँ के गड्ढे में पड़े कुछ पत्थरों को भी ज़ब्त कर लिया, जिन पर

खून के छींटे पड़े थे, और उन्हें सील कर दिया। उन्होंने गौशाला में मौजूद दो जाफराबादी भैंसों की गर्दनें भी ज़ब्त कर लीं, जिन्हें चोरों ने काट दिया था। घटनास्थल से लालटेन के टुकड़े, एक लालटेन और एक भाला भी बरामद हुआ। इस तरह के विस्तृत पंचनामा में ढाई घंटे लगे।
फिर पीरा धांगरा का बयान लिया गया। पीरा ने कहा, "कल रात दूध पहुँचाकर लौटते समय सोमा का खाना मेरे पास आया। मैंने उसे गाँव में ही खा लिया। मैंने उसे तब खाया जब सोमा रोटी लेकर आया था। रोटी खाने के बाद हम दोनों ने पान खाया। जब मेरा तंबाकू खत्म हो गया, तो सोमा ने मुझे अपना तंबाकू दे दिया। फिर हमने थोड़ी देर बातें कीं और फिर सो गए। सोमा दरवाजे के सामने सोया; मैं अंदर सोया।"
आधी रात को मंडे ने मुझे हिलाकर जगाया। मैंने घबराकर पूछा, “ये क्या हो रहा है?” सोमा ने मेरे चेहरे पर हाथ रखते हुए कहा। “च्वोर हैट। भैंसा हार गया। लाव और मैं गेंद लेकर आगे बढ़ते हैं। तू लागोलाग ये मागन-”
डीएसपी ने पूछा, "बलम का क्या मतलब है?"
"बलम का अर्थ भाला होता है, महोदय!" फौजदार शिर्की ने समझाया। "जी हाँ! उनसे आगे बताने को कहिए-"
"हां, बताओ आगे क्या हुआ, पीरा," सैनिक ने कहा।
मैंने दीपक जलाया और दरवाजा खोला। सोमा बलम ने गौशाला की ओर देखते हुए कहा, 'तुम कौन हो, अपने नौकर?' तनवर ने मेरे दीपक पर हमला किया और उस पर बैठ गया। दीपक टूट गया और जलने लगा। मैंने सोमा को आंगन में चलते हुए देखा। गौशाला के सामने सात-आठ बड़े चोर दिखाई दिए। इसलिए मैं वापस छत पर जाकर बैठ गया और दरवाजा बंद कर लिया। डर के मारे मैंने दरवाजा नहीं खोला।

"तुम कहते हो कि सात या आठ चोर थे, तो तुम्हारी लैंप पर डंडे से किसने मारा?"
‘‘वे पीछे नहीं मुड़े, जी.के. उसने मेरी तरफ देखा और स्टिक को हिलाया और वह चांद से चिपक गई।’’
"क्या तुमने सोमा पर हमला होते नहीं देखा?"
‘‘नहाइजी। वह दूल्हे जैसी नहीं दिखती!’’
"तो आप क्या करते हो?"
मैं छत पर गया और ज़ोर-ज़ोर से गोलियां चलाने लगा, तभी सातव अपने गाँव से आ गया! उसका बेटा शिवाबी भी आ गया। तोपखाना शिव के पास था। जब तोपखाना टूटा, तो रोशनी में सोम का शरीर दिखाई दिया; लेकिन उसका सिर नहीं था। फिर शिव ने तोपखाने को इधर-उधर घुमाया। जब तोपखाने को पहाड़ी की खाई में गिराया गया, तब शिव का सिर दिखाई दिया!
तो मैं गाँव आया। वैनीसनी ने मुझे बताया। मालिक घर नहीं आया था। फिर मैं खेतों में गया। फिर मैं एक ट्रक में बैठकर कराड गया। मैंने मालिक को बताया और तुरंत ही मालिक और मैं टैक्सी से गाँव आ गए।
पीरा ने सभी तथ्यों को सुसंगत ढंग से बताया। सैनिकों ने उसका बयान कागज पर लिख लिया। फिर उन्होंने हरिभाऊ सातव का बयान लिया, जो उस रात पीरा की चीखें सुनकर अपने बेटे के साथ बापूसाहेब के घर दौड़कर आए थे। उन्होंने उनके बेटे शिव से भी पूछताछ की, जिसके पास एक बैटरी थी। दोनों ने पीरा के बयान की पुष्टि की। तब इस बात में कोई संदेह नहीं रहा कि सोमा कांबले की हत्या उस समय हुई जब वह आधी रात को गौशाला से भैंसें चुराने की कोशिश कर रहे चोरों को रोकने का प्रयास कर रहे थे।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी फौजदार रामनाथ शिरवे कुछ महत्वपूर्ण निर्देश देकर चले गए। पूरे ढालगांव में मातम छा गया। पुलिस ढालगांव पंचायत कार्यालय में ही रुकी रही। लोगों के लिए भोजन बापूसाहेब के महल से पहुंचाया जा रहा था।
अपराधियों का एक रिवाज होता है। एक चोर कभी जानवर नहीं चुराता, न ही कोई जालसाज घर चुराने की हिम्मत करता है। इसलिए पुलिस को उन लोगों के ठिकाने पता होते हैं जिन्हें पहले पशु चोरी के आरोप में दोषी ठहराया जा चुका है। ऐसे दस-बीस लोगों को, खासकर दलित समुदाय से, लाया गया और उनसे गहन पूछताछ की गई। कुछ को शक के आधार पर गिरफ्तार किया गया और उनकी पिटाई की गई; लेकिन उनका कोई सुराग नहीं मिला।
दिन बीतते जा रहे थे। पुलिस की शुरुआती भागदौड़ अब थोड़ी शांत हो गई थी; लेकिन बापूसाहेब बार-बार फौजदार शिरकाओं से मिल रहे थे और उन्हें चेतावनी दे रहे थे, "चाहे कुछ भी हो जाए, इस अपराध की जांच होनी ही चाहिए!" ढलगांव के भीम नगर के रंगा लिंगाडे और कृष्णा कांबले को पूरा यकीन था कि बापूसाहेब सोमा के हत्यारे को कभी भी बख्शेंगे नहीं।
यशोदा को पूरा भरोसा था कि उसके गर्भ में पल रहे बच्चे के पिता का हत्यारा एक दिन जरूर पकड़ा जाएगा। सब लोग इसी उम्मीद पर जी रहे थे! लेकिन पुलिस विभाग हताश और निराश होता जा रहा था। दिन-ब-दिन पुलिस में दहशत बढ़ती जा रही थी; निर्देश दिए गए थे कि इस अपराध की सूचना कर्नाटक और मैसूर तक की पुलिस को दी जाए और अगर मवेशी चोरी के कोई मामले सामने आते हैं, तो यह पता लगाया जाए कि क्या उनका ढालगांव में हुए अपराध से कोई संबंध है।

तीन महीने बीत गए और फौजदार रामनाथ शिर्की ने अपने वरिष्ठों को एक रिपोर्ट भेजी, "सभी प्रयास विफल हो गए हैं; लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि सोमा कांबले की हत्या किसने की।"
डीएसपी ने शिरक्या परिवार से जांच अपने हाथ में ले ली और अपराध की जांच की जिम्मेदारी इंस्पेक्टर उमेश सेन को सौंप दी, जो एक बहुत ही बुद्धिमान युवा सीआईडी अधिकारी थे।
इंस्पेक्टर सेन ने जानकारी जुटाना शुरू किया। इस मामले में, उन्होंने सोमा की हत्या वाली ज़मीन के मालिक, ग्राम सरपंच बापूसाहेब चौगुले से शुरुआत की। बापूसाहेब कौन हैं? वे ढालगांव कैसे और कब आए?
बापूसाहेब के बारे में सारी जानकारी मिलने के बाद इंस्पेक्टर सेन अपने दो सहयोगियों के साथ मुंबई के लिए रवाना हो गए। वे यह पता लगाना चाहते थे कि क्या सुदाम का इस अपराध से कोई संबंध था। 0-0-0

ग्यारह

सीआईडी अधिकारी उमेश सेन ने "सोमा हत्याकांड" के दस्तावेजों को अपने हाथों में लिया और अपराध की जांच करने के लिए दृढ़ संकल्पित दिखाई दिए।
सबसे पहले, उसने ढालगांव में सुदाम कांबले के बारे में पूछताछ की। वह यह पता लगाना चाहता था कि उसने सोमा की हत्या की साजिश कैसे रची होगी, जिससे सोमा ने इसलिए शादी की थी क्योंकि उसने उससे शादी नहीं की थी।
बाद में, जब इंस्पेक्टर उमेश सेन मुंबई में सुदामा के ब्लॉक में गए, तो सुदामा "अभिनय" नामक फिल्म पर एक किताब पढ़ रहे थे। पहले तो उन्होंने इंस्पेक्टर को पहचाना ही नहीं।
उसने दरवाजे से कुंडी हटाई और मालिक की ओर हैरानी भरी नजरों से देखा। "तुम्हें कौन चाहिए?"
"तुम! के. सुदाम धलगांवकर! मैं सी.आई.डी. इंस्पेक्टर उमेश सेन हूँ! तुम समझ ही गए होगे कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ!"
"हाँ! सोमा की हत्या के बारे में कुछ पूछताछ तो होनी ही चाहिए! शिरके फौजदार भी एक बार इससे गुज़रे थे। हम वापस आ गए हैं। कोई बात नहीं। चलिए, आप क्या लेना चाहेंगे? चाय, कॉफ़ी, गोल्डस्पॉट, कोला?"
"धन्यवाद! श्रीमान सुदाम, मुझे सोमा की हत्या की जांच का जिम्मा सौंपा गया है। मुझे आपके सहयोग की आवश्यकता है!"
"साहब, आप मुझसे कभी भी इस तरह का सहयोग उम्मीद कर सकते हैं। उन शिर्वे फौजदारों ने मुझे तुरंत गिरफ्तार करने की तैयारी कर रखी थी। उस रात मैं 'राजकमल' के सेट पर था। मैं इसलिए बच गया क्योंकि

मेरे पास यह सबूत था," इंस्पेक्टर के सामने स्टेट एक्सप्रेस के डिब्बे को पकड़े हुए सुदाम ने कहा।
इंस्पेक्टर ने एक सिगरेट उठाई। उसने उसे जलाया और नाक-मुंह से धुआं निकालते हुए कहा, "उस दिन स्टूडियो में आपकी मौजूदगी का मतलब है कि जब हत्या हुई थी तब आप वहां मौजूद नहीं थे!"
"तो? क्या इससे कोई और तर्क निकलते हैं?"
"हाँ, ऐसा है! खैर, अभी इसे छोड़ देते हैं। पहले मुझे बताओ, क्या तुम यशोदा से प्यार करते थे या नहीं?"
"ज़रूर! मैं उससे प्यार करता था। मैं उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था। लेकिन बाद में मुझे पता चला कि वह मुझे पसंद नहीं करती थी। इसलिए मैंने उसे अकेला छोड़ दिया। उसके पिता, रंगा लिंगाडे, हमारे कबीले में खुद को बहुत सम्मानित मानते हैं। उन्होंने भी मेरा प्रस्ताव ठुकरा दिया।"
‘‘ते का?’’
मैं उस समय एक नाटक में काम कर रहा था!
लेकिन तुम्हारे पास बहुत पैसा और शोहरत थी!
"हां - ऐसा ही था। लेकिन मैंने यशोदा को अपने पैसे और शोहरत से प्रभावित करने के लिए कुछ नहीं किया!"
"तो श्री सुदाम, आपने ढालगांव और पेठ क्षेत्रों के कुख्यात डाकू रणबा को क्यों गिरफ्तार किया?"
वाह! महोदय, आप सचमुच एक सी.आई.डी. अधिकारी हैं! इसमें कोई शक नहीं कि आपने बहुत सारी विस्तृत जानकारी जुटाई है। अरे, प्यार में पड़ा व्यक्ति कभी-कभी अपने प्यार को जताने और उसकी गहराई दिखाने के लिए ऐसे हथकंडे अपनाता है। अगर आप कभी किसी से प्यार कर चुके हैं, तो यह सब बताने की कोई ज़रूरत नहीं है।

सेन ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "श्री सुदाम, अगर बस इतना ही है, तो यशोदा की शादी के दौरान या उसके बाद आप चुप क्यों रहे?" "सर, जब तक मरीज़ ज़िंदा रहता है, उसके रिश्तेदार उसे ज़िंदा रखने की कोशिश करते हैं। मरते ही सब भाग जाते हैं। क्यों? मेरे साथ भी यही हुआ। यशोदा की सोमा से शादी से पहले मैंने कुछ किया था। मैंने यशोदा के पिता को डराया, सोमा के पिता को डराया; लेकिन किसी ने इसकी सराहना नहीं की। और शादी हो जाने के बाद क्या बचा? मुझे हार माननी पड़ी, बस! क्या शादी के बाद मेरे किसी बुरे काम की जानकारी आपको मिली है?"
"जी हां! श्री कांबले, जब कुश्ती में सोमा का पैर टूट गया था, तो आप रंगा लिंगाडे के पास गए थे। आपने उनसे पूछा था कि क्या उन्हें पैसों की जरूरत है! क्या यह सही नहीं है?"
"बिल्कुल! लेकिन क्या आप इसे बुरा काम मानते हैं? आह, यशोदा, जिसे मैं कभी प्यार करता था, उसके वैवाहिक जीवन में कुछ कठिनाइयाँ थीं और अगर मैं उन्हें दूर कर सकता था, तो मुझे हमेशा लगता था कि मुझे उसकी मदद करनी चाहिए। मुझे आज भी ऐसा ही लगता है!"
"आपको कब पता चला कि सोमा की हत्या कर दी गई थी?"
"जब मुझे सोमवार को पत्र मिला, तो मैं तुरंत ढालगांव चला गया। मुझे बहुत दुख हुआ।"
"लेकिन अगर यशोदा विधवा हो गई है, तो वह अभी भी जवान है। इसलिए अगर वह आपसे मदद की उम्मीद करती है, तो क्या आप इस पर विचार करेंगे?"
"असंभव! महोदय, हालांकि यशोदा अब विधवा हैं, लेकिन वह अकेली नहीं हैं। सोम का अंश उनके गर्भ में पल रहा है। उन्हें उस बच्चे के लिए किसी और बच्चे से शादी नहीं करनी चाहिए!"

लेकिन वह अभी बीस साल की भी नहीं हुई है!
"यह सच है, लेकिन मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे ऐसा लगता है!"
"आप बिल्कुल सही हैं!" इंस्पेक्टर सेन ने सुदाम से हाथ मिलाते हुए कहा, "मुझे इस अपराध की जांच में आपकी मदद चाहिए। मुझे पूरा यकीन है कि आपका इससे कोई लेना-देना नहीं है!"
"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?"
"मैं बीस साल से सी.आई.डी. विभाग में काम कर रहा हूँ। मैंने अपराधियों को पकड़ा है। मैं इसे भी पकड़े बिना नहीं रुकूंगा। तुम्हारी आँखें मुझे बता रही हैं कि तुम्हारा इस अपराध से कोई लेना-देना नहीं है।"
"लेकिन क्या खेत से जानवर चुराने आए लोगों ने सोमा को नहीं मार डाला?"
"यह सब झूठ है! यह सब झूठ है!"
"आप क्या कह रहे हैं, महोदय?"
"जी हां। यह सब मनगढ़ंत कहानी है, श्रीमान कांबले!"
"लेकिन आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?"
"देखो, आठ लोग जानवर चुराने क्यों आएंगे? जानवरों को उनके सिर से उठाकर ले जाना तो ठीक नहीं है! वैसे भी, जो 'पशु चोर' होते हैं, वे ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो ही होते हैं! वे जानवरों को काटकर ले जाते हैं। यहाँ, पीरा कहती है, आठ लोग थे। यह पहला हिस्सा है जो विरोधाभासी लगता है। दूसरा यह कि जब वे कहते हैं कि उन्होंने गाँव को पकड़ लिया है, तो जानवर चुराने वाले लोग जानवरों को वहीं छोड़कर भाग गए होंगे। सोमा के लिए उन्हें पकड़ने की कोशिश करना नामुमकिन है। अगर पीरा का बयान सच है, तो एक या दो लोग आठ लोगों को कैसे पकड़ सकते हैं?"

"बिल्कुल सही!"
"अच्छा, जब चोर नज़र आते हैं, तो पीरा कहता है, 'सोमा ने कहा था, तुम दीपक जलाओ और तुरंत दरवाज़ा खोलो। मैं भाले से तुरंत हमला करूँगा!'" मुझे नहीं लगता कि सोमा, जिसका एक पैर लंगड़ा है, ऐसा कहता। और इस दूसरी बात पर भी ध्यान दो। जब उन्होंने देखा कि और भी चोर हैं, तो क्या वे चिल्लाए नहीं? क्या आस-पड़ोस के निवासी, जैसे सातव, शुरू में दौड़कर नहीं आए? यह पीरा चिल्लाता तो है; लेकिन मुझे कब बताएगा? जब सोमा का शरीर टूट जाएगा!"
"तो इस बारे में आपका क्या विचार है? क्या आपको लगता है कि इसका संबंध सोमा की हत्या से हो सकता है?"
"ऐसा लगने लगा है! लेकिन मैं अब एक नाटक करने जा रहा हूँ!" इंस्पेक्टर सेन ने मेज पर एक और सिगरेट जलाते हुए कहा।
"कैसे?"
मैं असली संदिग्धों को गुमराह करना चाहता हूँ। लेकिन इसके लिए मुझे आपकी मदद चाहिए!
"सर, सोमा के हत्यारे को पकड़ने में मदद करने के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं।"
"श्री कांबले, मैं इस आरोप में आपको गिरफ्तार करने का नाटक करूँगा! मैं आपको गाँव ले जाऊँगा, पुलिस हिरासत में रखूँगा, और इस दौरान मैं इस मामले में जिन लोगों पर मुझे संदेह है, उनकी गतिविधियों पर नज़र रखूँगा। बोलिए, क्या आप तैयार हैं?"
"कभी भी! क्या आप गिरफ्तार होने का नाटक करना चाहते हैं? यह आपका काम है। लेकिन एक बात, मैंने कई हफ्तों के लिए शूटिंग की तारीखें दे दी हैं। उसके बाद मैं एक महीने के लिए खाली रहूंगा।" "कोई बात नहीं! लेकिन याद रखना, इससे तुम्हारी थोड़ी बदनामी भी होगी!"

"इस बारे में चिंता मत करो। मैं इस तरह के झूठे आरोपों का सामना करने और सच्चाई को सामने लाने के लिए तैयार हूं!"
"सोमा की हत्या के संदेह में के. सुदाम गिरफ्तार!" यह खबर ढलगांव, पेठ और करहाड़ में आग की तरह फैल गई। लोग हैरान थे। सोमा की हत्या भैंस चोरी के मामले में हुई थी; तो फिर सुदाम को क्यों गिरफ्तार किया जाना चाहिए?
जब इंस्पेक्टर सेन हथकड़ी लगे सुदाम को पुलिस जीप से ढालगांव लेकर आए, तो वहां हंगामा मच गया। कुछ लोगों ने कहा, "सुदामा पर झूठा आरोप लगाया गया है, हम विरोध प्रदर्शन करेंगे।" कुछ लोगों ने इंस्पेक्टर सेन और उनके वरिष्ठ अधिकारियों की आलोचना भी की। हालांकि इंस्पेक्टर सेन ग्राम पंचायत में रहते थे, फिर भी वे भोजन और चाय के लिए बापूसाहेब के महल में जाया करते थे। उन्हें वहीं ठहराया गया था।
दोपहर में, इंस्पेक्टर सेन अचानक महल में पहुंचे। उस समय, बापूसाहेब और लक्ष्मीबाई के बीच तीखी बहस चल रही थी।
मैं कहता हूँ, आपको जाने की ज़रूरत नहीं है!
मैं जाऊँगा! मैं जाऊँगा!
‘‘उसके जाने के बाद, ऐलिस ने फिर से अपनी नाक रगड़ी और घर चली गई। "ऐसा दोबारा नहीं होगा। मैं तुम्हारी अहमियत समझता हूँ। मुझे मत रोको। अगर तुमने ऐसा किया, तो तुम्हें बेवजह डांट पड़ेगी!" और जब लक्ष्मीबाई चली गईं, तो बापूसाहेब ने कहा, "पीरा, जाओ और अपने पैरों पर उछलो।"
लेकिन इस बार लक्ष्मीबाई ने कहा, "आज मुझे पीरा अपने साथ नहीं चाहिए!"
तो आप अकेले जा रहे हैं?

"किसान की गाड़ियाँ आज बाजार पहुँच गई हैं। मैंने उन्हें आपको बताने के लिए भेजा था!"
"लक्ष्मी, तुम्हारे लक्षण अच्छे नहीं लग रहे!"
जिनके लक्षण ठीक नहीं हैं, उन्हें स्वयं निर्णय लेना चाहिए! बापूसाहेब बिना कुछ कहे कमरे से बाहर आ गए, और इंस्पेक्टर सेन उनके सामने मुस्कुराते हुए और कुछ न सुनने का नाटक करते हुए खड़े रहे!
अरे बाप रे! हमें आए हुए कितना समय हो गया है?
अब ये होने वाला है!
"तुम्हारा मतलब क्या है कि तुमने उस सुदाम को गिरफ्तार कर लिया!"
"जी हाँ! मुझे दो गुमनाम पत्र मिले हैं जिनमें यह संकेत दिया गया है कि वह उस अपराध से संबंधित हो सकता है!" इंस्पेक्टर ने हैरानी से कहा।
मुझे नहीं लगता कि इसका इससे कोई लेना-देना है!
"अच्छा, बापूसाहेब, पीरा के बारे में आपकी क्या राय है?"
"वह मेरा सबसे वफादार और ईमानदार सेवक है। क्यों? क्या आपको उस पर शक है?"
"ऐसा कुछ नहीं है; मैंने तो बस पूछा था!"
उस पर जरा भी शक मत करो!
"ठीक है, ठीक है!"
"तो फिर तुमने उस सुदाम को क्यों पकड़ा?"
"वे गुमनाम पत्र! उनमें से एक पत्र में स्पष्ट रूप से लिखा है, 'उसने हत्यारों को इसलिए काम पर रखा क्योंकि उसने यशोदा से शादी नहीं की!'"

"सचमुच! कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। यह कहना असंभव है कि किसी व्यक्ति का मन कब और कैसे बदलेगा!"
आप बिलकुल सही हैं! जिन लोगों का जीवन संदेह से परे होता है, उनके भी कभी-कभी बुरे इरादे हो सकते हैं!
"अच्छा, महोदय, अब आप उस सुदाम का क्या करेंगे?" बापूसाहेब ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।
मैं तुम्हें हिरासत में लेने जा रहा हूँ!
"तो मैं दरवाजा खटखटाने जा रहा हूँ!"
"यदि आवश्यक हुआ, तो मुझे वह भी थोड़ा-बहुत करना पड़ेगा।" "लेकिन उसे ढालगांव में मत मारो!"
‘‘का?’’
"नव-बौद्धों के खिलाफ अन्याय और उत्पीड़न की खबरें तो हर दिन आती ही रहती हैं। यह तो बस उसी कड़ी में एक और कड़ी है!"
"ठीक है, ठीक है! बाप साहब, हमें कुछ जानकारी चाहिए!"
‘‘बोला की!’’
"सोमा की शादी में हमने पहल की। जब हमें पता चला कि सुदाम परेशानी खड़ी कर रहा है, तो हमने उसका ध्यान रखा। हमने उसे काम पर रखा और मुंबई भेज दिया। हम सोमा के लिए इतने लालची क्यों थे?" "वह बेचारा लड़का था! वह भोला-भाला था। मुझे उससे शुरू से ही लगाव हो गया था!"
"आपको क्या लगता है यशोदा को आगे क्या करना चाहिए?"
"अरे, ये लोग तो नीची जाति के हैं। वो बच्चा तो बहुत शरारती है। बस किसी का हाथ पकड़ लेता है!"
"लेकिन चूंकि सोमा की हत्या तब हुई जब वह आपके यहां काम कर रही थी, तो क्या आपको नहीं लगता कि हमें उसके भोजन और गुजारा भत्ता के लिए कोई व्यवस्था स्वीकार कर लेनी चाहिए?"

"किसने कहा तुमसे ये?"
"नहीं! कोई नहीं! मैंने वही कहा जो मुझे लगा!"
"सच में! मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सोचा था। लेकिन अब मुझे इसके बारे में सोचना पड़ेगा-"
तभी किसी की कार दरवाजे पर आकर रुकी, और लक्ष्मीबाई अपने बच्चे को कंधे पर और एक हाथ में कपड़े का थैला लिए हुए, बापूसाहेब और इंस्पेक्टर को पीछे छोड़ते हुए दरवाजे पर खड़ी कार की ओर तेजी से बढ़ीं।
बोलते-बोलते बापूसाहेब एक पल के लिए लड़खड़ा गए; लेकिन अगले ही पल, मानो कुछ हुआ ही न हो, उन्होंने साहब से कहा, "अगर मैं उसे कुछ खाने को भी दूं, तो भी वह किसी न किसी को थपथपाए बिना नहीं रुकेगी! और अगर मैं उसे हर महीने पैसे देता रहूं, तो बताइए कि यहां के लोग इसे गलत समझेंगे या नहीं।"
"हाँ! हाँ! कहो कि यह भी सच है!"
इंस्पेक्टर सेन बापूसाहेब समेत सभी की प्रतिक्रियाओं को बारीकी से देख रहे थे।
पीरा धनगारा पर विशेष नज़र रखी जा रही थी। सादे कपड़ों में तीन भरोसेमंद पुलिसकर्मी उसकी गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। लेकिन इंस्पेक्टर सेन यह रहस्य नहीं सुलझा पाए कि लक्ष्मीबाई ने आज दोपहर अचानक बापूसाहेब से झगड़ा क्यों किया और चली गईं। इंस्पेक्टर सेन को बैलगाड़ी के रेथारा पहुँचने से पहले रेथारा पहुँचना था।
जीप चल रही थी। चलती जीप में दो पुलिस इंस्पेक्टर सेन का "मेकअप" कर रहे थे। नुकीली मूंछें, सोने के फ्रेम वाला चश्मा, इनामदारी शैली का बंद गले वाला कोट, पैरों में सफेद चप्पलें,

ढीले मोजे, हाथ में लाठी और जेब में छह बैरल वाली रिवॉल्वर, जो जरूरत पड़ने पर आत्मरक्षा के लिए भरी हुई थी!
रेथारे गांव से दो फर्लांग पहले, जीप ने इंस्पेक्टर को पीछे छोड़ दिया और वापस मुड़ गई।
रेथरेकर इनामदारों को कुलीन वर्ग के लोगों से विशेष लगाव था। जब भी कोई दूर का इनामदार या जहांगीरदार उनके यहाँ आता, तो वे उसे इतनी शान-शौकत से सत्कार करते कि एक साल बाद भी वह मेहमान इनामदार के महल में परोसे गए मसालेदार भोजन का स्वाद नहीं भूल पाता था!
महल के दरवाजे से आवाज आई, "क्या सरकार यहाँ है?" रेथरेकर उनके सामने एक कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे। उन्होंने अखबार एक तरफ रख दिया और कुर्सी से उठ गए।
इस रईस को, जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था, प्रश्नवाचक भाव से देखते हुए इनामदार ने कहा, "जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ।" उन्होंने मेहमान का शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। इनामदार साहब अभिवादन स्वीकार करते हुए बहुत प्रसन्न हुए; क्योंकि अब तक उनके परिवार या घर के लोगों के अलावा किसी ने भी इनामदारों को इस तरह का अभिवादन नहीं किया था। तब उन्हें लगा कि जिसने इतना सच्चा अभिवादन किया है, वह अवश्य ही कुलीन वंश का होगा। मेहमान का हाथ पकड़ते हुए इनामदार ने कहा, "मैं आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ!"
"मैं आपको कैसे पहचानूंगा? मैं पहली बार आपके पास आया हूं। मेरा नाम उदाजीराव गायकवाड़ है। मैं बड़ौदा से आया हूं-"
वाह, वाह...! हमारे नानासाहेब गायकवाड़ों में से एक?
"जी हाँ! नानासाहेब मेरे पिता के चचेरे भाई हैं!"
"सच में? अरे, अंदर कौन है? उनसे कहो कि चाय चढ़ा दें।"

मैं कोल्हापुर गया था। मुझे आपके बारे में वहीं जानकारी मिली। मैंने कहा, 'हमें रास्ते में मिलना चाहिए और एक-दूसरे को जानना चाहिए।'
सरकार को क्या हो गया है? हाल ही में हमारे लोग आना-जाना कम कर चुके हैं। पंचायत सिर्फ लड़के-लड़कियों की शादियों के दौरान ही आती है!
"बिल्कुल सही! जागीरदार हमारे देश से पूरी तरह गायब हो गए हैं! वे तो सारे रीति-रिवाज और परंपराएं भी भूल गए हैं!"
"आपके कितने बच्चे हैं?"
"मेरा कोई बेटा नहीं है। मेरी दो बेटियाँ हैं। एक को मैंने ढालगाँव के सरपंच को दे दिया था; दूसरी को महाकाल-कवथ्या के चव्हाण परिवार को!"
"ढलगांव के आपके दामाद का उपनाम क्या है?"
"ये मूल रूप से देशमुख हैं; लेकिन इन्हें चौगुले भी कहा जाता है। कोई बात नहीं। इन लोगों ने सब कुछ ज़मीन पर खर्च कर दिया; लेकिन हमारे दामाद ने होटल में काम करते हुए कड़ी मेहनत की और आज उन्होंने कितना नाम कमाया है! उनकी तनख्वाह पाँच-छह लाख है। वे पिछले पाँच-छह सालों से ढालगाँव के सरपंच हैं। मैंने तो परिवार को देखकर ही उन्हें तनख्वाह दे दी! कुछ लोगों ने नाराज़गी जताई; लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं थी! अरे, लड़की को सुख मिला, खाना- पीना मिला, गहने मिले, और क्या चाहिए, बताओ? और ज़मीन न होने के कारण मैंने आठ एकड़ ज़मीन भी खरीद ली है।"
एक होटल है जिसका नाम है 'हाईवे कैंटीन'। आपने नाम तो सुना ही होगा! वहाँ हर दिन पाँच से सात सौ रुपये के लिए भीड़ जमा होती है! हाँ, अब मुझे समझ आ गया कि आप जैसे दामाद के लिए होटल चलाना ठीक नहीं है; लेकिन बताइए, क्या हममें से कुछ ऐसे भी हैं जो बड़े

परिवार से होते हुए भी, चावल में घी की एक बूँद न होने पर भी अपनी मूंछों पर घी मलते फिरते हैं?
आप बिलकुल सही कह रहे हैं! समय बदल रहा है। परिवार की खातिर बेटियों को भिखारियों को देने का कोई मतलब नहीं है!
आपने ये कैसे कहा? तालियाँ बजाइए। आपके और हमारे विचार बिल्कुल एक जैसे हैं।
इनामदार साहब जब भी किसी ऐसे समूह से मिलते, तो उन्हें बापूसाहेब को अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में बताने की तीव्र इच्छा होती। क्योंकि अगर इस नज़रिए से देखा जाए, तो चौगुले इनामदारों में कोई खास प्रतिष्ठित व्यक्ति नहीं थे; लेकिन अब, उनकी अपार संपत्ति को देखते हुए, कभी उनसे जुड़ा हुआ सोरियाक (एक तरह का मोह) वापस नहीं लिया जा सकता था। फिर, जो कुछ भी हमने किया था, वह सही था, और वे आने-जाने वालों के सामने ये धुनें बजाते थे।
"ठीक है, तो मैं आऊंगा!" बड़ौदा के गायकवाड़ ने चाय पीने के बाद कहा।
"हा...! क्या ऐसा कभी हुआ है? हमें चार दिन रुकना था, अपनी ज़मीन देखनी थी, यहाँ से पुनाल पहाड़ों में एक गुफा देखनी थी, उसे देखकर फिर चले जाना था!"
"सरकार, यह काफी नहीं होगा! आज के लिए यहीं रुकते हैं!"
"हमें आज यहीं रुकना होगा। मुझे आज एक मुर्गे को ज़बह करने के लिए कहा गया है। मुर्गे जल्द ही तैयार हो जाएँगे। फिर मैं उन्हें कल जाने के लिए कहूँगा!"
"लेकिन मुझे दिक्कत है!"
"बोलिए, खुलकर बोलिए। क्या आपको इसकी ज़रूरत है?" "यह मेरे पास है। केवल आपकी अनुमति से!"

"यह किस तरह की अनुमति है? हम भी तो लेते हैं; लेकिन कभी-कभी गलती से!"
"तो फिर कोई समस्या नहीं!"
तभी बैलगाड़ी की घंटी दरवाजे पर बजी। बैलगाड़ी की आवाज सुनते ही इनामदार ने ऊपर की खिड़की से बाहर देखा और आश्चर्य से बोला, "अरे...! अक्का? मैं यहाँ हूँ!" इतना कहते ही इनामदार ज़ोरदार कदमों की आवाज के साथ सीढ़ियों से नीचे आ गया।
इंस्पेक्टर सेन खिड़की से बाहर देख रहे थे और अपनी मूंछों को बड़े करीने से संवार रहे थे।
लक्ष्मीबाई गाड़ी से बाहर निकली और जोर-जोर से रोने लगी, "पिताजी, आपने मेरा गला काट दिया...!"
"अरे, अरे, अक्का, बोलो! दूल्हा बड़ौदा से आया है। बताओ क्या हुआ?"
"अब मैं क्या कहूँ, अबा?" अक्का आँखें बंद किए हुए अंदर आई और इनामदार साहब उसे सीधे अंदर के कमरे में ले गए।
इंस्पेक्टर सेन ने ऊपरी मंजिल का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया और नीचे वाले कमरे में, जहाँ लक्ष्मीबाई, इनामदार और इनामदारिनबाई एक साथ बैठकर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे, इंस्पेक्टर सेन ने ऊपर वाले कमरे से आ रही आवाज़ पर कान लगाया। नीचे की बातचीत साफ़ सुनाई दे रही थी। “पिताजी, अगर आप मुझे ज़िंदा रखना चाहते हैं, तो मुझे यहाँ से मत निकालिए!”
"लेकिन अगर ऐसा हो गया तो क्या होगा?"
"आप धलगांव इसलिए आए थे क्योंकि हमारे खेत में किसान की हत्या कर दी गई थी, है ना?"
"हाँ। वह रात में जानवरों को चुराने वाले चोरों को रोकने के लिए आगे बढ़ा, और चोरों ने उसकी गर्दन तोड़ दी!"

"ऐसा नहीं हुआ था, पिताजी!"
"तो?" "उन्होंने ही हत्या की!"
"क्या, क्या कह रहे हो? बापूसाहेब ने हत्या की?"
"जी हाँ। एक मछुआरा हमारे पास आया। उसने कहा, अगर बार-बार खोदने के बाद भी कुआँ पानी न निकाले, तो हमें उस ज़मीन पर एक इंसान की बलि देनी चाहिए! मारे गए व्यक्ति का खून खोदे गए कुएँ में डालना चाहिए और ऐसे व्यक्ति की बलि देनी चाहिए कि उसकी पत्नी, माँ और रिश्तेदार उसकी मृत्यु पर फूट-फूट कर रोएँ। जैसे ही उनकी आँखों में आँसू आएँगे, पत्थर से फव्वारा फूट निकलेगा!"
"अक्का अक्का, ओह, मैं क्या सुन रहा हूँ?"
"पिताजी, मैं अपने बेटे की कसम खाता हूँ। यह सब सच है! और उस मृत प्रेमी ने खुद यह काम किया और बेचारे सोमा को धोखा देकर उसकी हत्या कर दी।"
"ओह राम! अक्का, ओह, क्या आपने मुझे यह पहले नहीं बताया था?" "लेकिन मुझे इसके बारे में आज दोपहर ही पता चला!"
"वह कैसा है?"
"वह दोपहर में पंक्या के घर आया था और पूछ रहा था, 'कुएँ में पानी है या नहीं?'" वे दोनों बातें कर रहे थे, मैंने उनकी बातें सुनीं और उनसे बहस करने के बाद मैं वहाँ से चली गई। मैं अब ऐसे आदमी के साथ नहीं रहना चाहती जिसके हाथ खून से सने हों। मैंने उसकी फिजूलखर्ची बर्दाश्त की है, अगर उसकी मुमताज जैसी चार और पत्नियाँ भी होतीं तो भी मैं बर्दाश्त कर लेती; लेकिन अब उस आदमी के साथ रहना मेरे लिए नामुमकिन है। ऐसा पाखंडी, लालची, क्रूर, हत्यारा..."
यह कहते ही लक्ष्मी फिर रोने लगी। इनामदार माथे पर हाथ रखे बैठे थे। उनकी पत्नी भी चेहरे पर रुमाल रखे रोने लगीं। लक्ष्मी का

रोना रुका और उन्होंने कहा, "सोम की पत्नी चार महीने की गर्भवती हैं, पिता कृष्ण थके हुए हैं, माता भागी व्याकुल हैं; मैं उनका दुख सहन नहीं कर सकती। अब आप बताइए, पिता, मेरा पुनर्जन्म कैसे होगा?"
जब इनामदार लक्ष्मी को सांत्वना देने के बाद ऊपर आया, तो बरोडेकर पवने वहां नहीं थे। वे पहले ही जा चुके थे।
उसी रात, इंस्पेक्टर सेन ने पीरा धनगर और बापूसाहेब को गिरफ्तार कर लिया। सुदाम को रिहा कर दिया गया।
जब करोड़पति और समाज के प्रभावशाली व्यक्ति बापूसाहेब को जंजीरों में जकड़ा गया, तो उन्हें पता ही नहीं था कि क्या हो रहा है। महाराष्ट्र के अखबारों ने इंस्पेक्टर सेन की दृढ़ता और बुद्धिमत्ता की एकमत से प्रशंसा की। अनुसूचित जाति के लोगों ने विरोध प्रदर्शन किए और सार्वजनिक रूप से बापूसाहेब की निंदा की। बीसवीं सदी में, जहाँ मनुष्य दूसरे ग्रहों पर जीवन की खोज में लगे हैं, वहीं भारत में कोई यह भी नहीं जानता था कि बापूसाहेब की तुलना किससे की जाए, जिसने कुएँ में पानी न होने के कारण एक युवक की बलि दे दी। पीरा धनगारा ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। लक्ष्मीबाई दरबार में आईं और कहा कि उन्होंने अपने सामने उस पानी की टंकी के बारे में हुई चर्चा सुनी थी। मवेशी चोरों के आने का नाटक बापूसाहेब के दिमाग की उपज था। स्थानीय पुलिस, फौजदार शिरवे, उनके झांसे में आ गए। लेकिन अंत में, सोमा की हत्या का पर्दाफाश होने ही वाला था, यही उम्मीद थी!
जीवन भर धलगांव के सरपंच बने रहने की इच्छा रखने वाले बापूसाहेब आज मानव बलि के आरोप का जवाब देने के लिए अदालत में पेश हुए। पूरा महाराष्ट्र इस मामले को देख रहा था।

[illegible]

[illegible]

0-0-0-

***** [illegible] *****

sjeet